कक्षा -XI

दूभि-धान

पहिला भाग

www.bhojpurisahityangan.com

दूभि-धान

पहिला भाग

वर्ग XI खातिर
भोजपुरी भाषा के पाठ्य पुस्तक

सत्यमेव जयते

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

www.bhojpurisahityangan.com

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2009

मूल्य : रु० 25.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्धमार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा द प्रिन्ट आर्ट, 3/35, राजेन्द्र नगर, पटना-16 द्वारा 5,000 प्रतियाँ मुद्रित।

www.bhojpurisahityangan.com

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार जुलाई, 2007 से राज्य की उच्च माध्यमिक कक्षाओं (कक्षा-XI-XII) हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। भाषायी पुस्तकों के नए पाठ्यक्रम के आलोक में एस. सी.ई.आर.टी., पटना द्वारा विकसित तथा बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण डिजाईनिंग कर मुद्रित किया गया है, को बिहार राज्य में पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकार किया गया है। यह पुस्तक उसी अनुक्रमणिका की एक कड़ी है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा-I-XII) के गुणवत्तापूर्ण सशक्तिकरण के निमित्त कृत संकल्पित एवं शिक्षा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतिश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरि नारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग निर्देशन के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

हमें आशा है कि ये पुस्तकें राज्य की वर्त्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सिद्ध होंगी। एस.सी.ई.आर.टी. के निदेशक के हम आभारी हैं, जिनके नेतृत्व में इस पुस्तक को विकसित किया गया है।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक, ज्ञानवर्धक, ज्ञानोपयोगी एवं उपलब्धिस्तर की वृद्धि में सहायक सिद्ध होगी। यद्यपि संवर्द्धन एवं परिष्करण की सम्भावनाएँ सदैव भविष्य की गोद में सुरक्षित रहती हैं, फिर भी प्रकाशन एवं मुद्रण में निरन्तर अभिवृद्धि करने के प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

हसनैन आलम, भा.प्र.से.
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि.

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषा पाठ्यपुस्तक विकास समिति

दिशाबोध

- श्री हसन वारिस, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- श्री रघुवंश कुमार
  निदेशक (शैक्षिणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना
- डॉ. एस.ए. मोईन, विभागाध्यक्ष, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

अध्यक्ष (भोजपुरी भाषा समूह)

प्रो. रिपुसूदन श्रीवास्तव

कुलपति, बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

समन्वयक

डॉ. जीतेन्द्र वर्मा, सह-संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना

सदस्य

- डॉ. कविता वर्मा
  पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी), लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, भोजपुरी साहित्यकार, कांटी
- प्रो. ब्रजकिशोर, संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना
- डॉ. सुरेन्द्र कुमार, व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

अकादमिक सहयोग

- श्री चतुर्भुज मिश्र, महाराजा पुस्तकालय, बेतिया
- श्री विजय कुमार सिंह, संपादक, प्राच्य प्रभा, पटना

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति की समीक्षा समिति के सदस्य

- डॉ. गोवर्द्धन सिंह,
  विभागाध्यक्ष (भोजपुरी), वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
- प्रो. अविन्द वर्मा,
  विभागाध्यक्ष (भोजपुरी), संत कबीर महाविद्यालय, बिहार वि.वि.
- डॉ. महामाया प्रसाद विनोद, प्राचार्य (सेवानिवृत) इंटर कॉलेज, अमनौर, सारण

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी

www.bhojpurisahityangan.com

आमुख

ई किताब राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के रूपरेखा 2005 आ बिहार पाठ्यचर्या के रूपरेखा 2006 के आलोक में विकसित नवका पाठ्यक्रम (2007) के आधार पर बनावल गइल बा । एह किताब के विकास में एह बात के ध्यान राखल गइल बा कि "शिक्षा के मतलब बिहार के स्कूली पढ़नियारन के एतना लाएक बना दिहल बा कि ऊ लोग अपना जीवन के सही-सही अर्थ समझ सके, अपना सगरी योग्यतन के समुचित विकास कर सके, अपना जीवन के मकसद तय कर सके आ ओकरा के पावे खातिर यथासंभव सार्थक आ प्रभावी प्रयास कर सके आउर संगही संगे एहू बात के समझ सके कि समाज के दोसरहूँ व्यक्ति के अइसने करे के पूरा अधिकार प्राप्त बा ।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के रूपरेखा 2005 आ बिहार पाठ्यचर्या के रूपरेखा 2006 हमनी के बतावत बाड़ी सन कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन आ स्कूल से बहरी के जिनगी में अंतराल ना होखे के चाहीं । किताब आ किताब से बहरी के दुनिया आपस में गथाइल होखे के चाही । उमेद बा कि ई डेग राष्ट्रीय शिक्षा नीति '1986) में वर्णित शिक्षार्थी केंद्रित व्यवस्था के दिशा में ढेर दूर तक ले जाई ।

एह किताब में किशोर-किशोरियन के कल्पनाशक्ति के विकास, ओह लोग के गतिविधियन के सृजनशीलता, ओह लोग के सवाल करे

www.bhojpurisahityangan.com

आ ओकर जबाब पावे के मौलिक अधिकार के समुचित सरक्षण आ ओकरा के रचनात्मक दिशा देवे के कोशिश कइल गइल बा । निश्चय रूप से एह में पढ़नियारन के संगे-संगे शिक्षक सभे के भी गहिरा लगाव के ओतनही भूमिका होखे के चाही । पढ़नियारन के प्रति संवेदना आ सहानुभूति के संगे उहाँ सभनी के किताब में बहुते सक्रिय सहभागिता होखे के चाही आ लेखक परिचय, मूल पाठ आ ओकरा संगे दिहल अभ्यास सवालन के संदर्भ में समुचित जागरूकता देखावे के होई । हरेक पाठ का संगे कई तरह के अभ्यास बा जवना से शिक्षार्थियन के पाठ पर पकड़ त बनवे करी, संगही ओकरा भीतर व्यापक जिज्ञासा के प्रोत्साहन मिली । किताब के परिकल्पना में कईएक गो महत्त्वपूर्ण बातन के ध्यान रखल गइल बा । भाषा आ साहित्य के ढर्रा में बान्हल घेरा के सकारात्मक स्तर पर तूड़े आ वृहत्तर अनुभव क्षेत्रन के ओकरा से जोड़ला के संगे-संगे कईएक तरह के पाठ शृंखला के उबाऊ होखे से बचावत अइसन कोशिश कइल गइल बा कि पाठ भारी ना होखो आ सामयिक जीवन संदर्भन से जुड़ के छात्रन खातिर रोचक बन जाव । छात्र उत्सुकता आ आनंद के संगे तनावमुक्त रीति से ओकरा के पढ़त पढ़त बहुत तरह के जानकारी प्राप्त कर लेव आ ओह जानकारी के ज्ञान के सृजन में उपयोग कर सको ।

एस.सी.ई.आर.टी. सबसे पहिले मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के मंत्री श्री वृषिण पटेल आ प्रधान सचिव डॉ. मदन मोहन झा के प्रति विशेष आभार प्रकट करता जेकरा नियमित मार्गदर्शन के बिना बिहार के नवका पाठ्यक्रम (2007) आ एह पाठ्यपुस्तकन के रचना संभव ना रहे । एह किताब में शामिल रचनाकारन, ओह लोग के प्रकाशकन आ परिवार के लोगन का प्रति आभार प्रकट करत एह किताब के विकास खातिर बनावल गइल पाठ्य पुस्तक विकास समिति

www.bhojpurisahityangan.com

के प्रति भी एस.सी.ई.आर.टी. कृतज्ञता व्यक्त करतिया । भोजपुरी भाषा समूह के अध्यक्ष डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव, समन्वयक डॉ. जीतेन्द्र वर्मा, सदस्य प्रो. ब्रजकिशोर, डॉ. कविता वर्मा, आ डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करतानी । ई सभे गहिरा सूझबूझ, मेहनत, भावात्मक लगाव आ विजन का संगे एह काम के समय से तत्परतापूर्वक संपन्न कइल ।

किताब-निर्माण के प्रक्रिया में समय-समय पर अपना रचनात्मक सुझावन आ परामर्शन से हमनी के लाभान्वित कइल, एकरा खातिर हम इहाँ सभे के आभारी बानी । अकादमिक सहयोग खातिर पाठ्यक्रम आ पाठ्यपुस्तक विकास समिति के अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी के प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करतानी । इहाँ के एकनिष्ठ सक्रियता के ही परिणाम ह कि ई किताब रउवा हाथ में पहुँच सकल बा । किताब के कंपोजिंग, पेज मेकिंग आ टाइप सेटिंग खातिर जे०एम० कंप्यूटर आ राजीव कुमार बधाई के पात्र बानी ।

किताब रउवा हाथ में बा । एकरा के पढ़े-पढ़ावे के प्रसंग में भइल अनुभवन से उपजल परामर्शन आ सुझावन के हमनी के इंतिजार बा ।

इंदुमौलि त्रिपाठी
निदेशक
राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार

www.bhojpurisahityangan.com

ई किताब

एगारहवाँ वर्ग के छात्रन खातिर बनल भोजपुरी के पाठ्यपुस्तक 'दूभि-धान' (भाग-1) बिहार सरकार द्वारा बोलावल विशेषज्ञन के देखरेख, निर्देश आ सलाह पर बनल नवका पाठ्यक्रम के मुताबिक बनावल गइल बा । एह पाठ्य पुस्तक के स्वरूप निर्धारण एस.सी.ई.आर.टी., बिहार के तत्वावधान में सरकार के नवका शिक्षा नीति के तहत भइल बा । एकरा खातिर कई गो परिसंवाद, गोष्ठी आ कार्यशाला आयोजित भइल जवना में पर्याप्त विचार-विमर्श आ कइएक गो पाठ्यक्रमन आउर पाठ्यपुस्तक के तुलनात्मक समीक्षा-प्रक्रिया से गुजर के ई काम संभव भइल । ई किताब एकरे मूर्त रूप हवे ।

भोजपुरी अपना देश के लगभग पन्द्रह करोड़ लोग के मातृभाषा हवे । भारतीय संविधान में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देवे के वादा कइल बा । भोजपुरिया लोग अबले एकरा से वंचित रहले ह । ई खुशी के बात बा कि बिहार में एकर शुरुआत हो रहल बा । उच्च शिक्षा में भोजपुरी के पहिलही मान्यता मिलल बा । वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा आ नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पटना में भोजपुरी स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ावल जा रहल बा । बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में एकर पढ़ाई स्नातक (प्रतिष्ठा) स्तर पर कई दशक से होत रहल हवे बाकिर प्राथमिक शिक्षा के माध्यम ई अब बन रहल बिया ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के वर्तनी तय करे में हमनी के विचार-विमर्श कइनी सन। बोली आ भाषा में हरदम अंतर रहेला। दुनिया के कवनो भाषा जवना तरे बोलल जाले एकदम ओही तरे लिखल ना जाले। अब भोजपुरी बोली भर नइखे रह गइल। ई अब खाली गीत गवनई के भाषा नइखे रह गइल। अब ई विचार आ शास्त्र के भाषा बन चुकल बियां। जल्दीए शासन-प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान आदि के भी भाषा बनी। अइसन स्थिति में एकरा खातिर देवनागरी लिपि के कवनो अक्षर, संयुक्तक्षर भा मात्रा के छोड़ल ठीक ना होई। एह से अभिव्यक्ति में कठिनाई होई। जवना चीज खातिर भोजपुरी में शब्द बा निःसंदेह ओकरा के अपनावे के चाही बाकिर हिंदी, अंग्रेजी आ आउरो कवनो भाषा के शब्दन के भोजपुरियावे के फेर में ओकर वर्तनी बिगाड़ल ठीक नइखे। जरूरत पड़ला पर दोसरा भाषा के शब्दन के बेहिचक अपनावे के चाही। एह से भोजपुरी समृद्ध होई। अंग्रेजी के समृद्धि के एगो बड़हन वजह इहो बा कि ऊ अपना जरूरत के मुताबिक कवनो भाषा के शब्दन के अपना लेले। धोती, लाठी जइसन भोजपुरी के ना जाने केतना शब्द आज अंग्रेजी शब्दकोश के शोभा बढ़ा रहल बाड़े। हमनी के खाँटी भोजपुरी के आग्रह से बचे के चाही। जब भोजपुरी के हर तरह के अभिव्यक्ति के भाषा बनावे के बा त मुख सुख, स्थानीय प्रयोग आदि के आग्रह से ऊपर उठे के होई। अंग्रेजी, हिंदी सहित सभ भषन के स्थानीय रूप बावे बाकिर ओह हिसाब से लिखल ना जाला।

किताब के नाँव 'भूभि-धान' में भोजपुरिया संस्कृति के अभिव्यक्ति होता। बेटी के विदाई के बेरा खोइछाँ में अरवा चाउर, हरदी के टूसा, रुपया-पइसा के संगे-संगे दूभियो दियाला। कहल जाला कि बेटी के खोइछाँ में सगरी धरतियो छोट पड़ि जाला ओजवाँ दूभि के अनिवार्यता के प्रतीकात्मक महत्त्व बा। 'दूभि-धान' नाँव सुनते भोजपुरिया संस्कृति आँखि के सोझा मूर्तिमान हो उठता।

भोजपुरी में एगारहवी शताब्दी से महत्वपूर्ण लेखन होत आ रहल बा। संत कबीरदास भोजपुरी के आदिकवि रहीं। जइसे तुलसीदास के भाषा अवधी, सूरदास के भाषा ब्रजभाषा, विद्यापति के भाषा मैथिली बा वसही कबीरदास के मूल भाषा भोजपुरी बा। जइसे तुलसीदास के अवधी दोसरो लोकभाषा में अपना परिवर्तित रूप में लउकेला ओइसहीं कबीरदास के भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

कई जगह परिवर्तित रूप में लोकप्रिय भइल बा । ई कबीर के लोकप्रियता के परिचायक बा- बाकिर भाषा त उनकर भोजपुरिए ह ।

भोजपुरी के एगो बड़हन खासियत ई बा कि ई विदेशो में बोलल जाले । हिंदी के जवन अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप लउकता ओकरा नेंव में भोजपुरिये बिया । मरीशस, सूरिनाम, ट्रीनीटाड, फिजी, गुवाना, हॉलैण्ड, जमैका, नेपाल में भोजपुरी बड़हन जनसमुदाय के भाषा बिया । एह में से अधिकांश देशन में भोजपुरिया लोग सदियन पहिले गइल आ आपन जाँगर ठेठा के एह देशन के सोन चिरइया बना दिहल ।

ई किताब तीन भाग में बटल बा- गद्य, पद्य आ थाती । आधुनिक काल के गद्य काल भी कहल जाला । कवनो भाषा के समृद्धि के अंदाज गद्य के ही के लगावल जाता । एह खंड में संकलित कहानी, एकांकी, निबंध आ रेखाचित्र पढ़ि के भोजपुरी के समृद्धि के पता चली । एह खंड के शुरुआत दण्डिस्वामी विमलानंद सरस्वती के कहानी 'परमपद' से भइल बा । इहाँ के कहानी-संग्रह 'जेहलि क सनदि' के भोजपुरी के पहिला कहानी-संग्रह होखे के गौरव प्राप्त बा । प्रस्तुत कहानी में धर्म के नाम पर समाज में फइलल पाखंड के पोल खुलल बा ।

1857 के जनक्रांति में भोजपुरी क्षेत्र के बड़हन योगदान बा । एजवा के सपूत बाबू कुँवर सिंह के जाबाजी से सभे परिचित बा । सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' के एकांकी 'सिंहनाद' ओह महान सपूत के याद ताजा कर देता । अपना लेखन से कथा आ ललित निबंध में नया प्रतिमान बनावे वाला डॉ. विवेकी राय के कहानी 'खेल' भोजपुरिया संस्कृति के एगो विरल पक्ष के उद्घाटित करतिया । सांस्कृतिक रूप से संपन्न भोजपुरी क्षेत्र के कई गो आपन खेल बाड़े सन, जवना में कल्पनाशीलता के पुरहर जगह बा । अइसन खेल लड़िकन के व्यक्तित्व के विकास में सहायक होला । डॉ. राय के एह कहानी में अइसने खेल के वर्णन बा । हमनी के देश के आजादी आ लोकतंत्र के विकास सभका के आगा बढ़े के मौका दिहलस । एकर एगो सटीक उदाहरण बानी बाबू जगजीवन राम जी । जे अपना मेहनत आ लगन से आगा बढ़त देश के उप-प्रधानमंत्री जइसन बड़ पद के शोभा बढ़ावल । उहाँ के अपना राह में आवे वाला जाति, छुआछूत, रुपया-पइसा के बाधा पार करत गइली । उहाँ के जीवन यात्रा के कथा प्रस्तुत कर रहल बाड़ी लेखिका श्रीमती उमा कुमारी ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के शब्दन में मेंही-से-मेंही भावन के अभिव्यक्ति करे के प्रेमचंद के महान योगदान बा। उहाँ के कहानी कफन में समाज के भकसावन चेहरा सामने आइल बा। क्षमता बा। एकरा पर मान्य निबंधकार डॉ. अनिल कुमार आंजनेय अपना निबंध 'भोजपुरी के धन जनगर पनिगर शब्द में प्रकाश डाल रहल बानी।

कथा के विकास में प्रेमचन्द के योगदान मील के पत्थर मतिन बा।

भोजपुरी में हर तरह के लेखन हो रहल बा जउना में अनुवाद के स्थान भी बा। प्रेमचन्द जी के हिन्दी कहानी 'कफन' के भोजपुरी अंनुवाद एह पाठ्यपुस्तक में समाहित कइल गइल बा। एह कथा के भोजपुरी अनुवाद प्रसिद्ध साहित्यकार श्री गंगानन्दन झा 'कलाधर' द्वारा कइल गइल बा। भोजपुरी में विभिन्न तरह के लेखन के पुष्टि डॉ. बसंत कुमार के 'अकसरुआ' करता। ई संस्कृत के भाण शैली में लिखाइल बा। एह में समाज में व्याप्त कुरीतियन के कलात्मक ढंग से सामने ले आवल गइल बा। शोषण, बेमेल बियाह, कालाबाजारी, विधवा समस्या, धार्मिक ठगी पर एह में प्रहार बा।

तैयब हुसैन पीड़ित के कहानी 'वाई के टू' विज्ञान कथा ह। ई कहानी छात्रन में वैज्ञानिक चेतना के बढ़ावा दी। भोजपुरी में हर तरह के अभिव्यक्ति हो सकता-एकरा के ई कहानी प्रमाणित करतिया। डॉ. जितराम पाठक के निबंध 'पनही' भोजपुरी निबंध के समृद्धि के बखान करता। भोजपुरी साहित्य के बढ़ती में डॉ. पाठक के योगदान मील के पत्थर मतिन बा। डॉ. आशारानी लाल भोजपुरी के चर्चित निबंधकार हईं। 'ईया' शीर्षक रेखाचित्र में इहाँ के नारी विमर्श के स्वर देले बानी। ई 'ईया' खाली डॉ. लाल के ईया ना हईं, ई सगरी भोजपुरिया जगत के ईया हईं।

पद्य खंड के शुरुआत भोजपुरी के महाकवि कबीरदास के से भइल बा। आज कबीरदास सबसे बेसी प्रासंगिक बानी। हिंदू-मुसलमान-सबका धार्मिक-सामाजिक कुरीतियन पर उहाँ के प्रहार कइलीं बाकिर सभे उहाँ के आपन बतावल। कबीर दास के बाद संत दरिया दास के पद संकालित बा। दरिया दास भी कबीर के विचारधारा के रही। इहाँ के वाणी आजो जनमानस में गूंजता। संत लक्ष्मी सखी सखी के नाँव बाबा लक्ष्मीदास रहे। इहाँ के कबीरदास के आपन गुरु मनले बानी। इहाँ के रचना विनय से भरल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

आजादी के लड़ाई में बाबू रघुवीर नारायण के गीत 'बटोहिया' के ऐतिहासिक योगदान बा । "पूर्वी भारत के हृदय में जो राष्ट्रीय भावना मचल रही थी, वह सबसे पहले बाबू रघुवीर नारायण के बटोहिया नामक गीत में फूटि और इस तरह फूटि की एक उसी कविता ने उन्हें अमर कवियों की श्रेणी में पहुँचा दिया ।" -राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के ई कहनाम एकदमे सही बा । आजादी के लड़ाई के बेरा भोजपुरी में राष्ट्रीय भाव से भरल खूब कविता लिखाइल । भोजपुरिया लोग आजादी खातिर लड़ल आ लड़े खातिर कविता लिखल । जइसे कबीर दास के कविता 'घलुआ' में मिलल रहे वसही प्रसिद्ध नारायण सिंह के कविता बा । उहाँ के स्वतंत्रता सेनानी रहीं आ कवितो लिखलीं । अनिरूद्ध भोजपुरी के नामी-गिरामी गीतकार हईं । इहाँ के अपना गीत में बरखा के मनभावन चित्र उरेहले बानी ।

सूफी संत डॉ. जौहर शफियाबादी के गजल छात्रन खातिर प्रेरणादायी बा । भोजपुरी सही में जनभाषा हिय । एह में जात-धर्म के भेद नइखे । एगो प्रसिद्ध सूफी संत के लेखन एकरे के साबित करता ।

थाती खंड में भोजपुरी के महान विभूति भिखारी ठाकुर के नाटक 'बिदेसिया' संकलित बा । एह में समाज के भोगल साँच अभिव्यक्त भइल बा ।

किताब में रचना का संगे-संगे लेखक के छोटहन परिचय आ रचना के बारे में उत्सुकता जगावे वाला बात दिहल बा । एजवा एह बात के ध्यान राखल गइल बा कि परिचय उबाऊ ना होखे । हरेक पाठ का संगे अभ्यास दिहल बा । एकरा में एह बात के ध्यान राखल गइल बा कि लड़िका पाठ के बिना कवनो आतंकित भइल पढ़ो । पाठ में व्याकरण से संबंधित पाठ भी दिहल बा । एह घड़ी भोजपुरी में नया अवसर आइल बा । फिल्म के अलावा विज्ञापन पत्रकारिता, अनुवाद में रोजगार के मोका बा । रचना में संवाद लेखन, विज्ञापन, पत्रकारिता, अनुवाद पर ध्यान दिहल गइल बा । परियोजना कार्य में एह बात के ख्याल राखल गइल बा कि लड़िका में खोजी प्रवृत्ति आ कल्पनाशीलता के बढ़ावा मिलो ।

जीतेन्द्र वर्मा	प्रो. रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव
समन्वयक, भोजपुरी भाषा समूह	अध्यक्ष, भोजपुरी भाषा समूह

www.bhojpurisahityangan.com

सूची

1. परमपद -दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती 1
2. सिंहनाद -सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' 19
3. खेल -डॉ. विवेकी राय 34
4. देश के महान सपूत : बाबू जगजीवन राम -उमा कुमारी 44
5. भोजपुरी के धन : जगनगर-पनिगर शब्द -डॉ. अनिलकुमार आंजनेय' 51
6. कफन (प्रेमचन्द) -अनुवाद- गंगानन्दन झा 'कलाधर' 61
7. अकसरूवआ -डॉ. बसंत कुमार 77
8. वाय टू के -डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' 97
9. पनही -डॉ. जितराम पाठक 108
10. ईया -डॉ. आशारानी लाल 117
11. कबीर के वाणी -कबीरदास 126
12. बिनती -दरिया साहेब 130
13. बारह मासा -लछिमी सखी 133
14. बटोहिया -रघुवीर नारायण 137
15. शहीद के श्रद्धांजलि -प्रसिद्ध नारायण सिंह 141
16. आषाढ़ के बादल -अनिरूद्ध 145
17. गजल -डॉ. जौहर शफियाबादी 149

थाती

18. गबरघिचोर -भिखारी ठाकुर 152

www.bhojpurisahityangan.com

दण्डी स्वामी विमलानंद सरस्वती

[पहिले अवध बिहारी 'सुमन' के नाम से लेखन । स्वतंत्रता सेनानी । अब संन्यास जीवन । भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह 'जेहल क सनदि' के लेखक । 'बउधायन' नाम से भगवान बुद्ध के जीवन पर वृहदकाय महाकाव्य के रचयिता । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आरा अधिवेशन के अध्यक्ष । राजगुरू मठ, वाराणसी में वास ।]

परमपद

'खेदू भाई ! जिनगी क कवन ठेकान बा ? ढेली तोहार परिवार हउवनि । बेटा आ भतीजा दूइ ना ह । केतना नेह-छोह से तोहार सेवा करत बाड़न । हाथ मइल न गोड़ मइल । बइठल चिक्कन सुरस भोजन मिलत बा ऊधो क लेना न माधो क देना, कल से राम-राम कहे के बा । तोहरा के दूसर का चाही ? उनका से अनराज काहें रहत बाड़ ? परिवार से बिरोध ना राखे के । बुढ़वती आइलि । थाहि के डेग धरे के चाहीं । हमन का दरियाव का आरी क फेड़ बानी जा । आज गिरलीं भा काल्हि! पाकल

www.bhojpurisahityangan.com

आम का चुवे में कवन देर बा ?

मीठ आ मोलायम बोलि के लोग आन केहू के आपन बना लेत बा ढेली त खून ठहरलन । हमनी का अमिरित के घरिया नइखीं पियले कि अमर रहबि जा । बेमतलब क काहें माँथे कलंक क टीका लेत बाड़ ? मुवलो पर ऊहे मुँहें आगि दीहन; पिंडा-पानी आ काम-किरिया करिहन ।

तोहार कवनो कुसंच होखे, त हमसे बताव । हम तोहार उपाय करब दस-पाँच दिन में बोवनी ओरियाले,त चलल जाय कि बगसर गंगा-असनान होखे आ लीखि-पढ़ि के एकोर कइ द । आगे क खरखसा टूटो ।'

खेदू राय तोसकि-तकिया लगवले पलंगरी पर बइठल गुड़गुड़ी पीयत रहलन । देहि में भुड़ीदार बन वाली मिरजई,कपार में कनटोप,आँखी पे चसमा लगवले दोहरि ओढ़ि के बइठल रहलन ।

x x x

कातिक क भोरि,लोग बोवनी में बाझल रहे । ढ़ेली दूइ घरी राति गइला टूँड़ वाँहीं ले बैल हँकले अइलन । ओसारी में हर-टाँड़ि, हेंगा आ बीया क दउर धरवाइ के गरूवारी करे लगलन । अकसरूवा आदिमी । सभ काम अपनहीं सम्हारे के रहे ।

काम ले खाली हो के बखरी में गइलन कि दू कवर भोजन करीं, त ओइजा दूसरे तमासा लागल रहे । उनकर बूढ़ि मँहतारी आ ढेली बो भउजी बिलखत रहली जा ।

'का रे माई! ई कवन तमासा लगवले बाड़ू स ?'

माई सुसुकत आ अँचरा से लोर पोंछत लोटा क पानी आगा धइलसि-'ए बचवा ! खेदू क अनेति आ गारी- फजिहति केतना सहीं

www.bhojpurisahityangan.com

जा । दूइ- चारि दिन पर कवनो-न-कवनो अनखुन जोहि के झगरा ठानत आ बिरही बोलत बाड़न । ईहे उनकर सखुनतकिया हो गइल बा । आजुवो झनकि के ठहर पर ले थरिया पटकि के उठि गइलनि ह । कहत बाड़न कि हमरा के बासी रसोई देत बाड़ी स । दालि में माँड़ मेरावल बा आ दूध धिकले नइखे । हमार हक-हीसा लेई के हवेखत बाड़न जा । हम खेत महपातर के दे देबि,तवन सबुर बा; बाकिर तोहरा लोग के पसर चरे खातिर ना रहे देबि ।'

ढेली बड़ा लेहाजी रहलन । खेदू राय क दस गो फूहर-पातर सहि लेसु, 'बाकि जवाब ना देसु । उनके बाप ले कम न जानसु । उनका खातिर सभ इंतिजाम रखले रहलन । खेदू राय का दुवार पर बइठल कटरावे-पांगे के रहे। कबे-कबे भुखाली साहु का ठाकुरबारी पर बगसर क महंथजी आवसु, त कथा सुने भा दरसन करे जासु ।

आज क हालि सुनि के ढेली बड़ा दुखी भइलन । खाइल-पीयल का नीमन लागे ? कइसहूँ दू-चारि कवर घोंटि के चउका पर ले उठि गइलन । बराबर कुछ-न-कुछ बखेड़ा खड़ा भइल रहे । साँप क बीलि तहाँ पूत क सिरहान; ढेली खातिर कुफुति रहे, बाकी करसु का ?

राजनारायन राय का दलानि में रोज बइठकी होखे । गंगा राय, काशी राय,रघुनाथ मिसिर,सोहावन भगत चउकिदार,सभ बइठल खेदू आ ढेली क बाति बतियावत रहल । एतने में बीड़ी पीयत ढेली पहुँचि के राजनारायन का ओरिचना बइठलन ।

'मजे में बइठत काहें नइख ?' राजनारायन राय का ई कहला पर ढेली का लोर आ गइलि आ ऊ आँखि पोछे लगलनि । राजनारायन राय पूछे लगलनि कि बाति का ह ढेली ? आजुवो कुछ खटपट भइल रहल ह का ?

www.bhojpurisahityangan.com

गंगा राय मेंहीं सरदार रहलन । ढेली क चाची परशुराम का माई से उनकरा भोज-भात रहे । गंगा राय के भउजाई आ परशुराम का माई क सुनगुन गंगा राय कुछ सुनले रहलन । परशुराम क मँहतारी चरितरबन का हरिकिशुन दास क चेलिनि रहलीं ।

गंगा राय कहलन कि तोहन लोग बेकार खेदू क पोंछि सुहुरावत बाड़ । खेदू पोंछी पानी ना ठेके दीहन । हरिकिशुन दास उनकर कान भरले बाड़न । परशुराम क माई बुढ़िया कुटनी क काम करत बाड़ी । खेदू सोनहुली तसबीरि देखि रहल बाड़न । उनकर मन बत्तीस घोड़ा का बग्गी पर असवार बा । तोहन लोग का कहला-सुमुझवला में कुछ नइखे । ढेली सबुर करसु । इनकर बाल-बच्चा अपना कमाई से ना जीहन-खइहन, त पत्तल चटले कै दिन काम चली ?

2

'खेदू ! धन-दउलति लेइ के न केहू आयल बा, न लेइ के जाई । मरे का बेर भाई-दयाद करधनि तक तोर लिहन ! धरमे संगे जाई । दान-धरम करे के चाहीं । ऊहे न आखिर में आँटी । अब तोहरो ठाकुरजी का सरन में रहि के दूइ कवर परसाद पावे आ गंगा नहाये के चाहीं । आगे के डगरि बनावल न ठीक बा । एहिजा साधु-महातमन क सतसंग बा । भगवान क भजन कइके परमपद पावे खातिर जतन कर । दखिनहा भूचड़न का संगे का कुकुरचोंथ कइले बाड़ ? उसरा टाँड़ पर जीव मति द । मरि जइब, त गोड़ घिसियाइ के बीगि दिहन स । बबूर-परास का बन में फुँकइब, गंगा से भेंट ना होई ।'

'ददुरा का दुबाइन क नइख देखत, कइसन कंचन चरति बाड़ी । इनकरो केहू नइखे । दस बिगहा बेटी-दमाद के दिहली आ

www.bhojpurisahityangan.com

पनरह बिगहा ठाकुरजी का नाँवे से राग-भोग खातिर लिखाइल ह । धरती ले सोना दान कइला क बेसी फल होखेला । एह जनम में जे धरती दान करी, ऊ अगिला जनम में राजा होई ।'

खेदू पगरी उतारि क महंथ जी का चरन पर धइ दिहलन -'महराज ! रउरा त ठाकुरजी का राग-भोग-सेवा खातिर कहत बानी । ई हमार उदय भागि कि हमार धन भगवान का काम में आवे । हमार मन अब पहिलहीं ले उचटि गइल बा । ओइजा रहला में इज्जति नइखे । हम मन में ईहे ठानि के चलल बानी कि कतहीं कवनो मंदिर-ठाकुरबारी में लिखि के ओनिये मरि-हरि जाइब । रउरा नाहीं राखब, त ई धरती महपातर का गरे मढ़इहन, बाकी ढेली आ उनका बाल-बच्चन के हर घुमावे खातिर ना रहे देब । ढेली क हमरा सोरि कबारि के दम लेवे के बा । ढेली के भीखि ना मंगववलीं, त जानेब गदहा का गरमें बान्हि देब । ठाकुरजी का मरजी आ साधु-महातमा क दया । हमरो मन बा कि गंगा नहाईं, ठाकुरजी के सेवा करीं आ तीरथ-परसाद पाईं । जगहि-जमीनि ठाकुरेजी नू देले बाड़न । सभ संपति उनहीं क ह, त देबि केकरा के ? ईहे चाहत बानी कि राजनारायन आ गंगा न जाने पावसु । राजनारायन जवार क चउधुरि आ हुँड़हा ठहरलन । जवार में उनकर दाव- हाँक बा । ऊहे आजकाल्ह अवँती का बाबूसाहेब क तसिलदारो बाड़न । जानि जइहन त छत्तीस गो बखेड़ा रचिहन ।'

जवन रोगिया चाहे, बयदा ऊहे बतावे । महंथजी मने-मन खुश भइलन । दाव-पेंच जानल आ मामिला-मोकदमा लड़ल-ईहे त उनकर भजन रहे ।

'घबड़ा मति खेदू ! हम अइसन उपाय करब कि केहू पता ना पाई । कचहरी जाये क कवनी जरूरते ना पड़ी । हम उड़ती चिरई के

www.bhojpurisahityangan.com

हरदी लगाइला । हमके केहू का सिखाई ?'

महंथजी का ठाकुरबाड़ी ले पंजरे रजिहटार साहेब क डेरा रहे । साँझि-बिहान रोजे भेंट होखे । अक्सर अइला पर महंथजी उनके पंजीरा-परसाद भेजसु । ओही राति में सभ सलाह आ मनसउदा ठीक हो गइल । होत बिहान चतुरभुज बरम्हचारी साइकिल उदउराइ के देवानलाल किहें ले टीकठ फारम ले अइलन । खेदू राय का बेमारी के दरखास देइ के महंथजी रजिहटार साहेब के मठिये में आवे खातिर फीस जमा कर दिहलन । पूरा माल मिलल रहे । कवनो जाँगर के कमाई खरच करे के रहे कि असकति लागित ! चानी क मारि मारल गइल । हाकिम-अमला-पियादा-चपरासी सभ रसगुल्ला छीलल आ दूध से कुल्ला कइल ।

बाप-दादा क कमाइल धरती । केतने पुस्त क जोगावल आ कोड़ल-कमाइल, खेदू क आज संग छोड़ि के चलि दिहली ! खेदू अँगुठा बोरि के अपने आपन हाथ क'टि लिहलन । ठीक कहल बा कि ई पिरथु मान्धाता, बली, आ रावन क साथ ना धइली, त दोसरा के कब होइहन ?

x x x

देहाति-जवार के लोग जमदूतिया नहाये मथुरा जात रहलन । महंथजी के मोका लागि गइल । खेदू राय के मन टुकटुकात देखि क उनका के जवार क़ा जमाति का संगे मथुरा भेज दिहलन । चरितर वन क कुछ अचारी बाबा लोग भी जात रहलन । खेदू खातिर सोना में सोहागा परि गइल ।

पाँच-सात दिन में मथुरा-वृन्दावन, नंद (गाँव), बरसाने, गोबरधन- सभ परिकरमा कइ के खेदू साधुन का जमाति में ओह लोग क खढ़िया ढोवत चित्रकूट चलि गइलन । एह किसिम से काशी

www.bhojpurisahityangan.com

होत बाइसवाँ दिने घूमि-घामि के ठाकुरबारी पर आ गइलन ।

महीना बीति गइल, बाकी केहू पता ना पावल । महंथजी कचहरी का अमलन के मिलवले रहलन । गाँव-जवार जानत रहे कि खेदू राय पड़ियारी का पँडित संगे मथुराजी गइल बाड़न ।

: 3 :

कले-कले थोरहीं दिन में भेद खुले लागल । लोग खेदू राय का करनी क पता पावल । जवार क जेही सुनल, गारी दिहल । ढेली का कवनो टिसुना ना रहे, बाकी लोगन का कहला-सुनला से जवार क चारि गो चउधुरी बटोरलन । मुखरांव, पड़ियारी, चँड़स आ नागपुर के पंच लोग गंगा राय का दुवारे अइलन ।

बोलवला पर पहिले त खेदू राय बड़ा कतरी कटवलन, बाकी सोहावन भगत का समझवला पर अइलन ।

मुखरांव के कतवारू राय पूछलन- '......खेदू दादा ! ई का कइल ह ? ढेली क गरदनि ना कटल, तोहरो संगहीं कटा गइलि । अइसन ना चांहत रहल ह ।'

नागपुर के राजनेति दादा बड़ा दुखी रहलन । रहि-रहि के उनका आँखि से लोर बहे । ऊहो कहे लगलन -'खेदू भाई ! तोहार बाप हमार संगी रहलन । तोहरा क देखि के मोह होत बा । तूँ वंश के टांगी हो गइल । रेंड़ का जरी धमोइ होई के जमल । अबहीं तोहरा हरियरी लउकति बा, कुछे दिन का बाद जब अचारिन क टोकना मले आ खाँटी काटे परी, त मालुम होई ।'

राजनेति राय, राजनारायन राय क संगी रहलन । राजनारायन राय उनकरे गाँव क कथा उभारि के सभ पंचन के सुनावे लगलन

www.bhojpurisahityangan.com

-'राजनेति भाई ! अचारिन क हालि तोहरा से छिपलि बा ? तपोबन ले ओकर नाँव चरित्तर बन हो गइल बा । शंख-चक्र से दागि के सांढ़ बनावे में ओह लोग का देरी ना लागे । खेत-बारी लिखवावे के रही तबले खूब आदर रही । बाद में गारी-फजिहत सहे आ गोबर-गोइँठा करे के परेला ।'

चंड़ेस के बदरी राय कहलन -'हमहूँ सुनलीं ह, आजकाल्ह ओइजा क बड़ा सिकाइति बा ।'

बसगित भगत कहलन -'बसवली हमार समधियान ह । परसो ओइजा ले अइलीं । मुनादासी बसवली क पड़ाइन रहली ह । दूइ-चार बरिस ले सधुनि हो गइल रहली ह । बरिस दिन ले माधोदास का मठिया का हाता में कोठारी बनाइ के रहत रहली ह । माधो कमकर क जाति । पहिले त पड़ाइन के मलकिनी बना के चाभी दिहलन । कुछ दिन में जब रुपया आ गहना-गुरिया कुल्हि मूँड़ि लिहलन आ मुनादासी खँख हो गइली, त लतियावे लगलन । अब मुनादासी कहाँ जासु । घर ले उपरवार फानि के गइले रहली । ओइजा ऊ हालि । एतने ना, जब-जब आगि-खढ़ पंजरा रही, त उधियाइ के जरबे करी । मुना-माधो का दिन में झगड़ा होखे आ राति में मेल हो जाय । जब मुनादासी क गोड़ भारी हो गइल, त दावा-दरपन होखे लागल । बाकी आखिर में मुनादासी असपताल में जाके परमपद पवली ।'

खेदू मुड़ी नीचे कइले सभकर सुनत रहलन । लोग क कहल-सुनल उनका बरछी नियर लागे । अंत में सोहावन चउकिदार जरला पर नून छिरिक दिहलन । सोहावन बड़ा फटकरलन -'चउधुरी, राउर मति बिगरि गइलि बा । हमन क बाप-दादा सात पुहुति ले एही में गलल-पचल । का सभई नरके गइल बा ? गिरहस्त

www.bhojpurisahityangan.com

ले बढ़ि के साधु के बा ? गोहूँ-बासमती, मेवा, मलाई उपराजि के जे राजा-रंक, साधु-फकीर, पशु-पंछी सभके जियावत-खियावत बा, ओके का मानल जाय । साधु लोग जवना पत्तल में खात बा, अब ओही में छेद करत बा । ठीके कहाउति कहल जाला-बाभन, कुत्ता, हाथी-तीनो जाति क घाती ।'

अंत में उखड़ा-उखड़ी हो गइलि । खेदू राय कहलन -'हमरा भाई-भतीजा से कवनो काम नइखे । केहू हमार पिंडा-पानी मत करी । जमीनि हमार, हम भाट के दे देबि, दूसरा के का लागे ?'

: 4 :

हरिकिशुनदास रंगरसिया महंथ रहलन । नेवार का पलंग पर हाथ भर ऊँच गद्दा बिछल रहे । तकिया-मसनद लगावल रहे । बिजली-बत्ती आ पंखा-मसहरी सभ इलबास जुटल रहल । पूवा-राबड़ी, दूध-मलाई आ सेव-अँगूर बिछिलहरि भइले रहे । चानी कटति रहे, दिनरात पाँचों अँगुड़ी घीवे में बूड़ल जानी । छतीसो राग-रागिनी क दरबार होखे आ तबला-हरमुनिया, मिरदंग -सितार क बजारि सजल रहे ।

मठिया में साधु-अभागत आवसु, त ओह लोग के करंगी-करहनी के भात आ खेसारी के दालि मिले । ई कवनो नया रेवाज ना रहे । अचारी लोग किहें बहरिया-भितरिया, नड़गल-तिगल केतना भेद बा, के थाह पावे ?

ईहे कबीर क-'लड़का बूड़े सीलि उतिराय' -ह । किसान-मजूर गली-गली मरसु आ बाबा लोग इनरासन में बइठल मउज करे । धरम का नाँवें पर आजकाल्ह अइसन जुलुम सगरे होत बा । बाकी

www.bhojpurisahityangan.com

अनेति ढेर दिन ना चले । महंथजी क अँजोरिया मधिमाये लागलि । उनका दरबार में पूड़ी-फराठा- दूनों- क सवाद लियाय । कबे पूड़ी भोग लगावसु, त कबे मनफेर फराठा । पूरनवाँसी का चनरमा नियर महंथजी छीजे लगलन । फूलबसिया पूड़ी आ रमेश फराठा रहलन ।

ठाकुरबारी क धन ढोइ के फुलबसिया का दुमहला कोठा बनि गइल । रेडियो, बिजुली-बत्ती, पंखा सभ सिंगार जुटे में देरी कवन रहे ? मालपूवा- मलाई आ सेव-अंगूर ओकरा घर में गाँजल रहे । कले-कले महंथजी बदनाम हो गइलन । पाप क भंडा फूटे लागल । मन क लगामि ढील भइला पर दसो भुटिया घोड़ा बासना का सड़कि पर सरपट दउरि के महंथजी का रथ के गड़हा में गिराइ दिहलन ।

पंचकोस क मेला रहे । रामचउतरा का मयदान में महंथ लोग क खेमा गड़ल रहे । असाँव, पठकवली, घरवासडीह, सगरे क महंथ जुटल रहलन । कथा, सतसंग आ गाना-बजाना भइल । राति का बेरा सभ महंथन का आपस क बटोरि रहे । असाँव क महंथजी बड़कवा मानल जासु । उनकर सुभाव बड़ा सीधा आ सतजुगी रहे । महंथ नारायनाचारी हरिकिशुन दास के बोलाइ के समझवलन -'साधुन क नाकि मति काटीं । पियास लागल; त मोका से पानी पी लिहल जाला, गरदनि में घइली के बान्हि के लटकवले ना फिरल जाय । रउरा फुलबसिया के असथान से दूर राखीं ।'

थोरहीं दिन का बाद महंथजी के अठइनी (थयसिस) रोग धइ लिहलसि । दवाई-बीरो होखे लागल ? डाकदर-बैद में रुपया बहुत फुँकाइल, बाकी बेमारी घटलि ना, बढ़ते गइल । देहि सूखि के पीयर हो गइलि । मुँह ले कबे-कबे खून आवे लागल । कुछ दिन में उहाँ का एकदम खाटि पर हो गइलीं ।

मठिया क कारबार हरदेवाचारी देखे लगलन । महंथजी

www.bhojpurisahityangan.com

मने-मन पछतास आ रोवसु । आखिर में बेमारी बिगड़े लागलि, त साधु लोग सेवा से भागे लगलन ।

एहिजा का केकरा से नाता बा । सभ झुठे लपिटाता । महंथजी ठाकुरबारी क इंतिजाम बान्हि के हरदेवाचारी के महंथी लिखि दिहलन ।

खेदू राय गुरू महाराज के दुख देखि के कोना में बइठल रोवसु । अब ऊ खेदू राय ले खेदनदास बनि चुकल रहलन । कातिक महीना, अछय नउमी, मंगर का दिने दस बजे महंथजी खेदनदास के छोड़ि के परमपद पवलन । महंथजी का परमपद भइला क खबरि सउँसे चरितरबन में बिजुली नियर फइलि गइलि ।

सभ साधु-महंथ जुटलन । विमान बने आ सजाये लागल । फोटो खींचे-वाला बोलावल गइल । चंदन का लकड़ी क चिता बोझे के तइयारी होखे लागलि ।

: 5 :

खेदू राय अब गंगा नहासु आ ठकुरबारी क काम देखसु । गाइ चरावल, गोबर-गोंइठा कइल, बैलन के सानी-पानी कइल-ईहे उनकर रोज क पूजा रहे । दस बजे ले सभ धंधा से खाली होखसु, त नहाइ के लिलार पर फटाका लगावसु । एही सनदि के देखवला पर त परमपद क फाटक खुले के आस रहे । पासा-सीरी आ माला-अयनक क पसारीवाली झोरी अब बान्हते रहसु, तबले अधिकारी पुजारी लोग डाँक-जुरह लगावे-'खेदनदास ! चल चाउर-दालि अमनिया करे आ साग सुधारे के हरज होत बा ।'

'अइलीं सामीजी-तनी भगवान क नाँव लेत बानी ।'

www.bhojpurisahityangan.com

साधु लोग खेदू राय के बइठे ना दिहल चाहे । अधिकारी उनका पर बिगड़ते रहसु । उनकर कहनाम रहे कि कारज कइ के भगवान के परसाद पावल जाला ।

खोभसन सहत आ काम करत-करत खेदू दुबराइ के अँठई हो गइल रहलन । अब बहुत त बेमारे रहसु । बाकी बेमारो रहला पर सारि सहोथहीं के परे । उनका अपना करनी पर पछतावा होखे । मन में झंखसु कि बुढ़वा महंथजी हमके बाढ़ में डालि के चलि गइलन । मन मिरिगा नियर टिसुना में परल, आगे ना जाने कइसे निसतार होई ?

ढेली क सोरि कबारे चलल रहलन, अब उनहीं क कबरति रहे । ढेली कबहीं उनकर जवाब ना देले रहलन, एहिजा उढ़रन क फजित भा बिरही बानी रोजे सहे के परे । अगल-बगल का मठियन आ मलाहन का घरे बइठि के रोवसु-कलपसु । अब के उनकर बयान आ अरजीदावा सुने ? भगवान का कचहरी में उनकर मामिला फरियावे के रहे ! पंच-परमेसर के ठोकर मारि के उठि गइला क फल पावत रहलन ।

हरदेवाचारी नया महंथ रहलन । घर क एकदम कंक-बाँकुड़ा । एहिजे महंथजी किहें खासु-पियसु आ संसकीरित पढ़सु । मधिमा पढ़ि के अछरकट्टू हो गइल रहलन । पुरूब जनम के करम कमाई कि महंथी हाथ लागि गइल । खखाइल रहलन, हबके क मोंका पा गइलन । गहुँवन का मरला डोंड़ के टीका दिहल रहे । डेढ़ सइ बिगहा .धन-चइती क नभ सुहेल खेत । पयदा पूरा होखे, बाकी ओतना से ठाकुरबारी क खरचे ना चले । बखारि आ खजाना का धन में मूँस लागि गइल, त ओटे कइसे ?

बुढ़वा महंथ का मुवला पर बसमतिया का घर क मानि-बीयरि बंद भइल, त नयका महंथजी का गाँव क सूमि खोदि के तइयार हो

www.bhojpurisahityangan.com

गइलि ।

दरार फाटल धान का करइल खेत में पानी क थाह ना लागे । रोहुँड़ा पक्का पिटाये लागल आ रेहन-कबाला किनाये लागल । भाईन क बियाह ना होत रहे, तहाँ तिलकहरू दुवार खांचे लगलन ।

असाढ़ चढ़ते खेदू राय बेमार परलन । पहिले त मियादी बोखार धइलसि । पाछे ले सिरिहिनी हो गइलि । दावा-दरपन क कवनो इंतिजाम ना रहे । मरवाड़ी-असपताल आ आउर बैद का खैराती दवाखाना से अपने टहरि-घूमि के दवाई ले आवसु । पाछे चलि के पवरूख थाकि गइल, त के ले आवे ? नेम से दवाई ना भइला से बेमारी बेकाबू होखे लागलि । चतुरभुज दास ब्रह्मचारी कबे रहसु, त खेदू क कछ खबरि लेसु । समय से सुबधान पानी दुलम हो गइल । दूसर के सेवा करे का पंजरा के जाला ?

सावन चढ़ते हरदेवाचारी रोपनी करावे ददुरा आ महिला चलि दिहलन । ओनहीं उनके पूरा महीना बीति गइल । पचासी बिगहा जमीन त खेदू आ परशुराम क माई मिलि के महिले में दिहले रहली । सावन चढ़ते मेघ उमड़ल, से बीसन दिन बरिसते रहे । खेदू के रहे खातिर बुढ़वा महंथ क अइठसी वाली कोठरी मिललि रहे । बहुत दिन ले बेमरम्मत रहला से बरखा भइला पर चूवे लागे । ओही कोठरी में एगो झिलिंगा बँसखट पर फटहा टाट क टूक बिछाइ के खेदू परल रहसु । दस्त क बेमारी बिगड़लि, त शरीर बेकाबू हो गइल । घर का कोना में फराकित होखसु आ बिहान भइला अपनहीं उठाइ के बीगसु ।

हरदेवाचारी का कुटी में महिला क गंगा राय आ सतनारायन क लइका लोग रहि के पढ़े । भादो बदी चउथि सनीचर का दिने साँझि का बेरा जब लइका पढ़ि के अइलन, त खेदू राय ओह लोग

www.bhojpurisahityangan.com

के बोलवलन । कोठरी में बरखा क पानी चूइ के डबहा लागल रहे । बदुरी आ केशो दादा क दुरगति देखि के रोवे लगलन । खेदू दादा क आँखि भी छलछला के बहि चललि ।

दादा का झिलिंग बँसखट का आराम कुरसी पर ल उठे क सक ना रहल । टाट, बँसखट खटिया आ पानी में ले मइला चफनल-उतिराइल रहे । बदुरी-केशो मिलि के कोठरी साफ कइलन आ दादा क लूगा-कपड़ा बदलवाइ के फिंचलन जा । मेंटा में पानी धइ के ऊ लोग अपना डेरा में चलि गइलन ।

पहर रात गइला बरखा नधियाइल आ गरजे-तड़पे लागल ! कोठरी में चिराग तक न रहल । भादो क अन्हरिया अइसनि कि लात तर क ना सूझे । खेदू दादा का आगा त अइसहीं अन्हार छवले रहल । जेनिये ताकसु, अन्हारे-अन्हार ! सभ ओरि क डहरि बंद हो चुकलि रहली स । ठाकुरजी का नाँव पर खेदू क कान कटाइल आ उनका के दागि के साँढ़ बनावल गइल । अब ठाकुरो जी आँखि मूँदि देले रहलन ।

महंथ-पुजारी का हलुवा-पूड़ी उड़त रहे आ खेदू झिलिंगा पर झंखत परमपद क डहरि ताकसु ! राम-जानकी के मूरति धरम क ई तसबीरि देखि के पत्थल हो चुकलि रहे ।

बेपरमान जल बरिसल । खेदू भींजत-किंकियात रहलन । खटिया तर बयतरनी बहति रहलि । करीब दूइ बजे क बेरा भइल होई । पंजरे पीपर का पेड़ पर उरूवा बोलत रहे । एतने में राति ढरकल जानि के सियारिनि फेंकरलि !

ओने आकाश में जोर से बिजुली चमकलि आ तड़तड़ाइलि । एही घरी ना जाने, नव में कवना दुवारि से खेदूओ का देहि क बिजुली निकलि के अकास का बिजुली में समा गइलि । हिरामन

www.bhojpurisahityangan.com

सुगना का उड़ते पिंजड़ा उदास परि गइल ।

होत बिहान सभ मठियन में बोलावा गइल कि खेदनदास क परमपद हो गइल बा । घरी-दूघरी में सभ साधु भयवद्दी में बटुरइलन । बिमान सजाये लागल । महंथजी भी दक्खिन ले आ गइल रहलन !

बिमान में चारो ओर लाल-पीयर कागज सटाइल आ पूरा सिंगार भइल । खेदनदास के नहवाइ के एक सइ एगारह क लमहर फटाका लगा दियाइल । गर में फूल क बीसन गजला आ तुलसी क माला गाँजि दियाइल । फोटो खींचेवाला पहिलहीं ले बोलावल रहे । महंथजी खेदनदास का परमपद क तसबीरि खिंचवा लिहलन कि मोका पर काम करी ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ पश्न

1. 'परमपद' कवना विधा के रचना ह ?
2. 'परमपद' में केकर पाखंड उजागर भइल बा ?
3. 'परमपद' के मुख्य पात्र के बा ?

   (क ढेली (ख) खेदू

   (ग) महंथ (घ) रामनारायन राय

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नीचे दिहल कवनो तीन गो मुहावरन भा कहाउतन के अर्थ लिखीं-

   (क) ऊधो के लेना ना माधो के देना

   (ख) थाहि के डेग धइल

   (ग) माथे कलंक के टीका लगावल

   (घ) लाद में धसल

   (ङ) आपन-आपन डहर नापल

   (च) तमासा लगावल

   (छ) बिरही बोलल

   (ज) साँप के बील तहाँ पूत के सिरहान

   (झ) कान भरल

   (ञ) पोंछ सुघरावल

   (ट) बत्तीस घोड़ा का बग्गी पर सवार भइल
2. खेदू का बारे में उनका मतारी के का शिकाइत रहे ?
3. परशुराम के महतारी केकर चेलिन रहली ?

www.bhojpurisahityangan.com

4. महंथ जी खेदू के कवन सुझाव दिहले ?
5. खेदू ढेली के आपन जमीन काहे ना देवे के चाहत रहले ?
6. खेदू काहे चाहत रहले कि राजनारायन राय आ गंगा जमीन दान कइला का बारे में कुछ ना जाने पावस ?
7. खेदू के विचार जान के महंथ मने-मने काहे खुश भइले ?
8. खेदू साधु लोग का सँगे-सँगे कहाँ-कहाँ घूमले ?
9. मुनादासी के कथा का रहे जे बसगित भगत सुनवले ?
10. 'गिरहस्थ ले बढ़के साधु के बा ?' एह कथन पर आपन विचार लिखीं ।
11. हरिकिशुन दास कइसन महंथ रहले ? उनका बारे में संक्षेप में लिखीं ।
12. पंचकोसी मेला कहाँ लागेला ?
13. महंथ जी का कवन रोग हो गइल ? उनका बाद के महंथ बनावल गइल ?
14. खेदू खेदनदास बन के मठ में कवन-कवन काम करस ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'परमपद' कहानी के सारांश लिखीं ।
2. भोजपुरी कहानी के विकास में दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती के योगदान के वर्णन करीं ।
3. खेदू राय के दिन मठ में कइसे कटत रहे ? उनकर कहानी संक्षेप में लिखीं ।
4. धरम का नाँव पर ढोंगी साधु लोग के पाखंड पर एगो लेख लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

परियोजना कार्य

1. अपना गाँव-जवार के मठ-मन्दिर के इतिहास संक्षेप में तइयार करीं । उहाँ के साधु लोग के रहन-सहन कइसन बा ?
2. एह कहानी से दस गो कहाउत आ दस गो मुहावरा चुन के लिखीं आ ओकर अर्थ लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'

[सारन जिला- छपरा शहर निवासी। छपरा के नबीगंज महल्ला में 1928 ई. के जनम भइल रहे आकाशवाणी, साहित्य, पत्रकारिता, स्कूल में अध्यापन के बाद लंगट सिंह महाविद्यालय मुजफ्फरपुर में भोजपुरी के पहिला व्याख्याता आ अध्यक्ष। सुकंठ गीतकार आ नाटककार। 'माटी के दीया घीव के बाती' नाटक आ 'जल के धारा में' गजल संग्रह प्रकाशित बा। 'सिंहनाद' एकांकी में 1857 में बाबू कुँवर सिंह के आखिरी लड़ाई जे दलउर में भइल रहे, ओकरे तस्वीर खींचल बा।]

सिंहनाद

पहला दृश्य

[जगदीशपुर के बड़का बंगला। बीरकेसरी बाबू कुँवर सिंह अलग एगो ऊँच स्थान पर बइठल बानीं। ई छोटहन दरबार में हाली-मोहाली लोग उनका के घेर के बइठल बा]

कुँवर सिंह- काहो अमर सिंह, कमिश्नर के पास पटना केकरा के भेजले रहऽ ......?

www.bhojpurisahityangan.com

अमर सिंह- कमिश्नर से भेंट करे हमनी के मुंशी गइल रहले-पूजन ।

कुंवर सिंह- पूजन सिंह । कमिश्नर टेलर के का फरमान बा हो ?

पूजन- सरकार ! ऊ सभ बात हमरा से कहे के मत कहीं । ऊ सभ फरमान ना ह सरकार- ऊ अगिनबान ह, जे करेजा के झोंकार दिही ।

कुँवर- (रोस में) का कहत बाड़ऽ पूजन ?

पूजन- ठीक कहत बानीं सरकार ! जवना रोब से ऊ सेखी बघारत रहे, ऊ सभ सुन के करेजा मचल के रह गइल । अपने के हुकुम ना रहे, ना त काँचे चबा घलतीं ओकरा के ।

कुँवर- हूँ । त ऊ सेखी बघारत रहे । बनरघुड़की मारत रहे ।

पूजन- जी सरकार ! टेलर कहलन कि बाबू साहेब से कह दिहऽ कि कम्पनी बहादुर के खिलाफत करे वालन के साथ मत दिहें । ना त..........(चुप हो जाताड़न)

अमर- चुप काहे हो गइलऽ पूजन ! कहऽ-सभ बात साफ-साफ कहऽ । भइआ तनी आपन दोस्त के बात सुन लेतन । दोस्त टेलर साहब के बात । हूँ......!

पूजन- का कहीं बबुआ अमर सिंह ! कहत रहे कि खिलाफत करे वाला केतना जमींदार लोगन-राजा लोगन के गरदन फाँसी के रस्सी में लटका दिहल गइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

कुँअर सिंह अगर अइसन करिहें त उनकरो आवाज गरदने में बंद कइ दिहल जाई ।

कुँवर- (खीस में जोर से) पू............ज..........न ! तूँ ई सभ सुनके चुप रह गइलऽ ? तोहरा त कमीना टेलर के खून चीभ जाये के चाहत रहे । ऊ हमरा के बूढ़ समझले बा । अस्सी बरिस के बूढ़ । हा-हा-हा ! बाकी ऊ नइखे समुझत कि बूढ़ राजपूत के तरुवार में केतना जोर बा, केतना ताकत बा ।

अमर- भइआ टेलर के ई मजाल ! हुकुम द । हुकुम द भइआ ! हमार तरुवार बहुते पिआसल बा । हम त तोहार दोस्ती के बात सुनके चुप बानीं, ओकर पहिलका फोटो देखके मन मरले बानीं । ना त आज हमरा घोड़ा के टाप 'आरे' में सुनाइत ।

कुँवर- (गंभीर हो के) दगाबाज ! निमकहराम फिरंगी ! मधुरी बोली बोल के आपन दोस्ती के जाल हमरा पर फेंकत रहे, अमर सिंह ! अब दोस्ती के काँच सूता टूट गइल । टेलर के दगाबाजी के पोल खुल गइल, अमर सिंह ! ढोल के पोल मालूम हो गइल । (नेपथ्य में सोर सुनाई परत बा -'सरकार रछेआ करीं । हमनी के मदद करीं, मालिक !')

कुँवर- हँए ! ई दुआर पर कइसन हल्ला बा ? अमर सिंह, देखऽ त, बहरा के चिचिआत बा ।

(अमर सिंह के प्रस्थान)

कुँवर- पूजन ! अब अंग्रेजन के दिन अदिन नजर आवत

www.bhojpurisahityangan.com

बा । कम्पनी के नेंव के ईंटा खसके चाहत बा ।

(अमर सिंह के प्रवेश)

अमर- भइआ ! बहरा दानापुर के विद्रोही लोग खाड़ बा । बड़ा बेहाल बा लोग ।

कुँवर- दानापुर के लोग आइल बा, विद्रोही लोग !....... बोलाव भीतरे बोलावऽ ओ सभे के ।

(पूजन के प्रस्थान)

(अमर सिंह बाहर आके विद्रोही लोग के बोलावत बाड़े । सभ आवत बा । एगो आदमी धड़ाम दे कुँअर सिंह के गोड़ पर गिर परत बा ।)

रामसनेही- अब त सरकार के गोड़ छान लेले बानीं । जब ले सरकार हमनी के बचन ना देब, हम अपने के गोड़ ना छोड़ब, ना छोड़ब ।

कुँवर- अरे ! ई का करत बाड़ रामसनेही ! उठ, आपन समाचार कह ।

रामसनेही- (उठ के) सरकार से बस एगो बचन लेवे के बा । ना त हमनी के रछेआ ना हो सकेला । गोरा पलटन हमनी के देंहिएँ ले नइखे कबारत, अब त बहिनो-बेटी के ईजत-लाज लूटे में दुसासन के नाक काट रहल बा ।

देवल- मालिक, हमनी के ऊपर अंगारा बरसावल जात बा । भरल-पूरल खेत खरिहान में लंकादहन हो रहल बा । सगरो गाँव-घर में सिआर के फेंकरल सुनाई परत बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

अमर- हे भगवान ! अइसन अतिआचार ! अइसन लट-मार ? अब ई ना देखल जाई ।

रामसनेही- ऐतने ले ना बबुआ ! जवार भर के नवछौंटिअन के छाँट-छाँट के बन्दूक दाग दिहल जात बा । आज जे लरिका माई के गोद में बा, काल्ह ठीक नइखे कि कब ऊ संगीन के नोखी पर टंगा जाई । सरकार, अब त अपनहीं के आसरा बा ।

देवल- मालिक ! अब नइखे सहात । बलुक ई अच्छा होई कि रउरे आपन तरुवार से हमनी के गरदन काट घालीं । हमनी के चैन से जान निकल जाई । बाकी फिरंगिअन के हाथ मार खाइल-ई हमनी से ना सहाई । अपने हमनी के उबार लिहीं मालिक ! उबार लिहीं ।

कुँवर- बस करऽ देवल ! रोअल बंद कर । रोवेला ऊ, जे कमजोर होला । हम तोहरा लोगिन के आँखि में आग देखे के चाहत बानी-आग ! अमर सिंह ! आजु ले हमरा आँखि पर पट्टी बन्हाइल रहे । अब ऊ पट्टी खुल गइल । दुसमन से दोस्ती कके हम बड़ा गलती कइलीं । बड़ा गलती कइलीं एतना समय के नुकसान कइके । एसे का ! अब समय आ गइल बा । जगा द भोजपुर के । बिटोर द गोहार । कुँअर सिंह अब जाग उठल बा । अब ओकर तरुआर मेआन में ना सुतल रही । फिरंगिअन के गरदने ले नइखे काटे के-तोप के नालो के काटे के

www.bhojpurisahityangan.com

बा । टेलर अइसन दगाबाजन के देखा द भोजपुरिआ पानी के- भोजपुर के जवानी के ।

दोसर दृश्य

(अंग्रेजी पलटन के एगो खेमा । डगलस बेचैन होके घूमत बा । नेपथ्य से बाबू कुँअर सिंह के वीर जवानन के सिंहनाद सुनाई परत बा । जवानन के बोली

'रुद्र देवता जै जै काली ।'

'हर हर बम बम ।'

'बीर कुँवर सिंह जिन्दाबाद ।'

ई सभ नारा के सुन के डगलस के लिलार पर चिन्ता के रेखा उभर आवत बा आउर ऊ तेजी के साथ टहले लागत बा ।

डगलस- कुँअर सिंह एक पेटी लैन्ड लौर्ड होकर सरकार को गेराना माँगटा । अइसा कभी नहीं सकटा । हमरा टोप पल्टन शब को भूँज डेगा । कम्पनी बहादुर से टकराना और जीटना आसान नहीं हाय । (जोर जोर से चुरूट फूँके लागत बा) अरे कोई हाय ? सिपाये । सिपाये ।

सिपाही- (सैलूट करता) हाजिर बानीं सर !

डगलस- सर का बच्चा ! जाव, जल्दी मिलमैन साहब को खबर करो । क्या देखटा है ? डैम सुअर, जल्दी जाव । क्विक् !

www.bhojpurisahityangan.com

(सिपाही चल जाता ।)

डगलस- मिलमैन ने हमारी ताकत को एस्पोाइल कर दिया । कावर्ड ! डरपोक कहीं का ।

मिलमैन- (प्रवेश कके) हलो मिस्टर डगलस ! क्या मुझको बुलाया ?

डगलस- हलो । बट यू आर ए कावर्ड ! तुमसे तो अच्छा भोजपुर का जनाना लोग है, जो हम इंगलिस पीपुल से लड़ने को तैयार हाय ।

मिलमैन- एक्सक्यूज मी सर ! वह तो एक धोखा था, जो कुँअर सिंह ने हम लोग को दिया । जिससे हमें बुलोक कार्ट-आई मीन बैलगाड़ी से भागना पड़ा ।

डगलस- और इस तरह टुमने हमारा लोग का झंडा नीचा कर दिया । वो फुलिस आदमी ! हम टुमको नहीं देखना माँगटा । यू गेट आउट । (मिलमैन सर झुका के चल जाता ।)

आर्थर- (भीतर आके) गुड इभनिंग सर ! हीयर इज गुड न्यूज फार यू । बाड़ी अच्छा खबर लाया हूँ । हीयर मी । (आर्थर डगलस से कान में कुछ कहत बा ।)

डगलस- (ठहाका मार के, हँस के) सचमुच अच्छी खबर है आर्थर ! क्या कुँअर सिंह का मैनेजर हरेकिसन हम लोगों का जासूस बनेगा ? तब तो कुँअर सिंह को बरबाड हम कर डेगा-हमारा फउज उस बूढ़े को कुचल डेगा ।

आर्थर- आफ कोर्स । हरेकिसन हमारा मदद करेगा । बट

www.bhojpurisahityangan.com

थोड़ा ओ लालची हाय । ग्रीडी-आईमीन ग्रीडी पीपुल ।

डगलस- हा-हा-हा ! तो क्या हुआ जगदीशपुर उसे देबेगा । कुत्ते के सामने हड्डी फेंक देगा । अच्छा, हम उससे मुलाकात करना चाहता ।

आथर- ही इज हीयर, हम बुलाता हाय । (नेपथ्य में झाँक के) बहादुर हरेकिसन सिंह इदर आओ, साहेब टुमे देखना माँगटा ।

(हरेकृष्णा सिंह प्रवेश करत बाड़न ।)

कृष्ण सिंह- सलाम हजूर के ।

डगलस- वो ! तो टुम हरेकिसन सिंह हाय, कुँअर सिंह का मैनेजर ?

हरे कृष्ण- हँ सरकार, मनेजर ना, कुँअर सिंह के दुश्मन हईं, दुश्मन । ऊ सरकार बहादुर से गद्दारी कइले बाड़न ।

डगलस- ठीक कहता है हरेकिसन ! वो गद्दार नहीं, गद्दार ऑफ-इन्डिया हाय ।

आर्थर- कुँअर सिंह समझटा हाय कि अँग्रेजों के फउज को कुचल डेगा । ऐसा अब कभी नहीं होगा । अब टो हमको हरेकिसन जैसा बदादुर जवान मिल गया हाय ।

हरेकृष्ण सिंह- हँ सरकार, कम्पनी बहादुर के जहाँ पसेना गिरी उहाँ हरेकिसुन के खून गिरी, बाकी....

डगलस- घबराव नहीं, घबराव नहीं हरेकिशन ! टुमको जगदीशपुर मिल जायगा । कुँअर सिंह के लाश पर

www.bhojpurisahityangan.com

तुम्हारा किला खड़ा होगा ।

आर्थर- बिलकुल ठीक । तुम राजा बनेगा हरेकिशन ।

डगलस- मिस्टर आर्थर ! फौज को तैयार करो, कुँअर सिंह के साथ हमलोगों का आखिरी मुकाबला होगा । हम उसको जीते बिना आराम नहीं करेगा ।

आर्थर- आई ऐम रेडी सर, चलो हरेकिशन !

(हरेकिसन आउर आर्थर के प्रस्थान)

डगलस- गाड सेभ दी किंग । कहो कुँअर सिंह ! अब टुम नहीं बचेगा । हमारा कम्पनी तुमको बरबाद करेगा । हमारे ताकत से मत टकराव । हमारा सूरज दुनिया में कहीं नहीं डूबता । हम तुम्हें डुबा देगा । बरबाद करेगा । हा.....हा......हा....हा । (डगलस जोर-जोर से हँसत बा आ परदा गिरत बा ।)

तीसरका दृश्य

[एगो पड़ाव-जहवाँ बाबू कुँअर सिंह घवाहिल होके बइठल बाड़े । एगो बाँहि जे में गोरन के गोली लागल रहे, ऊ तरुवार से काटि के गंगा मइआ के दे दिआइल । ऊ घ़ाव बाबू साहेब के मन आ सरीर में बड़ले बा । उठके टहरत बाड़े ।)

कुँवर- बाँह में गोली मारके, समझ लेल कि कुँअर के खेत कइ दिहलीं । बाकि कुँअर अभी ले जिअते बा । कुँअर सिंह जिअते रहिहें, जनम-जनम ले ज़िअते रहिहें । जब ले गोरन के भोजपुर के धरती से खदेर ना दीहें-कुँअर सिंह चैन से ना सुतिहें । भोजपुरिआ

www.bhojpurisahityangan.com

जवान तेगा ना उठावे-बाकि जब एक बेरा तरुवार हाथ के मुट्ठी में आ जाई-बिजुरी लेखा लपलपात रही-दुसमन के गरदन के छप-छप काटत रही । चुप ना बइठी । (चुप हो जात बाड़े आ फेरु अवाज बदल के बोलत बाड़े) ऐ गंगा माई ! आपन भोजपुर के रछेया खातिर तोहार जल लेके हम किरिआ खइले रहीं । एहि से नूँ गोरन के गोली से अपबितर भइल बाँह तोहरा के काटि के दे दिहलीं । बाकि आजुले हम ऊ किरिआ भुलाइल नइखीं । महतारी के किरिआ केहू भुलाला । कहिओ ना भुलाए । त हम चुपचाप इहवाँ काहे बइठल बानीं । जुझार सिंह ! अरे, ए जुझार सिंह !!

जूझार- (प्रवेश कइके) का हुकुम बा अपने के ?

कुंवर- हम दुलउर जाये के चाहत बानीं । तू जलदी से तइआरी कर....। ना जाने, उहवाँ का होत होई ।

जुझार- ई कइसे होई सरकार ! बबुआ अमर सिंह के किरिआ धरावल अपने असहीं भूला देहब ।

कुंवर- ओह ! हो । अमर सिंह त हमारा गोड़ में बेड़ी डाल देले बाड़न । लड़ाई के मैदान में छोट भाई लड़ी आ बड़ भाई इहवें लुकाइल रही ?

सैनिक- जय हो बाबू साहब के ! दुलउर में लड़ाई जोर पकड़ लिहले बा । हरेकिसन सिंह अंग्रेजन के ओर से बाड़े ।

www.bhojpurisahityangan.com

(सैनिक समाचार दे के चल जात बा ।)

कुँवर- हरेकिसुन ! निमकहराम ! जे पत्तल में खइलस ओही में छेद कर रहल बा । जुझार सिंह, ई लड़ाई में सभके सबक सिखावे के बा । डगलस, आर्थर, हरेकिसुन सभके । ई बिभीसन आ जयचन्द के औलाद के मूड़ी-काट के गेंदा जइसन लतिआवे के बा । अकेले अमर सिंह का करिहें ? ना-ना-ना हमरा जाये के चहबे करी । हम जइबे करब । दुलउर के लड़ाई हमार अखिरी लड़ाई ह । जीत, चाहे हार । जुझार सिंह, जलदी कर भाई, हाथी पर हउदा कसवा द । ओपर हमार तकिआ रखवा द । जा देर मत कर ।

(जूझार सिंह जात बाड़न)

कुँवर- आज भारत के कोना-कोना में जवालामुखी के लावा फूट परल बा । झाँसी के महारानी, पेशवा नाना जइसन लोग जनमभूमि खातिर जान दे देवेला तइआर बा । मसाल जल रहल बा । ओह मसाल में हजारन देस भाइअन के खून तेल लेखा जर रहल बा । ई कइसे होई कि ऊ मसाल भोजपुर में बुता जाई ! ऊ जरत रही-जुग-जुग ले जरत रही । कुँअर सिंह के देंह के गाढ़ खून से ऊ मसाल हरदम जरत रही । अमर सिंह......अमर सिंहें ! हम आवते बानीं हम आवते बानीं भइओ । (प्रस्थान करके तइयार बाड़ें कि घायल अमर सिंह आउर सिपाहिअन के

www.bhojpurisahityangan.com

साथे आवत बाड़े ।)

अमर- (प्रवेश कइके) तेगा बहादुर कुँअर सिंह के जय ! भोजपुर के जय !! भारत माता के जय!!! भइआ-भइआ ! तोहरा आसीरबाद से दुलउर के लड़ाई हमनी जीत गइलीं । अब तोहरा कतहूँ जाये के जरूरत नइखे । कबहूँ ना ।

कुँवर- (खुशी में जोर से) अमर सिंह ! साबस बहादुर !! आज तें भोजपुरे के ना, समूचे देस के मुँह के लाली राख लिहले भइयवो ! अब तनी हमरा करेजा से लाग जो ।

(अमर सिंह के अँकवारी में लेत बाड़न ।)

आज-आज हमार करेजा जुड़ा गइल । अइसन मालुम होत बा कि हम धरती पर ना सरग में बानीं । आ तू अमर सिंह एगो सरग के देवता लेखा लागत बाड़ऽ । आ, गेंदा सिंह कहवाँ बाड़े ? ओकर तरुवार के पानी त आउर जोर पकड़ले होई । का रे, साँच बात बा नू ।

अमर- गेंदा सिंह.... गेंदा सिंह लड़ाई में वीर गति पवले भइआ ।

कुँवर- (फीका हँसी हँस के) गेंदा सिंह ! तू हमरा से पहिले बाजी मार लिहल । हमनीं के त साथे-साथे चले के किरिआ खइले रहलीं । कवनो बात ना.... कवनो बात ना !! एगो गेंदा सिंह ना, हजारों गेंदा सिंह के भोजपुर देवेला तइआर बा । अमर सिंह,

www.bhojpurisahityangan.com

चारो ओर खबर भेज द जीत के । खुशी में खाली जगदीशेपुर में ना-सगरो दिवाली मनावल जाई । सरग में गइल हमार हजारन वीर बहादुरन के नाम पर गाँव-गाँव, गली-गली में आज रोसनी होखे के चाहीं । आज के दीवाली इतिहास खातिर अजबे दिवाली होई । लोग आजु से दीआ में तेल जरावत रहे । अब एह दिवाली में बहादुर भाइअन के खून जरत रही । लाल-लाल लहू के लाली से भारत के आजादी के राह....ओह राह पर आवेवाला जमाना के लाखन-करोड़न गेंदा सिंह, कुँअर सिंह, अमर सिंह चलत रहिहें । जब ले एह खून से सींचल झंडा एह धरती पर ना गाड़ दिहल जाई- अमर सिंह, हम आज बहुते खुश बानीं । भोजपुर आपन पानी देखा दिहलस । आज हमनी आपन तीनों महतारी के लाज बचा लिहलीं । जय भोजपुर ! जय भारत !!

(अमर सिंह के साथ सभे नारा लगावत बा ।)

(परदा धीरे-धीरे गिरत बा ।)

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ पश्न

1. 'सिंहनाद' कवना विधा के रचना ह ?

   (क) कहानी (ख) एकांकी (ग) काव्य (घ) कथा

2. 'सिंहनाद' के रचनाकार के नाँव बताईं ।

   (क) सतीश (ख) विवेकी राय

   (ग) रामनाथ पाण्डेय (घ) एमें से केहू ना

3. 'सिंहनाद' के मुख्य पात्र के बा ?

   (क) कुँवर सिंह (ख) पूजन (ग) रामसनेही (घ) देवल

4. कुँवर सिंह के भाई के का नाँव रहे ?

   (क) कुँवर सिंह (ख) अमर सिंह (ग) देवल (घ) पूजन

5. 'सिंहनाद' में कब के वर्णन बा ?

   (क) 1857 (ख) 1947

   (ग) 1957 (घ) 1885

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सिंहनाद' में के के अंग्रेज पात्र बा ?
2. अमर सिंह के परिचय दीं ?
3. 'सिंहनाद' के कथा संक्षेप में लिखीं ।
4. पटना के कमीशनर टेलर के बारे में लिखीं ।
5. हरेकृष्ण सिंह काहे कुँवर सिंह के संगे गद्दारी कइले ?

www.bhojpurisahityangan.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'सिंहनाद' के आधार पर कुँवर सिंह के चरित्र चित्रण करीं ।
2. भोजपुरी एकांकी के उद्‌भव आ विकास पर प्रकाश डालीं ।

परियोजना कार्य

1. अपना शिक्षक आ संघतियन के संगे 'सिंहनाद' के अभिनय करीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. विवेकी राय

[गाजीपुर, उ. प्र. के कॉलेज में हिन्दी के अध्यापन आ हिन्दी-भोजपुरी में लेखन । ललित-निबंध, कहानी, उपन्यास, समीक्षा, फीचर आदि के क्षेत्र में बड़ नाम । पचासन पुस्तक प्रकाशित । भोजपुरी में 'ओफइतीं' आ 'गंगा जमुना सरस्वती' कहानी संग्रह, 'अम्गलहारी' उपन्यास, 'राम झरोखा बइठ के' फीचर आ 'के कहल चुनरी रङाल' (ललित निबन्ध), 'जनता के पोखरा' (कविता) 'कथुली गाँव', 'भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहिचान' (समीक्षा) सहित कई गो किताब चर्चित । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के विलसपुर अधिवेशन के अध्यक्ष ।]

खेल

एगो खेल देखि रहल बानी । भरि टोला के छोटी-छटी लइकी-गुदिआ, मुअली, बचमुनिया, सरली, सन्तिआ, सोमखिआ आ अउरी ना जाने कवन-कवन दू-दू के गोल में । अगल-बगल उलटा ठाढ़ होके, एगो दोसरकी के गरेउ हाथ डलले, कले-कने सभ घूमत बाड़ी सँ आ अपने में सवाल-जवाब करत बाड़ी सँ

www.bhojpurisahityangan.com

‘भात बनवलू हा ?

‘हँ ।

‘दालि बनवलू हा ?

‘हँ ।

‘भइआ के खिअवलू हा ?

‘हँ ।

‘हमरा के रखले बाडू ?

‘ना ।

‘काहे नइखू रखले ?

‘बिलरिआ खा घललसि हा ।’

बस अब का ? खेल एकदम तेज हो जात बा । कले-कले घूमत जोड़ी जोर-जोर से गावे लागत बाड़ी सँ, चहकत बाड़ी सँ, हाला करत बाड़ी सँ, नाटक नाधि देत बाड़ी सँ आ कहत जात बाड़ी सँ-

‘आवेली बिलारी दाई, मुँगरी चलाईला,
आवेली बिलारी दाई, मुँगरी.........
आई आई आई रे,
आई आई आई रे.............

कुछ लइकी घुमरी खा के गिर जात बाड़ी सँ । जवन जमीन पर गिर जात बिआ, ऊ दोसरकी पर धूरि उठा-उठा के फेंकत बिआ । छन भर ले धूरि के लड़ाई होति बा । एकरा बाद नया खेल सुरू हो जात बा । बिना कुछ कहले-सुनले चुपचाप सुरू हो जात बा । अब ई खेल कुछ दोसरा रंग-ढंग के बा । एह में कुछ बनल जात बा । का बनल बा ? अब देखीं । ई घेरवना

www.bhojpurisahityangan.com

बनि रहल बा । बीचे डहरि (राह) बनि रहल बा । आदिमी, चउआ-चाँगर (चिड़आ-चाँगुर) । सायकिल आ बैलगाड़ी ओही डहरि से आवत-जात बा आ एने सगरे डहरि झारि-बहारि के, घेरि-घेरि के, छोट-छोट घेरवना बनि गइल । फेरू ई घेरवना का अइसन-तइसन बा? दलानि बनल बा, कोठरी बनलि बाड़ी सँ । कोठा उरेहल गइल बा । एक जगह धूरि के ढेरी बना के ओपर नीमि के पतई सहित डिहुँगी गाड़लि बा आ फेंड़ बनावल गइल बा । फेंड़ के सोझा धुरिए के नाद-चरनि बनल बा । ओकरा आगा बर के पतई के बैल-गाइ, झुंडि-के-झुंडि मवेसी ।

एगो घेरवना में गुदिआ बइठल बिआ । ऊ सहुआइनि बनल बिआ । साफ आ चिकन धूरि के छोट-छोट ढेरी धइल बाड़ी सँ । एह में कवनो चाउर के ढेरी ह, कवनो दालि के । ओही में गुर-घीव सभ बा । बाँस के सुपली तरजुई के काम करत बा । ईंटा के छोट-छोट टुकड़ा बाट-बटखरा । एगो करिआ झाँवा के टुकड़ा आ झिंकटा रूपया-पइसा के सिक्का ह । रद्दी कागज के टुकड़ा नोट भा लोटि । खेल जमल बा । दुनिया भर के खेल ।

सरली एक रूपया के लोटि बढ़ा के कहत बिआ -'ए सहुआइनि जी, तमाकू रखले बाड़ू ?

'ले जा बहिनी, टटके बाजार से आइल हा ।' जबाव मिलत बा ।

'का भाव के बा ?

'टका के तीन छटाँक ।

'जोखि द, दू-चार टका के ।

सूखल माँटी के छोट-छोट तीन-चार गो ढेली तमाकू के

www.bhojpurisahityangan.com

(भाँड़ि) । गाँव का जिनिगी से एकरा के हटावल ना जा सके । ओहिजा का लोगन खातिर ई बहुते उपयोगी चीज ह । भाँड़ा के उपयोगिता, ओकर बड़ाई-छोटाई, बेवहार आ काम देखि के ओकर तरह-तरह के नाँव धइल गइल बा । ई नाँव बहुते विचित्र बाकी मतलब के होला । सभ से बड़ भाँड़ा के छोड़ (छोड़ि) कहल जाला । ओह से छोट चेरुआ आ चेरुई कहाला । ओकरा बाद कूँड़ा भा कुंडा होला तवना पर से नादा, नादी, घइला, घइली, ढिल्ली, ढिल्ली, मेटा, मेटी, हाँड़ी, पतुकी, कहँतरी, परई, चुक्का, ढुइयाँ, कुल्हड़ (चुक्कड़, भरुका, सबुरना, भा रमकोरवा) कहाला । भोजपुरी भाषी लोग कीहाँ दीये ना होला दियरिओ होले ।

एही तरे गाँव के संपत्ति 'गोधन' के आधार गाय खातिर भी कई गो सार्थक शब्द के प्रचलन बा । गाय के मादा बच्चा के बाछी, बछिया आ जवान बछिया के 'कलोर' कहल जाला जेकरा बच्चा ना भइल होखे । पहिला बिआन के गाय 'पइलौंठी' भा 'पहिलौंठी' चाहे 'अँकरे' कहाले । लगले के बिआइल गाय 'धेनु' कहाले आ बिअइला का एक बरिस बाद ले दूध देनिहार गाय 'बकेन' । जवन लागे ना, बिसूकि (बिसूखि) जाले ओ के 'नाठा' कहल जाला । दूध देनिहार गाय भा भईंसि कहाले आ जेही दूहल चाहे ओकरे हाथे लागेवाली गाय 'लगनमान', 'साउ' भा 'साव' (संस्कृत-साधु) कहाले । दिन में एके बेर लागेवाली गाय के 'एकवर' आ डेढ़ दिन पर लागेवाली के 'डेढ़िया' कहल जाला । नीक, नीमन आ सूध आ गऊ गाय 'सुरही' भा कपिला त छनकनी आ बगदही गाय 'करकटही' आ 'हरही' कहाले । 'जइसन कँकरी तइसन बीया, जइसन माई तइसन धीया' के

www.bhojpurisahityangan.com

बिसवासी भोजपुरिहा लोग परतिआ लेले हउअन जे 'सुरही का कोखी हरही ना होखे ।'

भोजपुरी शब्द बड़ा मजिगर, जमाऊँ, सोहटाऊँ आ अर्थगर्भित होलन सन । एहिजा 'पानी' आ 'जल' दूनो शब्द पर्यायवाची भइलो पर आपन-आपन अलग महत्त्व राखेलन । कबो-कबो 'पानी' का जगहा जल के बेवहार बे तमलब आ अनेरिआ हो जाई । 'पानी उतरल मनई, मोती आ तलवार कवनो काम के ना रहि जा ।' 'भल मानुस लाजन पानी-पानी हो जालन ।' अब एह वाक्यन में जे केहू 'पानी' का जगहा एकर समानार्थी 'जल' के बेवहार करी त ओकर कवनो अरथ ना निकली, जल-जल' के अनरथ जहाँ ले हो जा । खाली मोहाबिरे में ई शब्द सटीक नइखन अइसहूँ एह शब्दन के आपन-आपन महातम बा । नदी पानी' से भरल बाड़ी सन । बाकी गंगाजी के पानी 'पानी' ना ह, ऊ त 'जल' ह । 'जल' भोजपुरी में पवित्रता के बोध करावेला । केहू भुलाइओ के 'गंगा-जल' के 'गंगा-पानी' ना कहे । खेत में पानी पटावल जाला, कंठ के जुड़ाँव खातिर पानी पीअल जाला । 'पनपिआड़' कइल जाला 'जल-पिआड़' ना । ओसहीं 'जलपान' आ 'जलखई' के 'पानी पान' आ 'पनखई' ना कहा । हिन्दु लोग का हाथे देवता पर 'जल' चढ़ावल' जाला । बिना जल तक गरहले निरजला एकादसी बरत कइल जाला । केहू ई भलहीं कहो जे हम भोरहीं से निरजल' बानी बाकी ई कहाइए ना सके जे हम 'बेपानी' बानी । लोक संस्कृति के रइछा एह शब्दन का हाथे आजु ले होत आइल बा ।

भोजपुरी में अधिकतर जइसने भाव, ओइसने शब्द भेंटाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

रूप में मिलत बा । सरली लोटि थम्हा के कहत बिआ- -'ए सहुआइनि, ठीक-ठाक पइसा फेरिह । तूँ बड़ा ठगिनी हऊ ।'

'अरे ना बाची, साहु-महाजन अइसे करी त ओकर कइसे रहतब होई ? कइसे निकसार होई ?' -गुदिआ कहत बिआ आ रेजकी के जगहा प कुछ झिकड़ा थम्हा देत बिआ ।

ओही घरी गउरी आवत बिआ । ओकरा हाथ में रहरि के एगो छिकुनी बा । ई लाठी ह । ओह में एक मुट्ठी दूबि बान्हि के लटकावल बा । ऊ सरली के घर के 'मरद' हउवे । खेत में से घासि गरिह के लवटल बा । सरली एक बित्ता के लकड़ी पर माँटी के ढेला धइ के दे देत बिआ । ई हुक्का चढ़ल बा । ओही घरी बगल में हाला होत बा -'चोर आइल......... चोर आइल.....।'

बचमुनिआँ एक ओरि घेरि के बहुत सुघर घर रचले बिआ । एकरा में धूरि के घेरा बहुत चिकन-चाकन बा । ई सोनार बनल बिआ । एकरा दोकानि में बेसकीमती गहना भरल बा । अब इहँवा एह गहनन के पहचानँ चूरिन के टूटल टुकड़ा, फूल, रंगीन कपड़ा के काटन, सीसा के टुकड़ा, काँच के गोली आ फोटो के रंगीन टुकड़ा में करावल गइल बा । सोमरिआ चोर ह । ई सेन्हि मरले बिआ । काहेकि बचमुनिआँ के घेरवना एक ओरि टूट गइल बा । सोमरिआ के हाथ में तीन-चार गो चूरी के फूटन बा । ऊ रंगले हाथ गिरफ्तार हो गइलि ।

'ए मुखिआ जी, सिपाही-दरोगा के फौरन बोलावे के चाहीं । जल्दी थाना पर खबर दीहीं ।' -बचमुनिआँ चिचिआत बिआ ।

मुअली मुखिआ ह । उपरे-उपरे ओकर चनचनात बोली

www.bhojpurisahityangan.com

सुनात बा, कि 'चल सिपाही जी चल-पुलिस-पिआदा जी.... चहुँप दरोगा जी, चोर गिरफ्तार हो गइल बा ।

तीन-चार गो लइकी पगरी बन्हले आ हाथ में अगहनिआ के सूखल ढाठा लिहले चहुँपि जात बाड़ी सँ । एगो के हाथ में बेंत के छड़ी बा ।

सभ सिपाही जी लोग हवन । सन्तिआ थानेदार ह । ओकर कपार के झबर-झबर झोंटा पगरी के नीचे लटकल बा । कुछ तुतला-तुतला के हबर-हबर बोलत बिआ- 'कहवाँ चोल बा ले..... कहवाँ चोल बा ? ले तलो देल में धुका दो । ले आउ, काढ़ लुपइआ- गिनू, घनाघन्न ।' सन्तिआ अउर देत बिआ ।

टुन्-टुन्-टुन्-टुन् ! सन्तिआ के भइआ ओही रास्ता से सायकिल खड़खड़ावत आवत लउकत बाड़न । छन भर खातिर कुल्हि खेल बुता जात बा । कुल्हि लइकी घेरवना छोड़ि-छोड़ि के कुछ सहमल-थथमल निअर एक ओरि चुपचाप ठाड़ हो जात बाड़ी सँ । पैदल जाएवाला के त बँचा-बँचा के जाए के कहत बाड़ी सँ, बाकि अब सायकिलवाला के का कह सँ ? बीचे घेरवना से सायकिल के जाए के बा । सभका अपना-अपना घेरवना के फिकिर बा । देखीं, भगवानजी केकर-केकर घेरवना बिगारि देत बाड़न आ केकर-केकर बचा देत बाड़न । लइकिन के गोल, साँस रोकि के, देखत खड़ा बा । नजर रास्ता प लागल बा । सायकिल सर्र से निकलि जात बा । जा, एगो ई आफति त टरलि । ऊ कुल्हि हाला मचावत टूटि परत बाड़ी सँ । घेरवना फेर दखल भइलन सँ । टूटल घेरा पर धूरि चढ़ा के सँवारल गइल, बाकि खेल के सुर अब बदलि गइल रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

'आरे सन्तिया, आरे सन्तिआ' -आगा सायकिल ठाढ़ कइके ओकर भइया, चिचिआत बाड़न- 'कबले खेलबे रे, साँझि भइल, चल घरे ।'

बाकि के सुनत बा ?

एह बीचे ना जाने का भइल कि सन्तिआ अचानक दरोगा से 'बहू' बनि गइल । अब ऊ अपना सासु के कपार पर गुलरोदन के तेल मले में लागि गइलि । पाँच बरिस के सन्तिआ पतोहि आ तीन बरिस के उर्मिलिया सासु । पतोहू के गोदी में सासुजी बइठल बाड़ी । पतोहू कहत बिआ -'सासुजी के झोंटा खाउर-खाउर ! देखेगा सो का कहेगा ? अरे लऊँड़िया जल्दी से आउ, सुच्चा चमेली के तेल लाउ ।'

गुदिआ बाँस के सुपली में एक मुट्ठी धूरि धइ के ले आवत बिआ । धुरिए तेल ह । कतना अहगरि के थोरे-थोरे तेल सासुजी के चानी पर जँतात बा, मिलावल जात बा । कपार दबावल जात बा । केकरा फिकिर बा कि उर्मिलिआ के फराक अबहीं टटके धोवावल ह । उहो कइसे फूलि के बइठल बिआ आ कपार पर धूरि जँतवावत खूब मनगर बिआ । ओकरा आँखि में अइसन चमक आ गइल बा, जइसे सचहूँ ऊ ऊँच सासु-पद पा गइल बिआ ! अब का कहल जाय ? ओह गुड़िया निअर लइकी के भरि देहे धूरि भरि जात बा । ओह धूरि में ऊ अउरी टटका फूल-निअन खिलि जात बिआ । ओही घरी एक ओर से हाला उठत बा, -'चिट्ठी.....चिट्ठी ।' एगो लकड़ी के मूसर बना के धूरि के चाउर छाँटत बचमुनिआँ आवाज सुनि के खड़ा हो जात बिआ । बाँस के सुपली में माँटी के ढेला फटकत, मुसकइल के

www.bhojpurisahityangan.com

अमनिआ बना के एक ओर उझिलत उठि के दू डेग आगे बढ़ि जात बिआ । ईंटा के टुकड़ा के चूल्हि बना के आ ओपर खपड़ा के तावा धइ के पीपर के पतई के रोटी सेंकत, उलटत-पलटत, लवना आगा सरकावत सोमरिआ बइठले-बइठल बोलत बिआ -'हमरो चिट्ठी तनि ले लीह, बहिनी ! तावा पर रोटी डलले बानीं । जरि जाई ।'

डकमुनसी 'गउरी' आम के सूखल पतई के चिट्ठी दनादन बाँटि रहल बिआ ....'हईं तोर मामा भेजले बाड़न ।.... हईं तोर फूफा भेजले बाड़न- कि बचवा के मालूम कि चखइहन ओहिजा, अँचइहन इहवें ।.... हई बम्मई से आइल बा । .... हई दिल्ली के तार ह ।'

'तीन तिलाक । हमार चिट्ठी केहू मति बाँची ।' -पीपर के पतई के रोटी लउकी के पतई के थरिआ में परोसति सोमरिआ किरिआ धरावत बिआ ।

'आय हाय ! चीटो के अतना गुमान ! बाँड़ी-डूँड़ी के चीठी भेजत बा ?' -मुअली हाथ चमका के कहत बिआ ।

'बाँड़ी रे ।' -सोमरिआ झनकि के खड़ा हो जात बिआ -'तोर सात पुहुत बाँड़ा-डूँड़ा रे ! घाव लवनी !'

मुअली के गोल में गउरी, सन्तिआ, सरली, बचमुनिआ । सोमरिआ के गोल में अकेले गुदिआ । झगरा जमि जात बा । खेल खतम ।

'अइहें हमरा घर के ओर !' .....'तें अइहें नदी तीरे !' ....चलिहे बगइचा में !'

पता ना सुरूज नारायन कब बूड़ि गइलन । साँझि के

www.bhojpurisahityangan.com

पाँखि फइले लागल । चिरई चहचहा के चुपाए लगली सँ । सोनहुला अँजोर पर अन्हार के पानी चढ़े लागल ।

अब हम सून परि गइल एह घेरवना के देखि रहल बानी । बनावेवाला कतना नेह से बनावल, भोगल, खेलल, फेरू छोड़ि के चलि गइल । सुनसान डहर पर सुनसान घेरवना ! मगर खेल के इहे अन्त ना ह । आगे का भइल ?

रामदास भड़ाभूँजा बबुर के एगो बड़हन झाँगी जमीन पर सोहरावत-ठिरिरिआवत आवत बा । ऊ अन्हाधुन आ रहल बा । घेरवना के छाती पर से झाँगी सरसरात निकलि जात बा । एकदम साफ ! कुल्हि पोंछा गइल । ना कतहीं घर, ना घेरवना ! खेल के कँवनो निसानी ना बाँचल । बाँचि गइल धरती के धूरि, माँटी ! बाँचि गइल एगो डहरि आ ओह डहरि में आँखि गिड़ोरि के टुकुर-टुकुर ताकत बानीं । अतना मनसायन ! छन-भर में ई का हो गइल हो ? कहाँ बिला गइल ?

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. खेल के रचनाकार के नाँव बताईं ?
2. 'खेल' कइसन कहानी बा ? एह में दिहल कवनो एगो खेल के नाँव लिखीं ।
3. डॉ. विवेकी राय के जन्म कवना जिला में भइल ?

   (क) सीवान   (ख) बलिया

   (ग) गोरखपुर   (घ) गाजीपुर

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. घेरवना में बइठल गुदिआ सहुआइन बनल बिआ । ओकरा अभिनय पर आपन विचार दीं ।
2. 'चोर आइल.....चोर आइल' के हल्ला काहे होत बा ? एह में आइल पुलिस के चरित्र का समय का मुताबिक ठीक बा ?
3. सन्तिआ अचानक दरोगा से 'बहू' बनि के का करत बिआ ?
4. डकमुनसी बनल गउरी कइसे चिट्ठी बाँटत बिआ ?
5. रामदास भँड़भूजा कइसे घेरवना मेटा देत बा ?
6. 'खेल' कहानी का जरिए कथाकार का बतावे के चाहत बाड़े ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'खेल' कहानी में बालमनोविज्ञान के कवना रूप में उरेहल बा ।
2. लड़िकाईं में लड़िका-लइकी स अपना आस-पास में होत घटनन के अपना खेल में उतारेली स । एह में आइल कवनो एगो खेल के वर्णन करीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

3. 'खेल के कवनो निसानी ना बाँचल । बाँचि गइल धरती के धूरि-माटी।'
ई कह के कहानीकार कवना बात कावर इशारा कर रहल बा ?

परियोजना कार्य

1. अपना लड़िकाईं में खेलल कवनो दूगो खेल के वर्णन करीं । (जइसे-
अँखमुदउवल, दोल्हापाती, चोर-सिपाही) ।

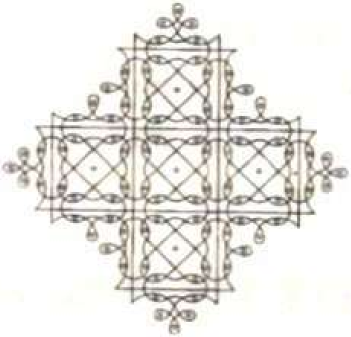

www.bhojpurisahityangan.com

श्रीमती उमा कुमारी

[श्रीमती उमा कुमारी के जनम सीवान जिला के भिट्ठी गाँव में भइल । छात्रे जीवन में इहाँ के कविता छप के चर्चित भइली सन । बाद में इहाँ के भोजपुरी के जरूरत देख के आलोचना कावर मूड़नी । इहाँ के लिखल कविता, समीक्षा भोजपुरी, हिंदी के कईएकगो पत्र-पत्रिकन में छप चुकल बा । श्रीमती उमा कुमारी के लेखन में नारी विमर्श के संगे-संगे सदियन से सतावल वर्ग के दुःख-दरद लउकेला ।

इहाँ के लेखकीय अवदान के देखत अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना पाण्डेय योगेन्द्र नारायण निबंध पुरस्कार से पुरस्कृत कइलस । बाबू जगजीवन राम जी के जीवनी से पता चलता कि मेहनत के बले आदमी ऊँच-से-ऊँच पद पर पहुँच सकेला ।]

देश के महान सपूत बाबू जगजीवन राम

आधुनिक भारत के इतिहास में बाबू जगजीवन राम के नाँव कबो भुलावल नइखे जा सकत । एगो दलित परिवार में जन्म लेके उहाँ के अपना कर्त्तव्य, लगन आ दूरदृष्टि के बल पर देश के उप-प्रधानमंत्री जइसन उच्च पद पर पहुँचलीं आ पूरा समाज से

www.bhojpurisahityangan.com

आपन लोहा मनववलीं । उहाँ के पूरा जीवन प्रेरणा से भरल बा ।

उहाँ के जन्म 5 अप्रैल सन् 1908 ई. के बिहार के सासाराम जिला का चँदवा गाँव में भइल रहे । उहाँ के माई के नाँव श्रीमती बसन्ती देवी आ बाबूजी के नाँव श्री शोभीरामजी रहे । उहाँ के परिवार पर शिवनारायणी सम्प्रदाय के प्रभाव रहे । जगजीवन बाबू के निर्माण में संत शिवनारायण के विचारन के बड़हन हाथ रहे ।

उहाँ के प्रारंभिक शिक्षा गाँव के विद्यालय में भइल । लड़िकाईं में खेले-कूदे में बहुत मन लागे । प्रारंभिक शिक्षा पूरा कइला का बाद उहाँ के आरा के अग्रवाल मध्य विद्यालय में पढ़े गइलीं । एजवाँ उहाँ के बड़ी मेहनत से पढ़ाई करे लगलीं । एकरा फलस्वरूप वार्षिक परीक्षा में नीमन श्रेणी से पास करे लगलीं । छात्रवृत्तियो मिले लागल । एही समय महामना मदनमोहन मालवीय आरा अइलीं । एगो समारोह में उहाँ के मानपत्र भेंट कइल गइल । समारोह में जगजीवन बाबू मानपत्र पढ़लीं । उहाँ के मानपत्र पढ़े के ढंग आ मीठ बोली सुन के मालवीय जी प्रभावित भइलीं । उहाँ के जगजीवन बाबू के आगे के पढ़ाई काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में करे के निमंत्रण दिहनीं । मैट्रिक के परीक्षा उहाँ के प्रथम श्रेणी से पास कइलीं । गणित में त शत प्रतिशत अंक आइल । आगे के पढ़ाई काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से कइलीं । एजवाँ बिड़ला छात्रवृत्ति मिलल । इंटर कइला के बाद आगे के पढ़ाई खातिर उहाँ के कोलकाता गइलीं । ओजवाँ के विद्यासागर कॉलेज से बी. एस-सी के परीक्षा पास कइलीं ।

उहाँ के संगे बहुत लोग सामाजिक भेदभाव कइल बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

एह सब से जगजीवन बाबू तनिको विचलित ना भइलीं आ पूरा मनोयोग से आपन पढ़ाई जारी रखलीं ।

एही घड़ी देश में आजादी के लड़ाई जोर पकड़त रहे । जगजीवन बाबू अपना के एह से अलग ना रख पवलीं । उहाँ के महात्मा गाँधी के आह्वान पर आजादी के लड़ाई में कूद पड़लीं । उहाँ का गाँधी जी के सच्चा अनुयायी रहीं । सन् 1929 में लाहौर में कांग्रेस के ऐतिहासिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू के अध्यक्षता में रावी नदी के तट पर भइल, जवना में पूर्ण स्वराज के प्रस्ताव पास भइल । जगजीवन बाबू एह में भाग लिहलीं । ओजवाँ से लौट के अइला का बाद उहाँ के चिट्ठी-पतरी से गाँधी जी से सम्पर्क बनवले रखलीं । खद्दर पहिरल आ चरखा कातल शुरू कइलीं । आजादी के लड़ाई में जेलो जाये के पड़ल । जेल में उहाँ के खूब किताब पढ़ीं ।

आधुनिक भारत के निर्माण में उहाँ के लमहर योगदान बा । जब ई तय हो गइल कि अंग्रेज लोग के भारत छोड़ के जाए के पड़ी त ऊ लोग जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्त्व में अंतरिम सरकार बनावल । 2 सितम्बर सन् 1946 के ई सरकार बनल । एह में जगजीवन बाबू के श्रम विभाग के मंत्री बनावल गइल । देश के आजादी के बाद से सन् 1980 तक उहाँ के भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयन के मंत्री रहीं । एह दौरान देश के विकास खातिर उहाँ के कई गो बड़हन काम कइलीं । जनता पार्टी के सरकार में जगजीवन बाबू उप-प्रधानमंत्री के पद सुशोभित कइलीं । रक्षा मंत्री के रूप में उहाँ के काम हरदम याद कइल जाई । सन् 1971 में भारत-पाक लड़ाई का बेरा उहाँ के रक्षा मंत्री रहीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

एह लड़ाई में भारत के शानदार विजय मिलल आ बंगला देश के जन्म भइल । कृषि विभाग के मंत्री का रूप में उहाँ के देश के खाद्यान्न के मामला में आत्मनिर्भर बनावे खातिर काम कइलीं।

28 दिसम्बर सन् 1969 के उहाँ के कांग्रेस के अध्यक्ष चुनल गइलीं । ई बहुते जिम्मेवारी आ गौरव के बात रहे । उहाँ के आपन काम बड़ी निष्ठा का संगे कइलीं । तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी उहाँ के 'बाबू जी'कहत रहलीं । बाद में पूरा देश उहाँ के बाबूजी कहे लागल ।

जगजीवन बाबू के पत्नी के नाँव श्रीमती इन्द्राणी देवी रहे । उहाँ का प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. बीरबल जी के पुत्री रहीं । श्रीमती इन्द्राणी देवी पढ़ल लिखल महिला रहीं । उहाँ के जगजीवन बाबू के काम में हाथ बटाईं । उहाँ के बेटी श्रीमती मीरा कुमार हईं, जे उहाँ के अधूरा काम के आगे बढ़ा रहल बानी ।

जगजीवन बाबू बड़ी तेज दिमाग के रहीं । एही से उहाँ के कवनो बात के झट से जबाब दे देत रहीं । सन् 1977 के बात हवे । उहाँ के पटना में आयोजित अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दूसरा अधिवेशन के उद्घाटन करत रहीं । अधिवेशन के अध्यक्षता विख्यात लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी करत रहीं । जगजीवन बाबू अपना भाषण में भोजपुरी क्षेत्र के विशेषता गिनावत कहनी कि भोजपुरी क्षेत्र से एगो अइसन नदी- सोनभद्र निकलल-बहल जवन पुलिंग बा । तले श्रोता समुदाय में से एक जना मन परवले कि अइसन एगो आउर नदी बा- ब्रह्मपुत्र । एह पर जगजीवन बाबू अपना हाजिरजबाबी के परिचय देत तुंरते कहलीं कि ऊ एडल्ट नइखे, ओकरा में पुत्र

www.bhojpurisahityangan.com

लागल बा । अबहीं भद्र यानी एडल्ट नइखे भइल । एतना सुनते पूरा जनसमुदाय ठहाका में डूब गइल । जगजीवन बाबू के भाषण सुन के आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी बहुत प्रभावित भइलीं आ कहलीं कि जगजीवन बाबू बहुत सफल वक्ता बानी ।

जगजीवन बाबू का शुरूए से सामाजिक भेदभाव के मार झेले के पड़ल रहे बाकिर एह सब से उहाँ का विचलित ना भइलीं, अपना मन में कवनो तरह के कटुता ना पैदा होखे दिहलीं । छुआछूत आ जातिगत भेदभाव के उहाँ के सामाजिक कुरीति मान के एकरा के दूर करे के प्रयास कइलीं । बाबूजी अइसन समाज बनावे के चाहत रहीं, जवना में सभे मिल-जुल के रहो ।

उहाँ का 6 जुलाई 1986 के एह संसार से विदा हो गइलीं । उहाँ के समाधि स्थल के नाँव 'समता स्थल' हवे जहवाँ देश-विदेश के लोग आपन श्रद्धांजलि अर्पित करेला ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जगजीवन बाबू के जन्मस्थान कहाँ हवे ?

2. जगजीवन बाबू के माई के नाँव बताईं ?

3. जगजीवन बाबू के जीवनी लेखक के का नाँव हवे ?

(क) पाण्डेय कपिल (ख) डॉ. विवेकी राय

(ग) डॉ. जीतेन्द्र वर्मा (घ) डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

4. जगजीवन बाबू के जन्मतिथि का रहे ?

(क) 5 अप्रैल 1908 (ख) 20 मई 1909

(ग) 10 मार्च 1918 (घ) 10 दिसम्बर 1912

5. कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष के रहे ?

(ग) पँडित जवाहर लाल नेहरू (ख) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(ग) लाला लाजपत राय (घ) एह में से केहू ना

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जगजीवन बाबू के शिक्षा के वर्णन करीं .।
2. बंगलादेश के उदय में बाबू जगजीवन राम के भूमिका बताईं ।
3. जगजीवन बाबू के हाजिरजबाबी से सम्बन्धित एगो घटना बताईं ।
4. जगजीवन बाबू कब कांग्रेस के अध्यक्ष चुनइलीं ?
5. जगजीवन बाबू कब कांग्रेस के अधिवेशन में पहिला बेरा भाग लिहलीं ?
6. बाबूजी भारत के उपप्रधान मंत्री कब बनलीं ?

www.bhojpurisahityangan.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पाठ का आधार पर बाबू जगजीवन राम के जीवनी लिखीं ।
2. आजादी के लड़ाई आ आधुनिक भारत के निर्माण में जगजीवन बाबू के योगदान के वर्णन करीं ।

परियोजना कार्य

1. संत शिवनारायण के विचार, उहाँ के मठ आदि के बारे में पता करीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. अनिल कुमार 'आंजनेय'

[उजियार, जिला बलिया उ.प्र. के रहनिहार रहीं । जन्म 1933 में दीपावली का दिने । शिक्षक आ प्रधानाध्यापक के रूप में सेवा । जनपदीय आंदोलन से जुड़ के कार्य । हिन्दी-भोजपुरी में निबंध-संस्मरण के लेखन । भोजपुरी में 'विचार बन्ध' नामक निबंध संग्रह प्रकाशित आ प्रशंसित । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पूर्व महामंत्री आ मूंजा, गोपालगंज अधिवेशन के अध्यक्ष । उहाँ के 2 जनवरी 2007 के निधन हो गइल ।]

भोजपुरी के धनः जनगर-पनिगर शब्द

कहल जाला जे भोजपुरी के पानी आ बानी दूनों बड़ा मीठ, बरिआर आ सहजोर होला । एह भाषा का बानी पर त शब्दन के जवन पानी चढ़ल बा ओकर जवाब नइखे । अपना शब्दन का अनमोल धन के जवन धरोहर भोजपुरी भाषा में बा, ऊ कवनो भाषा के गुमान करे खातिर काफी बा । एह शब्दन में

www.bhojpurisahityangan.com

मदन-रस मातल महुआ के ताजगी आ मह-मह महक बा, अपना मनमोहक नशा में अग-जग के गोति देबे वाला लेंढ़िआत कटहर के सरस, गभुराइल गम-गम गमक बा, मोजराइल आम के मदमातल सुबास बा, अपना जोरावर माटी के सोन्हाई बा, भक दे अँजोर क देबे वाली जोन्हाई बा, भरम के काटि के मरम के डिठार करा देबे वाली भाषा के आँजन बा, पुरखन के मरजाद बा, हियरा हुलसावेवाली गंगा के पवित्रता बा, हिमालय के ऊँचाई बा, सागर के अतल गहराई बा, अमराई के जुड़छाँह बा आ बा सूरुज के तेज जवरे आगि के गरम आँचिओ। मतलब ई जे एगो भरल-पूरल, टाँठ-पोढ़ आ जीअत-जनगर भाषा का शब्दन में जइसन जिनिगी, अनुभव, चुस्ती, कसावट, गहराई, आ धार चाहीं ओइसन एहू के शब्दन में बा। एह शब्दन में लोच बा, मिठास बा, लुनाई बा, सुघराई बा। इन्हनी में कोअराई आ गूढ़ता दूनो बा। ई अदनार आ रूढ़ो-पकठाइल बाड़न। ई जनमतुआ मतिन आल्हरो बाड़न आ लकड़ी का गाँठ निअर गँठगर आ ठेठो बाड़न। एह शब्दन के बान जेकरा मन में लागेला ऊ तिलमिला जाला, बेहाल हो जाला। मधु में बोरल, अमृत में सनाइल जवन शब्द होलन, ऊ निहाल क देलन। कहे के गरज ई बा जे भोजपुरी बँहिकट भाषा ना ह, एकरा शब्दन के बाँहि बड़ा लमहर बा।

'पानी पीहीं छानि के, बात कहीं जानि के' -एह से हम अपना बात के साफ करे खातिर शब्दन के कुछ परमान राखल चाहत बानीं। भोजपुरी में पर्याय वाची शब्दन के भंडार भरल बा। एगो परतोख लीहीं। गाँव में माटी का बरतन के बड़ा महातम बा। माटी का बरतन मधे एगो के नाँव ह भाँड़ा

www.bhojpurisahityangan.com

'देखल' क्रिया का भिन्न-भिन्न रूपन के अभिव्यक्ति खातिर देखल, निरेखल, मुलुकल, आँखि गड़ावल भा गड़कावल, आँखि लगावल, आँखि बिछावल, अँखियान कइल, डिठार कइल, टकटकी लगावल, हेरल, आदि शब्द प्रचलित बाड़न सन । सूप से फटके के अनेक क्रिया आ विधि खातिर फटकल, उचिलावल, पछोरल, हिलोरल, केरवल, डगरावल, झटकारल आदि शब्द आवेलन स । तनी सबदन के दरद अंगेजी-पाँव पिराला, चलत-चलत गोड़ अगिआ जाला, पाला का परले अङरे लागेला, कठुआ जाला, कान बथेला, आँखि गड़ेले, पेट में खोभा मारेला, भूखे पेट हँउड़ाला, दाँत अङरेला, देहि में डाढ़ा लेसेला, कपार टनकेला, फोरा टभकेला, काँट करकेला, करेज खँखोराला, हीव आ जीव दूनों जरेला । सकदम, अँड़सल, सँड़सल, ठकचल, गाँजल आ अहकल, डहकल, कुँटुँकल, बिसुनल, रोअल, फेंकरल, रागल आदि शब्दन से चित्र उघरि जाला ।

असगुनाह बोली आ शब्दन के बरावल जाला । एही से दीया बोतवला के दीया बढ़ावल, मुअल के गंगालाभ भइल, राम का दुअरा गइल, आँखि मूँदल कहल जाला । एहवातिन के असीसत खानी बूढ़ पुरनियाँ लोग कहेला- माँग भरल रहो; सेनुर बनल रहो; दूधे नहा, पूते फरऽ; आँचर भरो; भरल-पूरल रहऽ; एक से एकइस होखऽ; बंस बढ़ो; डीह जागो आदि ।

एके भाव भा क्रिया खातिर जानवर आ आदमी का साथे अलग-अलग शब्द आवेला । मरद के 'खोराक' होला आ बरध के 'गवत' । मेहरारुन के 'गोड़ भारी भइल' आ गाय-भईंस के 'गभिनाइल' कहल जाला । गोरू 'लगहर' आ जोरू 'लरकोर'

www.bhojpurisahityangan.com

कहाली । अलवाँति का कोरा के लाल 'जनमतुआ' भा 'कोरवाँसुत', 'होरिला' भा 'छगन' होले आ जनावरन के बच्चन के त अलगे-अलग खास-खास नाँव परल बा । भईंसि के बच्चा पाड़ा, पड़रू, पाड़ी; गाइ के बाछा-बाछी, बछिया, बकरी-छेरि के पाठा, पठरू आ पाठी; कुतिया के पिल्ला, पिल्ली; घोड़ी के बछेड़ा, बछेड़ी आ सूअरी के छवना (उभय लिंग) कहाला । आदमी के आवास के 'घर', भा 'मकान' कहल जाला बाकी जनावरन के ना । उन्हनीं के बसेर के अलगे-अलग नाँव बा । सियार, हुँड़ार आ बाघ के 'मानि', घरिआर के 'घइन', सूअर के 'खोभार', मूस आ साँप के 'बीलि' भा 'बीयरि', चिरईं के 'खोंता', माटा के 'झोंझ', मकरी के 'जाल', बिरहनी आ मधुमाछी के 'छत्ता' भा 'छाता', गाइ-भईंसि-बरध के 'सारी' (शाला); घोड़ा-हाथी के 'घोड़सार (अस्तबल) -'हथिसार ।'

ग्राम्यदोष भा भाषा का फूहरपन से बँचाव खातिर भी विशेषार्थक शब्द चाहे मुहावरन के बेवहार भोजपुरी में चलेला ! पैखाना करे गइला के टट्टी गइल, मैदान गइल, फराकित भइल, दिसा फिरे गइल कहाला । एही तरे गदेल लइका के पैखाना फिरला के छिया कइल आ पेसाब कइला के ओद कइल महतारी भा धाय कहेली । इहवाँ लकड़ी तूरल जाला, फूल लोरहल (लोढ़ल) जाला, दाना के पौधा पाछल जाला, अफीम काछल जाला । रेंड़ी के तेल जवन घानी में पेरले प्राप्त कइल जाला, ऊ 'कइल' तेल कहाला । काटल, हबकल, बकोटल, भँभोरल, खँखोरल, खाभल शब्द एक दोसरा के समानार्थी ना हउअन । ओइसहीं पीटल, ठेठावल, कौंड़ल, कचारल, धाङल, लतिआवल

www.bhojpurisahityangan.com

के समुझल जाय ।

संज्ञा से क्रिया बनावे खातिर भोजपुरी का पास भरल-पूरल पूँजी बा । एकर परतोख एगो-दूगो ना,अलमगंज बा । जइसे गरदन पर धक्का देके धसोरले ना जा,गरदनिआवल भा गरदवसलो जाला । लोल धके लोलिआवल, झापड़ से झपड़ियावल, थपरा से थपरियावल, मूका से मुकवसल, चटकन से चटकनियावल, केहुनी से केहुनिआवल आ केहुनाठ से केहुनाठल, सोटा से सोटवसल-सोटहारल, झटहा से झटहारल, लउर के हूरा से हुरवसल-हुरियावल भा हुरनठल, हुरा से पेट में मारि के हुरपेटल, छाकुनि से छकुनठल आ पैना से पैनठल जाला । बैल-गोरू के खेदे के होला त 'हट-हट', बिलार के 'बिल-बिल', कूकुर के 'दुर-दुर', छेरि-बकरी के 'हुल-हुल', कउवा के 'को-को', कहल जाला । नदी के सोता, नारा, नारी, भागड़ कईगो नाँव बा । ओसहीं पोखरा, बउली, चँवर, अहरा, अहरी, गड़हा, गड़ही, दह आदि जलाशयन खातिर कहाला । केहू से बेपुछले-जँचले, बिना ओकरा मरजी के ओकरा चीज के हाथ लगा लिहला के 'हथवसल' कहल जाला । अनका चीज के बाँध-घात से हाथ लगवनिहार के 'हथलपक' कहल जाला । कवनो चीज पर लोभा के ओकरा के लेवे खातिर लइकन के जिद कइला चाहे रोवला-धोवला के 'छेरिआइल' कहल जाला । अपराध करे खातिर अभ्यस्त 'परिकल' ह आ गाहे-ब-गाहे हाथ भा मुँह लगा देबेवाला आदमी भा जानवर 'हरकल' कहाला । कहाउति ह जे हरकल मानेला परिकल ना ।

एही तरे क्रिया से संज्ञो बनेला । भागेवाला के भगेड़,आगे चलेवाला के अगहर, ढेर खायेवाला के खधोर, पीए वाला के

www.bhojpurisahityangan.com

पिअक्कड़ आ कुछ उत्पात करे में रूचि रखनिहार के 'खुरचाली' कहल जाला । हितई-नतई खात फिरला के 'छीपातिरिथ' आ कब अइहें, कब जइहें एकर ठेकान जेकर ना होखे के 'खहुआ-पनबदरा' कहाला ।

शब्दने निअर भोजपुरी कहाउतिओ बहुत जनगर होली सन । ई कहाउति जिनिगी के दरसन हई सन । 'थोर कहीं आ ढेर समुझीं' ईहे एह कहाउतिन के प्रकृति ह । कहाउतिन के कथ एह लेख में ना समाई । आखिर में, भोजपुरी के खास आपन, सभ से बढ़ि के एगो खूबी के चिन्हार करावत आपन बात बन कइल चाहत बानीं । मध्यम पुरूष में सर्वनाम के चारि-चारि गो रूप सुननिहार जवरे सामीप्य, ओकर स्तर आदि के बिचार से आवेला-

	सर्वनाम	आदेश आदि के क्रियापद
अपना से छोट खातिर-	तें-	आउ
अपना बरोबरी के लोग खातिर-	तूँ-	आवऽ
अपना से सामान्यतः ऊँच खातिर-	रउआ-	आईं
अपना से बहुत बड़ (गुरु, उपरोहित भा देवतुल्य व्यक्तित्व) खातिर-	अपने का-	आइल जाव

एह मामिला में खड़ी बोली के तू आ तुम आओ आ 'आप आइए'

www.bhojpurisahityangan.com

से एक जौ बढ़ि के भोजपुरी के देखावल कवनो बरिआरी ना कहाई ।

अभ्यास

बस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. अनिलकुमार आंजनेय कहाँ के रहनिहार रहीं ?
2. आंजनेय जी कवना आंदोलन से जुड़ल रहलीं ?
3. 'भोजपुरी के धन: जनगर पनिगर शब्द' कवना विधा के रचना बा-

   (क) कहानी

   (ख) संस्मरण

   (ग) भाषिक विशेषता बतावे वाला निबंध

   (घ) रेखाचित्र
4. आंजनेय जी के लिखल निबंध संग्रह के नाम का ह ?

   (क)नौ निबंध (ख)ललित निबंध

   (ग) विचार बंध (घ) निबंधावलि

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक के परिचय दीं ।
2. एह निबंध में का बतावे के कोशिश कइल गइल बा ?
3. असगुनाह बोंली आ शब्द के कइसे बरावल जाला बताईं ।
4. मध्यम पुरुष खातिर सर्वनाम के कवन-कवन रूप भोजपुरी में चलेला ? बताईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

5. क्रिया से संज्ञा कइसे बनेला ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी में भाव के हिसाब से शब्द भेंटाला, प्रस्तुत निबंध के आधार पर बतलाईं ।
2. संज्ञा से क्रिया कइसे बन जाला,एह निबंध के आधार पर बताईं ।
3. एह निबंध के आधार पर बतलाईं कि भोजपुरी के शब्द जनगर आ पनिगर कइसे बाड़ स ।
4. एह निबंध में आइल मुहावरा आ कहावत, के खोज करीं आ ओकर मतलब बतावत एगो छोटहन लेख लिखीं ।

परियोजना

भोजपुरी भाषा के शब्दन के विशेषता बतावे वाला कुछ अइसने शब्दन के खोज के लिखीं ।

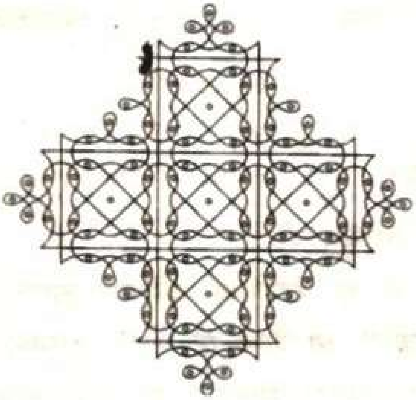

www.bhojpurisahityangan.com

बायन

प्रेमचन्द

[प्रेमचंद हिंदी के महान कथाकार रहीं । इहाँ के जनम बनारस (उत्तरप्रदेश) के लमही नाँव के गाँव में 31 जुलाई 1880 में भइल रहे । इहाँ के नाँव धनपत राय रहे ।

इहाँ के शुरुआती लेखन आदर्शवाद से प्रभावित रहे । धीरे-धीरे इहाँ के आदर्शवाद का ओर मूड़नी । इहाँ के उपन्यासन के नाँव बा- सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान । मंगलसूत्र इहाँ के अधूरा उपन्यास बा । इहाँ के कहानियन के संग्रह मानसरोवर आठ भाग में छपल बा । इहाँ के लेख महाजनी सभ्यता आजो प्रासंगिक बा ।

प्रेमचंद 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के पहिला अधिवेशन (लखनऊ) के अध्यक्षता करत कहले रहीं कि लेखक स्वभावे से प्रगतिशील होला । इहाँ के मउवत 1936 में भइल ।

इहाँ के चर्चित कहानी के अनुवाद गंगानंदन झा 'कलाधर' कइले बानी । एह कहानी में प्रेमचंद देखवले बानी जे जवना समाज में मेहनत के कीमत ना मिले ओजवाँ धीसू-मावध नियर कामचोर लोग पैदा होला ।]

गंगानंदन झा 'कलाधर'

[गंगानंदन झा कलाधर के जन्म पश्चिमी चंपारण के श्रीनगर में 14 मार्च 1948 के भइल रहे । इहाँ के दैनिक 'आर्यावर्त' में लमहर समय ले पत्रकार रहीं ।

इहाँ के रचना कई गो पुस्तक आ पत्र-पत्रिका में छप चुकल अबहीं इहाँ के साहित्य, संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय संस्था 'साहित्य कुंज' के माध्यम से अलख जगा रहल बानी ।

इहाँ के पहचान एगो सफल अनुवादक के बनल बा । इहाँ के हिंदी के कई गो महत्त्वपूर्ण रचनन के भोजपुरी आ उर्दू में अनुवाद कइले बानी ।]

www.bhojpurisahityangan.com

कफन

मड़ई के दुआरी पर बाप बेटा दूनू जना एगो बुताइल घूरा के अगवा चुपचाप बइठल रहले आ मड़ई में बेटा के जवान मेहरारू बुधिया लइका होखे के दरद से कोहरत रहे । रह-रहके ओकरा मुँह से करेज निकाल लेवे वाला चिचिआइल, कोहरल, छटपटाइल सुन-सुन के दूनू जने के करेज रह रहके उछले लागत रहे । जाड़ के रात, सगरो एक दम सून्न-सन्नाटा, सऊँसे गाँव अन्हरिया में लुकाइल रहे ।

घीसू कहले, "बुझाता जे ई बची ना ? सऊँसे दिन त माकते बीत गइल, जा ना, तनि देखबो तऽ करऽ ।

माधव पिनकले बोलले, "मरहीं के बा तऽ जल्दी से मरियो काहे नइखे जात ? हम देखिए के का करब ?"

"बड़ा बे दनाई के बाड़े रे । सालभर जेकरा संगे सूख चैन से रहलऽ ओकरा संगे एहिसने बेदनाई ?"

"तऽ हमरा से ओकर छटपटाइल, ओकर हाथ गोड़ पटकल अब नइखे देखल जात ।"

घीसू अउरी माधो के ई घर सऊँसे गाँवे में बदनाम रहे । घीसू एक दिन काम करस त तीन दिन ले सुसताते रह जास माधव ऐतना देहचोर, कामचोर रहे कि आधा घंटा काम करे त घंटा भर चीलम पीए में लगा देवे । ऐहि सब करनी से एह लोग के

www.bhojpurisahityangan.com

केहू पूछबो ना करत रहे, मजूरियो ना मिलत रहे । घर में अगर एको मुट्ठी अनाज बा त ई लोग के कवनो काम कइल किरिया रहे । जब दू-चार दिन टटा जाए लोग त घीसू गाछ पर चढ़ के तनी मनी लवना लकड़ी तूड़ के ले आवे अऊरी माधो बजार में ओकरा के बेंच आवस । आ जबले पइस बाँचल रहे तबले एने-वोने टंडइली करे लोग । गाँव में त काम के कवनो कमी रहे ना । खेती किसानी करेवाला गाँव रहे । काम करेवाला खातिर त इहाँ पचासो काम रहे, बाकिर ई दूनू जना के बोलाहट ओहि बेर होखे जब दूनू जना के मिलाके एके आदमी के काम भइला के सबर कइल छोड़ के अऊरी दोसर कवनो चारे ना रहत रहे । अगर ई लोग साधु रहित त संतोष आ धीरज करे खातिर संयम आ नियम के कवनो जरूरते ना रहित । काहे कि ई लोग के शुरूए से चाले एइसने रहे । जिनगियो ई लोग के विचित्रे रहे । मड़ई में दू-चार गो माटी के बरतन छोड़के अऊरी कुछु रहले ना रहे । फाटल पुरान कपड़ा से केहुतरे अपन देह झाँप लेत रहे लोग । दुनिया के कवनो चिंता त रहे ना बाकिर करजा से लदाइल रहे लोग । ई लोग गारियो सुनते रहे, मारो खाते रहे, तबो एह लोग खातिर सब धान बाइसे पसेरी रहे । ई लोग के सोचावट रहे कि -'पीठिया मार खाई, अँखिया रोई, हमार का होई ।' लोगवा ई लोग के सब दशा देखला के बादो कुछ ना कुछू देईए देत रहे, ई जानत जे ई लोग से कबो कुछू मिले वाला नइखे । मटर आलू के फसल के बेरा केहू-केहू के खेत से उखाड़ के ले आवे लोग आ ओकरे के भूंज-भांज के खा जात रहे, नात दस पाँच गो ऊँखीए तूड़ ले आवे लोग आ रात में ऊहे चूस के सूत जात रहे । घीसू एही तरह जीअत अपन साठ बरीस के उमिर काट ले ले रहले,

www.bhojpurisahityangan.com

आ माधो अपन बाप खनिया, जिनगी काटत रहे बल्कि तनि बापो से अधिका परलाया रहे ।

एह बेरा दूनू जने घूरा के सामने बैठ के घूरा में आलू पकावत रहले जे केहू के खेत से कोड़ के ले आइल रहे लोग । घीसू के मेहरारू के मरले त बहुत दिन हो गइल रहे । पर साल माधो के बिआह भइल रहे । जहिया से ओकर मेहरारू आइल एह खानदान के सरिआवल शुरू क देलख । केहूतरे ऊ एह दूनू बाप बेटा के पेटो भरीये देत रहे । जहिया से ऊ आइल तहिये से इ दूनू जना के टंडइली मारल आउरी बढ़ गइल रहे । ओतने ना कबो-कबो केहू एह लोग के लगे कवनो काम अहइबो करे त ई लोग आपन भाव बढ़ावत अधिका मजूरी माँगे लागल रहे । उहे मेहरारू एह बेरा लड़िका होखे के दरद से कोहरत छटपटात रहे, आ ई दूनूँ बाप-बेटा सोचते रहे कि ऊ मर जाइत त निश्चित होके सूतल त जाइत ।

घीसू घूरा के आलू निकाल के छीलत कहले-"जा के तनि देख का हाल बा ओकर ? कवनो चुड़इले का चाल बुझाता, आउरी का ? इहाँ तऽ ओझो एक रूपइया माँगेला ।"

माधो के एह बात के डर रहे कि जइसे हम मड़ई में गइनी तइसे बाबू बड़का-बड़का सब आलू लील चलीहे कहले -'हमरा ऊहाँ जाए में डर लागता।'

"डर कवनो बात के, हम त इहवाँ बइठले नू बानी ।"

"त तूही जाके काहे नइख देख लेत ।"

"हमर मेहरारू जब मरल रहे नूँ त हम तीन दिन ले ओकरा लग से हीललो ना रहनी । आ तनि सोच, हम जब ओकरा ल गे जाऐब त ऊ लजाई कि ना ? जेकर मुँह कबो ना देखनी,

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरा के लंगटे देखीं ? ओकरा एह बेरा अपना देहिया के सहूर होई ? हमरा के देखली त अपन हाथो गोड़ के तरे चलाई, छटपटइबो के तरे करी ? तोहरा ई कुल्हि काहे नइखे बुझात ?''

"हम सोचतानी की लइका हो जाई त के तरे का होई । सोठ, गुड़, तेल.... कुछुओ तऽ नइखे घर में ।''

"सब कुछ के इन्तजाम हो जाई... भगवान दे दीहें । जे लोग एह बेरा एको पइसा नइखे नूँ देत, ऊहे लोग बोलाके रूपइया नूँ दी । हमरा नौ गो लइका भइल, घर में कुछूओ ना रहे, आखिर भगवान केहू तरे पूरवले कि ना ? केहू तरे कमवा त चलिए नू गइल ।''

समाज में दिन रात मेहनत करेवाला किसानन के हालत कवनो एह लोग से बहुत नीमन ना रहे । किसान से अच्छा त ऊहे लोग रहे जे किसान के कमजोरी से फायदा उठावेवाला रहे । ई लोग के हालत किसान से चीकन रहे । अइसन व्यवस्था में घीसू अउरी माधो खनियाँ लोग के मनमिजाज हो गइल कवनो अचरज के बात रहे ना । हम त कहेब कि घीसू किसान लोग से कुछ अधिका सोचेवाला रहे तबे नूँ ऊ किसानन के विचार शून्य समाज में रहे से नीमन गाँव के नीमनों बात पर कुछू-कुछू बोल देवेवाला खाये-पीये वाला लोगन के सँगे रहे लागल रहे । हाँ, ओकरा में ई ताकत ना रहे जे बिना मतलबो के चौकड़ी जमावे वाला मंडली के कायदा कानून के पूरा क सके । एही से जहाँ चंडाल चौकड़ी के लोग गाँव में सभतर पूछात रहे, मुखिया बन गइल रहे तवनो पर एह लोग के केहू नीमन ना कहत रहे । तबो ओकरा एह बात के सबूर त रहले रहे कि भले ऊ दरीदर बा बाकिर ओकरा किसान लेखा रात दिन मेहनतो त नइखे नूँ करे के पड़त अउरी

www.bhojpurisahityangan.com

केहू ओकर सधुअई से ओकरा गरीबी से नाजायज फायदो त नइखे उठावत । दूनूँ जने घूरा से गरमे-गरमे आलू निकाल के खात रहले । काल्हे से कूछू ना खइले रहे लोग । एतनो सबूर ना रहे कि तनि आलू के सेराय दिहल जाए तब खाइल जाई । कय बेर त दूनू जना के मूँहो जर-जर जात रहे । धीकल आलू ई बुझाला जे सेरा गइल बा बाकिर दाँत से काटते बेरी जीभ, तारू अऊरी नटई जरे लागेला । एहसन गरम आलू मूँह में धरते बेरी घोंट लिहलका ठीक रहेला । इहे सोचत दूनू जने जल्दी-जल्दी गरमे आलू घोंटत जात रहले, भले एह घोंटाई में दूनू जने के आँख से टप-टप लोरो चुए लागत रहे ।

घीसू के एहि बेरा ठाकुर के बरिआत ईयाद पड़ गइल, बीस बरीस पहिले गइल रहले । ऊहवाँ के भोज खइलका इनका जिनगी में कबो भूलायवाला नइखे, आज फेरू से इनका ऊहवाँ वाला भोजवा ईयाद पड़ गइल रहे । बोलले, "ऊ भोज हम कहियो ना भूलाएब । तहिया से आज ले हमरा ओहिसन चीकन,? नीमन खायके नाहिए मिलल । लड़कीवाला सभका के जेतना लोग गइल रहे सबकेहू के भरपेट पूड़िए खिअवले रहे । छोटका बड़का सभे पुड़िए खइले रहे ऊहो, खाँटी घीव के । चटनी, रायता, तीन किसिम के भूजिया, एगो रसदार तरकारी, दही, चटनी, मिठाई.... अब तोहरा से का कहीं ओ, भोज के स्वाद । कवनो रोक टोक त रहे ना, जे चाह से माँग ल, जेतना चाह खात जा । ऐतना खइलख लोग, एतना खइलख लोग जे केहू से पनिवो ना पिअल जात रहे । ओने, परोसे वाला लोग रहे, जे पतई में गरम-गरम गोल-गोल गमकत कचौड़ी परसत चल जात रहे । मनो कइला पर कि अब हमरा ना चाहीं, पतई के हाथ से रोकलो पर

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ लोग मानते ना रहे । सभे खूब टंच खइला के बाद मूँह धोहलख त पानो मिल, इलाइचिओ मिलल, बाकिर हमरा ओह बेरा पानो लेला के कहाँ साँस रहे । हमरा से त ओह बेरिया ठीक से खड़ो ना भइल जात रहे । हम जुरन्ते जाके अपन कमरा में सूत गइनी । अइसन दरिआव वाला बड़का करेज रहे ठाकुर के....।

माधो मने-मने भोज के मजा लेत कहले, "अब हमनी के ओहिसन भोजवा केहू काहे नइखे खिआवत ।"

"अब केहू के खिआई ऊ एगो जमाना रहे.... अब त सबका कंजूसीये लऊकता । बिआह शादी में खर्च मत कर.... किरीया-करम में खर्च मत कर । पूछना गरीबन के माल बटोर-बटोर के कहाँ रखब? बटोरे में त कवनो कमिए नइखे... बाकिर खर्चा करे में किफायत लऊके लागत बा ।"

"तू त बीस गो पूड़ी खइले होखब ।"

"बीस से अधिका खइले रहीं.....।"

"हम त पचास गो खा जइतीं ।"

"पचास गो से कम त हमहूँ नाहिए खइले होखेब । हम पट्‌टा रही । तू त हमरा अधियो नइख ।"

आलू ई खा के दूनू जना पानी पीअलख आ ऊहवें घूरा से सटले आपन धोती ओढ़के, गोड़ के अपन-अपन पेट में ढूका के सूत गइल लोग । बुझात रहे जे दू गो बड़का अजगर गेरूड़ मार के पड़ल होखे ।

ओने बुधिया अबहीं ले छटपटाते रहे....।

भोरे-भोरे माधव मड़ई में जा के निहारता त ओकर मेहरारू मर गइल रहे । सगरो मुँह पर मांछी भनभनात रहे । आँख तरेर देले रहे आ सऊँसे देह धूरा में लसराइल रहे । ओकरा पेटे में

www.bhojpurisahityangan.com

लड़िका मर गइल रहे ।

माधव भागल-भागल घीसू लगे आइल । दूनू जने मिलके चिल्ला-चिल्ला के अपन छाती पीटे लगले । पास-पड़ोस के लोग ई लोग के चिल्लाइल सून के दउड़ल आइल । जेकरा जे बुझाइल से इ लोग के समझावे लागल ।

एह बेरा बेसी रोए चिचिआए के समय त रहे ना । कफन अऊरी लकड़ी के जोगाड़ करे के रहे । मड़इ से त एकहगो पइसा ओहितरे बिलाइल रहे जे तरे चील के खोता से मांस बिला जाला ।

बाप बेटा दूनू जना गाँव के जमींदार किहाँ गइल । जमींदार त एह दूनू जना के मूँहों देखे के ना चाहत रहले । कई बेर जमींदार के हाथे ई लोग पीटाइलो रहे- कबो चोरी कइला खातिर, कबो-कबो सरकार के काम पर ना अइला खातिर...। पूछले -"का ह रे घीसूआ- काहे भोकर पार तारे अब त ते कबो लउकतो नइखीस...., बूझाता जे अब ते एह गाँव में नइखीस रहे के चाहत....।"

घीसू भूंईया में मूड़ी राख के लोर भरल आँख से कहे लागल "....सरकार ! बड़ी बिपत में पड़ल बानी । माधो के मेहरारू रात में मर गइल । रातभर छटपटात रहे सरकार ! हमनी के दूनू जने रातभर ओकरे लगे बइठले रह गइनी ।... दवा-दारू जेतना पार लागल सब कइनी बाकिर ऊ हमनी के दगा दे के चल गइल । अब त घरे केहू एगो रोटियो बनावेवाला ना बांचल ए मालिक....। हमनी के बर्बाद हो गइनी । हमर त घरे उजड़ गइल । अब एह बेस रऊआ के छोड़ के अऊरी के बा जे हमनी के उद्धार

www.bhojpurisahityangan.com

करी.....। हाथ में जे पईसा रहल हवे ऊ सब दवा, दारू में उठ गइल....।"

जमींदार दयालु त रहले बाकिर घीसू पर दया कइल करिआ कमर उज्जर कइल रहे । मन में त आइल कि कह दीं "भाग इहाँ से जल्दी भाग....। एतरे बोलवलो पर ना टकसेले आ एह बेरा गरज पड़ल बा त खुशामद कर ताड़े.... हरामखोर कहीं का.... बदमाश ।" बाकिर एह बेरा खिसिआए के आ मारे-पीटे के त बेरा रहेना । मने-मने खऊझत दूगो रूपइया निकाल के फेंक देहले बाकिर ओकरा के ना समझवले बुझवले ना ओकरा कावर देखबे कइले । एगो बलाय टार देले ।

जब जमींदार उनका के दूगो रूपइया देइए देले त गाँव के बनिया महाजन के का मजाल कि उनका के कूछू ना कूछू ना दीहें । केहू दू आना दिहलस.... केहू चार आना देलख.... घंटा भर में घीसू के लगे पाँच गो रूपइया हो गइल । कहीं से तनी-मनी अनाज मिल गइल, कहीं से लकड़ी मिल गइल । दूपहरिया में दूनू जने चलल लोग कफन कीने । एने लोग बाँस काटे में लाग गइल ।

गाँव के कमजोर करेज वाला मेहरारू लोग लाश देखे आवत रहे आ बेचारी बुधिया के इयाद क-क के रोवत गावत चल जात रहे । बाजार में पहुँच के घीसू बोलले, "लकड़ी त ओकरा के जरावे भर के मिलीए गइल बा.... का रे माधो ।"

"हाँ लकड़ी बहुत मिले गइल बा.... अब कफन चाहीं ।"

"त चलना कवनो सस्ता सुविस्ता कफन कीना जाए ।"

"हँ-हँ अऊरी का.... लाश उठावत-उठावत रात त नूँ

www.bhojpurisahityangan.com

होइऐ न जाई, आ रात में कफन के देखता ?''

''कइसन खराब रेवाज बा जे जीअता में देहो नुकावे खातिर कपड़ा होखे चाहे ना होखे बाकिर मुअला पर नएके कपड़ा चाहीं ।''

''अरे कफनवो त लाश के संगे आखिर जरीये नू जाला ।''

''अऊरी का बाँचल रहेला... इहे पाँच गो रूपइया पहिले मिलल रहित त दवा बीरो ना हो जाइत ।''

एह बेरा दूनू जने एक दोसरा के थाहत बाजार में एने ओने घूमत रहे । कबो एह कपड़ा के दोकान पर कबो ओह कपड़ा के दोकान पर । रंग-बिरंग के कपड़ा देखत रहे लोग कबो रेशमी कबो सूती बाकिर कोनो कपड़वा एह लोग के पसन्न ना पड़त रहे । इहे करत धरत सांझो हो गइल । दूनूँ जना का जाने कवना सूतार से एगो दारू के दोकान के लगे पहुँच गइल । के तरे दूनूँ दोकान के भीतरा चल गइल लोग । ऊहाँ जाके अब का कइल जाए, का ना कइल जाए... सोचत खड़ा रहे लोग.... फेर दूकानदार से कहले -''साह जी एगो बोतल हमरो के दे दीहं ।''

एकरा बाद त चीखनो आ गइल.... तरल मछरीयो आ गइल आ दूनू जना ओसारा में नीमन से बइठ के ल गले दारू पीए ।

शुरूए में गटागट पीअला के बाद नूनूँ जने के अब दारू लागल शुरू हो गइल...।

घीसू बोलले ''कफन ओढवला से का होइत ? आखिर जरीये त जाइत । कुछु बहू के संगे ना जाइत ।''

माधो आसमान के ओर निहारत बोलले, बुझात रहे जे

www.bhojpurisahityangan.com

देवता लोग के अपना ओर से कवनो पाप ना कइला के गवाही बनावत होखस, ''ई त दुनिया के चलन बाटे, ना त काहे लोगवा बाभनन के हजारन रूपइया के दान क देला, के देखे जा ता की परलोक में ओकरा मिलता की ना ।''

''धनिक लोग लगे पइसा बा, फूके लोग । हमनी लगे कथि बाँचले बा जे फूकी ?''

''आखिर लोगवा के का जबाब देब ? लोगवा पूछी ना ?, कफन कहँवा बा ?'' घीसू हँसे लगले -''रे, कह देब जे रूपइया डांढ में से गिर गइल । केतनों खेजनी, ना मिलल । लोगवा के विश्वास त नाहिए होइ बाकिर फेर ऊहे लोगवा रूपइयो दी ।''

माधो हँसे लगले एह तरे के बिना सोचले बनल भाग्य पर, बोलले ''बड़ा नू नीमन रहलसिय बेचारी, मरबो कइलख त हमनी के खूब नीमन चीकन खिया पिया के ।''

आधा बोतल से अधिका अब खतमा गइल रहे ।

घीसू दू सेर पूड़ी मंगवले । चटनी, अंचार, करेजी । दारू के दोकाने के लगे दोकान रहे माधो झटक के दू गो पतई पर सब समान ले अइले । पूरा डेढ रूपइया खतम हो गइल । अब कमे पइसा बांच गइल रहे ।

दूनूँ जना शान से एह बेरा पूड़ी खात रहे लोग, जे तरे जंगल में कवनो बाघ आपन शिकार उड़ावत होखे । ना कवनो जवाबदेही, ना केकरो डर, ना बदनाम हो जाए के कवनो फिकीर । इ कुल्हि के त ऊ लोग पहिलवें जीत लेले रहे ।

घीसू कोनो पहुँचल महात्मा नियर बोलले, ''जब हमनी के आत्मा एह बेरा खुश बा त का ओकरा एकर पून्न ना मिली ?''

www.bhojpurisahityangan.com

माधो सरधा से मूड़ी निहुआवत हँ में हँ मिलावत कहले, "जरूरे मिली, मिलबे करी । हे भगवान, तू त सभकर मन के बात जानेल, ओकरा के बैकूंठे, ले ले जइह । हमनी के दूनू जने खूब मन से आशीर्वाद दे रहल बानीं । आज जे खाय के मिलल ह, अइसन त जिनगी में कबो ना मिलल रहल ह ।

तनिए देर में माधव के मन में एगो शंका जागल जा ता, बोलल, "का हो दादा, हमनियों के कबो न कबो त ऊहँवे जाये के पड़ी ?

घीसू अइसन मामूली बात पर कूछुओ ना कहले । एह बेरा ऊ परलोक के बात सोच-सोच के टटके मिलत खुशी में कवनो अडंगा लगावे के ना चाहत रहले ।

"ओह बेरा ऊ जब हमनी से पूछी कि तोहनी के हमरा के कफन काहे ना दिहल, त का कहल जाई ?"

"कहल जाई तोहार मूड़ी ।"

"पूछी त जरूरे ।"

"तू के तरे जान ताड़े कि ओकरा कफन ना मिली । तू हमरा के अइसन गदहा समझ ताड़ । साठ बरीस ले का हम घासे नोचत रहनी ह ? ओकरां कफन त मिलबे करी, ओतने ना ओकरा नीमन कफन मिली ।"

माधो के विश्वासे ना होत रहे, बोललख, "के देदी ओकरा के कफन, रूपइया सब त तू चाट गइल । ऊ त हमरे से नू पूछी । हमनीं नूँ ओकर माँग में सेनूर दिहले रहनी ।"

घीसू तनि गर्मात बोलले, "हम कहतानी, ओकरा कफन मिली.... तू मानत काहे नइखे ?"

"के कफन दे दी ।"

www.bhojpurisahityangan.com

''जे लोग अबरी देले रहलस, बाकिर अबरी रूपइया हमनी के हाथ में ना आयी ।''

जइसे-जइसे अन्हरिया बढ़त जात रहे, आ आसमान के तरेगनों के चमचमी बढ़े लागल रहे, ऐने दारू के दोकान के चककओ बढ़ल जात रहे । केहू गावत रहे, केहू ढीलत रहे केहू अपना संघतिया के गर में गर मिलावत रहे, केहू अपना संघतिया के मुँह में दारू के गिलास ढूकावत पिआवत रहे ।

इहाँ के दुनिया में अजबे मस्ती रहे, हवा में निशा रहे । केतना लोगवा त इहाँ आके एके गिलास में मस्त हो जाए । दारू से अधिका त इहाँ के बयारे से लोग पर निशा चढ़े लागे । जिनगी से अगुताके, जिनगी से तंग होके इहवाँ लोग आवत रहे, आ तनि देर ला भूला जात रहे कि हम जीअतानी कि मरऽतानी ।

एने एह दूनू बाप बेटा मजा ले ले के चुसकिआवत रहले, सभे ईहे लोग के निहारत रहे आ सोचत रहे कि केतना नीमन भाग्य बा ई लोग के । दूनूँ जना के बीच में सऊँसे बोतले बा ।

भर पेट खा लेला के बाद माधो बाँचल पूड़ी के पतई उठा के एगो भीखमंगा के दे दिहले जे कबे से खड़ा भइल भूखाईल आँख से टूकुर-टुकुर ऐहि लोग के निहारत रहे । माधो के केकरे कुछु देहला से मिलेवाला गौरव, आनंद आ खुशी जिनगी में पहिले बेर मिलल रहे । घीसू भीखमंगा से कहले, ''ले जा आ खूब हूमच के खा, अऊरी ओकरा के खूब आशीर्वादो दे दीह जेकर इ कमाइ हवे, ऊ त मर गइल बाकिर तोहार दिहल आशीर्वाद ओकरा जरूरे फरी । अपना रोआँ-रोआँ से आशीर्वाद दीह । बड़ा गाढ़ कमाइ के पइसा रहल हा ।''

माधो एक बेर फेर आसमान कावंर ताकत बोलल, ''ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

त बैकुंठे जाई दादा... ऊ बैकुंठे के रानी बनी...।''

घीसू खड़ा होके उल्लास के हिलोर में पौड़त बोलल ''हाँ, बेटा, ऊ बैकुंठे ना जाई त का, ऊ मोटका मोटका लोग बैकुंठे जाई जे गरीबन के दूनूँ हाथ से लूटेला आ पाप धोए खातिर गंगा नहाए जाला लोग, मंदिर में जल चढ़ावे जाला लोग ?''

सरधा भक्ति के रंग अब बदल गइल रहे । नशा में आदमी अस्थिर कहाँ रह पावेला । अब दुख अऊरी निराश सोचल शुरू हो गइल । माधव बोलले, ''बाकिर दादा ऊ बेचारी भर जिनगी बड़ा नू दुख भोगलख.... केतना दुख भोग के मरल बेचारी....।

माधो अपना आँख पर हाथ धके लागल रोए, चिल्ला-चिल्ला के रोए लागल । घीसू समझावे लगले, ''काहे रोअताड़ बेटा, तोहरा त खुश होखे के चाही कि ओकरा दुख से मुक्ति त मिल गइल.... जंजाल से त छूट गइल.... बड़ा भाग्यवान रहे जे एतना जल्दी माया मोह के डोरी तूर के चल गइल ।''

दूनू जने खड़ा हो के गाना गावे लागल-

''ठगनी काहे नैना झमकावे....।''

सब पीअकड़ा इहे लोग के निहारत रहे आ दूनूँ जना मस्ती में गावत जात रहे । फेर दूनूँ जना नाचे लगले, फान्हबो कइले, कूदबो कइले, गिरतो रहले, ढीमलातो रहले, रंग बिरंग के भाव बनावे लगले नौटंकी करे लगले आ निशा में चूर हो के ऊहवें ढीमला गइले ।

अनुवाद- **श्री गंगा नंदन झा**

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'कफन' कहानी के लेखक के नाँव बताई ?
2. 'कफन' कवना भाषा के कहानी हवे ?
3. 'कफन' के भोजपुरी अनुवाद के कइले बा ?
4. घीसू माधव का खात रहले ?

   (क) भंटा (ख) अलूई

   (ग) कंदा (घ) परोरा
5. प्रगतिशील लेखक संघ के पहिला अध्यक्ष के रहे ?

   (क) प्रेमचंद (ख) सज्जाद जहीर

   (ग) गंगानंदन झा (घ) रवीन्द्रनाथ टैगोर

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रेमचंद के छोटहन परिचय लिखीं ।
2. घीसू के चरित्र-चित्रण करीं ।
3. माधव के चरित्र पर प्रकाश डालीं ।
4. ठाकुर के बरियात में घीसू का कइले रहस ?
5. बुधिया के स्वभाव बताई ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'कफन' काहनी के सारांश लिखीं ।
2. 'घीसू, माधव व्यवस्था के देन हउँवों' - एह कथन के समीक्षा करीं ।
3. भोजपुरी में अनुवाद साहित्य के विकास यात्रा पर प्रकाश डालीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

परियोजना कार्य

1. कवनो भोजपुरी लोककथा के हिंदी भा अंग्रेजी में अनुवाद करीं।
2. 'घीसू, माधव जइसन कवनो पात्र रउवा अगल-बगल में होखे त उनकर चरित्र चित्रण करीं।
3. प्रेमचंद जी के कवनो हिंदी कहानी के भोजपुरी में अनुवाद करीं।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. बसंत कुमार

[मूलरूप से गोपालगंज जिला के खजुहट्टी गाँव के निवासी । अब राँची में रहीले । जन्म 3 जनवरी 1930 के । राँची विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के आचार्य आ अध्यक्ष आ भाषा संकायाध्यक्ष । सेवानिवृत्त होके संन्यासी का रूप में समाज सेवा । भोजपुरी में गीत संग्रह 'लहर-लहर में सावन' आ 'सनेहिया' प्रकाशित । पहिले भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संपादक ।]

अकसरुआ

(संस्कृत के भाण शैली में लिखल भोजपुरी भाण । पृष्ठभूमि से जोर से सीटी बजावत रेलगाड़ी के सड़ाक से निकल जाये के आवाज । एकरा लगले बाद में एगो पुरुष कंठ-)

घुरबहारन- जा पँचबजिओ गाड़ी चल गइल । बरखा-बूनी के दिन बा । बुझाता जे मलिकार का घरे चहुँपत-चहुँपत रात हो जाई । ओहिजा तेज बोखार में डूबल रूपिया मउँसी अकुला-अकुला के हमार पेंड़ा जोहत होई घुरबहारन के गइला हातना देर हो गइल, अबहीं ले ना अइले..... त का करसु -घुरबहारन ? लोग उनका के

www.bhojpurisahityangan.com

चले-चलबलाए दे, तब नूँ ? केहू के नादहा में लेदिए घट गइल बा, केहू के भइँस नादहा के अखाड़ते बीआ, केहूके गाँव के बाजार से कवनो सउदे मँगवावे के बा । हजार गो लोग, हजार गो काम आ एगो घुरबहारन । केकर-केकर काम बजावसु ई ? आपन काम बिला जाव, बाकी लोग के काम बन जाए के चाहीं । .... घर में आज आठ दिन से रूपिया मउँसी बेमार परल बीआ; तबहूँ लोग हमार जान नइखे छोड़त ।

(कुछ करुन आवाज में) अपना जनमें के पहिलहीं बाप के खा गइलीं । छव-सात महीना ले केहू तरे मतारी के आँचर मिलल, ओकरा बाद अपना एकलउता घुरबहारन के छोड़ के उहो सरग सिधार गइली । (कुछ व्यंग्य का साथ) हूँ, जम से बँचावे खाती नाम रखाइल घुरबहारन । मतारी के छोह जे ना करावे ! बाकी घुरबहारन त जम्हुराजो के सरदार निकलले-जनमते बाप-मतारी के खइले आ कुछ सेआन भइला पर जनाना आ बेटा के चबा गइले । ऊ त कहीं, जे मुसमात रूपिआ मउँसी के आँचर के छाँह मिल गइल, घुरबहारन बाँच गइले ।..... बाकी साँच पूछीं त हमरा के चाहत ना रहे । जे हमरा मतारिओ से बढ़ के जनलस-मनलस, ओह रूपिआ मउँसी के कवनो सुख ना दे सकलीं । जिनगी के चालीस बरिस पसेना बहावत हो गइल, बाकी कहिओ ठीक से पेट ना भरल । मलिकार के काम से एको दिन देह ना चोरवलीं, बाकी उनकर करजा माथ पर चढ़ले रह गइल । ......घुरबहारन के सुख चाहे दुख के अब उहे त एगो संघतिआ बाँचल बीआ । अगर उहे ना रही त घुरबहारन के आपन के रह जाई, के डाँटी, के पुचकारी, के लोर पोंछी ?.... बोखार टूटे के नाँवे नइखे लेत ।

www.bhojpurisahityangan.com

एको अधेली पास में नइखे जे किछु दवा-बीरो कराईं । अब तनी झटक के चलीं । मलिकार पाँचो गो रोपेया दीतन त रूपिया मउँसी के डाकदर बाबू से देखइतीं, किछ दवा-बीरो करइतीं त हाली दे ऊ आछा हो जाइत ।

(घटा गरजत बा । बिजुली के कड़कड़ाहट दूर तक ले फइल जाता ।)

....एँ ? ई त घटा गरजे लागल । भंडार कोना से करिआ घाटा उनहल चलल आवता । सावन-भादो के महीना में अइसन अबरखन आ सुखार कहाँ भइल रहे ?... बरिस हे ईनर, बरिस, धरती के झराइल ओठ के तर क द ?

(टिप्-टिप् बूनी परे के आवाज । साथ में हवा के सिसकारी आ मेघ के धीमा गरजन ।)

बाह रे भाग, बूनी त परे लागल । अब हम बीच रहते घेरा गइलीं । कतहूँ लुकाएब ना त पूरा भींज जाइब । हमरा आगा निगिचे में धरीछन बाबा के घर लउकता । चलीं, थोरहीं देर ओहिजे बिलम जाई ।.... बाड़....हो धरीछन बाबा ! तनी हाली दे केवरिआ खोल द हो ।

(केवारी ढकढकावे के आवाज बरखा आ हवा के तेज झोंका के बीच से सुनाई परता ।)

आरे हम हईं हो, घुरबहारन : बदरी बरखा में भींजतानी ।

(पुरान केवारी चरमरा के खुलत बा ।)

(अचरज से) आरे ! धरीछन बाबा, तूँ ?..... (इआदि क के) ओ हो, हम त एकदमें भूला गइल रहीं जे बाबा टटके बिआह क के घर बसवले ह । बाह, तोहार अजगुत रूप त देखत बनता,

www.bhojpurisahityangan.com

ए बाबा ! झुराइल झरकट के लकड़ी अइसन टाँग आ सूखल करिआ चाम पर पिअरी धोती देख के मिजाज सचहूँ लहालोट हो गइल । खोढ़िला अइसन धसल आँखन के सिकुरल कोर पर सुरमई काजर । बुझाता जे धुक-धुकात दीआ पर टेम के करिखा फइल गइल होखे । बिना दाँत के मुँह में पान चाभताड़ त लागता जे झगरू लोहार के भाँथी चल रहल बा । आछा बाबा, हम बहुत देर ले बिलमेंब ना, हमरा के देख के सिटपिटा काहे गइल ?..... ऐं ? का कह ताड़ऽ ? तोहार बतिआ सुनात नइखे, ऐ घुरबहारन-कान से किछ ऊँच सुनाला । ओ-हो-हो-हो ! (व्यंग्य के हँसी के साथे) ई त हमहूँ बूझतानी जे तूँ ऊँच सुने ल । बाकी हमरा नजर में तहार काने आ, आँख, मुँह, हाथ गोड़ आ दिमाग सभ ऊँचे काम करेले सँ ।..... का कह ताड़ऽ ? का करीं, घर में केहू करनिहार ना रहे, लोग बालाजोरी बिआह करा देलस ।

हँ.....हँ, बतिआ सवासोरह आना ठीके कह ताड़ऽ । तोहार दुख भला हम काहे ना पतिआइब । जवान बेटा के घर में कुँआर रखले बाड़... आछा, नगदे कइल ह । मूवे का बेरा घर बसा ले ल । ऐं ? का कहताड़ 'हमरा सामने मूवे के नाँव मत ल.....,नया-नया सादी क के आइल बानीं आ तूँ आजुए असगुन मनावे लगल....?'

ना, ना, के कहता जे तूँ जल्दिए मूँ जइब । अबहीं तहरा देंह में अइसन चर-चर गो मेहरिआ राखे के तागद बा । जम्हुराजो का तहरा लगे आवे में दू-चार बेर सोचे के पर जाई । का कहताड़.... अइसन मत कह ए घुरबहारन, हम त एह सादी में बिका गइली हाँ, बरबाद हो गइलीं । जवनो बाप-दादा के कमाई

www.bhojpurisahityangan.com

रहे, ओकरो के बेंचि के एही में सोवाहा कर देलीं । सउदा बाड़ा महँगा परल हो.....।

सउदा ! (व्यंग्य के हँसी) कवनो फिकिर मत कर, सउदा चोखे मिलल बा नूँ बाबा ! का कहताड़ऽ, 'अगर इहे रहित त अपसोसे कवना बात के रहल ह.... । समुझिह जे नव बरिस के नेउरी बझा के ले आइल बानीं- अबहीं बाड़ा पोसे के परी हो ।'

त नेउरिआ नव बरिस के बीआ नूँ ? फिकिर मत करऽ । छोटहनो नेउरिआ बड़का-बड़का गहुँअन के चबावेली सँ.... । ई त नव बरिस के बीआ ।.... ल, बतबगड़ में नीमनके बतिआ बिसर गइल रहे । तनी हमरा नयकी नव बरसी आजी के देखइब ना, बाबा ! का कहऽताड़ऽ ? भगबे कि ना एहिजा से-ई तोर आजी ना ह, भउजी कहिहे, भउजी ।' गलती हो गइल बाबा, छिमा कर द । तोहार कहनाम एकदम ठीक बा- तूँ हमार बाबा, ऊ हमार भउजी ।.... (कुछ इआद कइ के) ओह, ना बाबा, आज जाए द । फेर कहिओ भउजी के देखे आइब, आज बाड़ा हुलबुली में बानीं । बाहर बरखा छूट गइल । अब चलतानीं- राधा-किसन के ई जोड़ी बनल रहो ।

(दूर से मस्ती में आ अटपटा देहाती सुर में गीत गावे के आवाज धीरे-धीरे नजदीक भइल जाता-)

'नन्हका बलमुआँ ले के सुतलीं अँगनवाँ
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कपार ।
चुप होखु, चुप होखु नन्हका बलमुआँ
बनवारी हो, रहरी में बोलेला सिआर !

अरे, ई त सामने राहता पर तपेसर भइअवा ह- टीसन पर

www.bhojpurisahityangan.com

से चकुनी हाथी लेखा मस्ती में बिहरत आ रहल बा । आज बाड़ा फुलार बुझाता, कुछ बात जरूर बा । माथा पर ई कवना चीज के बड़का मोंटरी लदले आवता । (पुकार के) हो तपेसर भाई, आरे तनी हमरो पर दीठ द हो । तनी बिलम के खइनिओ त खिआव । आज बड़ा मिजाज में बुझाताड़ भाई ! का बात बा ? का कहताड़ ? आज दू मन चीनी, पाँच रोपेआ किलो बिलेक से बेंच के आवतानीं । ढेर दिन पर आज पाकेट गरमाइल बा । हईं ल-तनी मोंटरिआ नीचे धरवा द आ बनाव खइनी ।

(मोटरी हुमच के नीचे धरे के नाट्य)

बाप रे, ई त भाला बड़हू ! अइसन भारी बा जे हमार त नारा उकस गइल । भीतर ई लोहा भरले बाड़ का हो ? अतना भारी मोटरी माथा पर लाद के दू कोस से चलल आवताड़ । का कहताड़ । भारी मत कह ए भाई ! बिलेक हमार लछिमी ह । हमरा खाती त ई रुई लेखा हलुका बा ।

(खइनी थपथपावे के आवाज)

हँ भाई, तोहरा लेखा चानी काटे आइत त दुखे कवना बात के । का कहताड़ चानी काटे खातिर अकिल के जरूरत होला हो, असहीं ना हो जाए ?

(खइनी ओठ में ध के आ थुकर के) - बतिआ त ठीके कहताड़े भइअवा, हम तोरा लेखा अकिल के मोटरी लेके त आइल नइखीं । बाकी हमरा मोंट बुद्धी में ई बात औंटत नइखे- आखिर एतना चीनी बिलेक करे खातिर तोहरा मिल कइसे जाला ? का कहताड़, एकर राज सुनके का करब ? कवनो गुनी अमदी आपन गुन के डगरे-डगरे ना कहत चलेला । बाकी इआर

www.bhojpurisahityangan.com

हव तोहरा से लुका के राखब कहवाँ ? आज का जबाना में कवनो चीज मोसकिल नइखे, ए घरबहारन भाई ! थोड़ देर खातिर ईमान आ सचाई ताखा प ध द बस, चुटकी बजावत में काम निकल जाई । बाकी खबरदार, ईमान आ सचाई के फेर में परल कि ताजिनगी भटकते रह जइब- सूखल रोटिओ दुलम हो जाई ।

तूँ त बड़का गेआन के बात कहताड़ ए तपेसर भाई ! बाकि तोहार लेचर सुने के हमरा पास टाइम नइखे । अपना गेआन आ उपदेस के पेटारी मत खोल, सीधे बताव जे ई सभ हो कइसे जाला ? चीनी के त कोटा बान्हल बा । का कहताड़ ? आरे कोटा-वोटा मुरुखन खातिर बा । हम त जेतना चाहीं, चीनी हँथिआ लीले । कुछ साहेब लोग के पाकिट गरम क दीले : सभ काम अपने से हो जाला । समुझिह जे दस रोपेआ खरचीले त पचास रोपेआ मुनाफा होला । अब एकरा से नीमन, बेझंझटवाला सउदा दोसर का होई, बताव ?

तोहार सउदवा त साँचे नीमन बुझाता ए भाई, बाकिर अकेले रोपेआ गाँजत जात बाड़, इहे खराब लागता । हमार बात मान, गाँव में एगो टरेनींग इसकोल खोल द । हमरा अइसन जाहिल लोग के बड़का कल्यान हो जाई । एमे बीए के डिगरी लेके केतना भाई लोग गली-कूचा छान रहल बा । केहू ओह लोग के पुछनिहार नइखे । पढ़े फारसी, बेंचे तेल, देख भाई करम के खेल । तोहरा से टरेनींग ले के सभे, बड़का-बड़का डाकदर आ परफेसर लोग के कान काटे लागी । आखिर पइसवे के नूँ महातम बा हो । का कहताड़ ? बस अब तूँ असलीअत बूझ गइल भइआ ! इहे बतिआ त हमहूँ बरमहल गूनत रहींले ।

www.bhojpurisahityangan.com

जले बिलेक ना करत रहीं, तले लड़िका सभ भूखे बिल-बिलात रह सँ । मेहरारूओ दूनूँ बेरा बढ़निए से बात करे-रोजे अपना नीमनका में से दस-बीस गो सुनावे । ऊ बराबर इहे दोहरावे-खिआवे ना पिआवे, माँग टीके धावे । अब त समुझिह जे जहिआ से एह रोजगार में हाथ लगवलीं सभ आपरूपी ठीक हो गइल बा । पाका के घर बनाइए लेलीं, दुआर पर दू-चार गो पस होइए गइले सँ, अब ऊहे मउगी बिआ जे हमार चरन पखारेले आ जले गोड़ ना दबावे तले सुतहीं ना देवेले ।

ई सभ भाग के बात ह, ए तपेसर भाई ! भाग के साँढ़ बाड़ एही से तोहरा पर बिलेक माई के किरपा भइल बा । हमरा तोहरा रोजगार में आ धरीछन बाबा के रोजगार में कवनो जादे तफरका नइखे बुझात । फरक खाली अतने बुझाता, जे ऊ बिलेक से मेहरारू उगाहताड़े आ तूँ बिलेक में पइसा उगाहताड़ ।.... आछा भाई, अब हमरा के जाए द, कुछ जरूरी काम से निकलल बानीं । हई ल, मोटरी फेर तोरा मुड़ी पर धर देत बानीं (मोटरी धरे में हुमचे के नाट्य) । आछा, तनी हमरो पर खेआल रखिहे भइअवा ! (खइनी थूके के आवाज) अब तनी हमहूँ डेगारे चलीं । साँझ भइल आवता । गछिए मँहे हमरा जाए के रहता बा । चल हे मन, कहूँ अइसन मत होखे जे तोहरो के दुबर-पातर जान के लोग बिलेक के सउदे बना लेबे ।

(साँझ पहर के चिरइन के सोर । बीच-बीच में गोरू के रँभाइल सुनाई परता आ दूर से बँसुरी के मीठ सुर आ रहल बा ।)

अब त पूरा साँझ हो गइल । चरवाहा भाई लोग माल-गोरू चरा के अपना-अपना घरे लवटल जाताड़े । बाबू के एह गाछी में

www.bhojpurisahityangan.com

अबहिंए अन्हार हो गइल बा । बरखा भइला से रहता त गील होइए गइल बा, भींजल पतइन पर से पानी टघर-टघर के हमरा देह पर पड़ रहल बा !

(कुछ दूर से बहुत करुन आवाज में स्त्री-कंठ के सुसुकल सुनाई परता ।)

ऐ ! ई का सुन रहल बानीं ? कतहूँ अगल-बगल में त दोसर केहू बुझात नइखे । -आछा, हऊ हमरा सामने जे बड़का पीपर के गाछ बा, ओकरा जर तर कवनो मेहरारू बइठल बुझातिआ । ऊजर धप-धप साड़ी । बाप रे, ई त बड़का फेर में पर गइलीं । गाँव-जवार से दूर आधा माइल के हलका में बाबू के ई गाछी फइलल बा । सुनसान गदहबेर बा । हमरा निगिचा दोसर कवनो अदिमी लउकतो नइखे । जरूर ई कवनो चुरइल ह- हमार रहता रोके के सुसुकतिआ ।

(सुसुके के आवाज आउर नजदीक भइल जाता ।)

अब का करीं दादा, लवट चलीं कि आगा बढ़ीं । जे होखे, घुरबहारन के आगा-पाछा के बा । चुरइलिआ मुआइओ घाली त मोंछी पर ताव बा, कवनो परवाह नइखे ।

(सुसुके के आवाज बहुत करीब आ जाता ।)

(अचरज से) आरे, ई का देख रहल बानीं (साँय-साँय आवाज में) ई त छोटकी चाची हईं । मलिकार के मुसमात पतोह । बाकी ई त आज तले अपना घर के चउखटो नइखी लँघले । का बात बा ? ओ हो, जरूर उहे हईं । अब पूरा चीन्हा गइली । बेचारी सादी भइला का दुइए महीना का बाद मुसमात हो गइली । बड़का कुल-खनदान के बेटी ! रूप अइसन कि अन्हारा

www.bhojpurisahityangan.com

घर में अँजोर हो जाय । बाकि अब त ई सभ अकलंक हो गइल बा । घर में सास-ससुर, भसुर, गोतिनी, ननद सभे इनका पर अनेरे किटकिटात रहेला । बेचारी गारी-बात सभ सहेली, केहू के जबाब ना देसु, तबहुँओं इनकर गुजर भइल मोसकिल बा ।.... मलिकार के अँगना के सभ केहू से हमार बोल-चाल बड़ले बा, त काहे ना तनी इनका से चलके पूछीं जे का बात बा ? (नजदीक जा के) चाची, सलाम- हम घुरबहारन हईं, अपने के मजूरा । का बात बा चाची, अपने गाँव-घर से बहरी एह सुनसान बगइचा में कइसे आ गइलीं ? का तकलीफ बा, काहे रोवतानीं ?

(सुसुके के आवाज में अवरू तेजी आ जाता ।)

धीरजा धरीं चाची, अपने के घर के इज्जत के सोहरत सउँसे जवार में बा । अइसन हालत में अगर केहू बाइली आदिमी अपने के देख ली त मलिकार के पगरी नीचा हो जाई । कवनो दुख होखबो करे त अपने धीरजा धरीं, चुप हो जाईं । कवनो तकलीफ के बात होखे, त अपने दिल खोल के कहीं- घुरबहारन के जान सेवा में हाजिर बा । ऐं ? का कहतानीं ? हमरा के......छोड़ द.........जहाँ जा ताड़.........जा ।

ना चाची, ई अपने का कहतानीं ! अपने के अइसन हालत में तेज के घुरबहारन एको डेग आगे ना बढ़ सकसु । अपने के नीमक हमरा खून में बा । का कहतानीं ? आज जान सकलप क के.......चलल बानीं, सतबजिआ गाड़ी के पँएड़ा.....जोहतानीं ।. ....अब जी के का होई ?.....हमरा आगा पीछा के बा ?........मर जाइब त.....सभे जाई ।.......तूँ जा बबुआ........तोहार गोड़ परतानीं .....हमरा के छोड़ द ।

www.bhojpurisahityangan.com

ना चाची, ई त कबहूँ होइए ना सकेला । हमार किरिआ, अपने लवट चलीं । हम अपनेहीं के घरे त जा रहल बानीं । का कहतानीं ? हम कहाँ जाई हो ! .....ओह घर के दरवाजा हमरा खातिर बन्द हो गइल बा ।....कसूर इहे रहे, जे आज सासुओ के गारी हमरा से ना सहाइल । हम अतने कहलीं जे गारी मत दीं । बस, सरग में आग लाग गइल ।.....जादे का कहीं ! तोहार मलिकारे हमरा घेंट में हाथ लगा के घर से निकाल देले बानी । .....अब बताव, हम कहाँ जाईं ? हम सात अभागतिन में एगो अभागत बानीं ।.... बाप मातारी, भाई-भउजाई (पिघलल आवाज में)...... केहू त नइखे, जे एह असरन के सरन देउ । (फेरू सिसुके लागताड़ी) ।

चुप हो जाईं चाची, धीरजा धरीं । हम सभ समझ गइलीं । मलिकार के अइसन ना कइल चाहत रहे । घर के लछिमी के निकाल के केकरा सुख होई ? का कहतानीं ? जे लछिमी होखे ऊ नू ?..... हम त अभागिन दुखिआ हईं । (गला खसखसा जाता,) सभका आँखिन के काँटा ।.... हमरा के के चाही, काहे चाही ?

अपने जे कहीं चाची, अपने के रहन-गुन त सउँसे गाँव-जवार गावेला । बिध-बरह्मा के रेख-तकदीर खराब हो गइल, हो गइल । बाकी हीरा के कोइला के ढेरिओ में राख दिआव त हीरा हीरे रहेला । अपने घबड़ाईं मत । मलिकार खीस-पीत में सभ भुला-गइली हाँ । उहाँ के जरूर पछताइब । (कुछ देख के अचरज आ खुशी के साथ) आहा, हऊ देखीं, राउर दुलरुआ छोटका देवर बबुआ जी अपने के खोजत दउरल

www.bhojpurisahityangan.com

आवतानीं । भगवान के किरपा ।.... अब हमार एहिजा रहल ठीक नइखे । हम रहता बदल के चल जाइब । हमार किरिआ जे अपने घरे ना लवटीं । अच्छा चाची, माफ करीं.... सलाम ।

अब कवनो सुबहा के बात नइखे, हम बँसवारी के आड़ ले के आगे बढ़ अइलीं । का जाने आज केकर मुँह देखके उठल रहलीं हाँ । किसिम-किसिम के आदमी से भेंट हो रहल बा । दुइओ डेग रहता चलल मोसकिल बा ।....गाछी त हेल गइलीं । अब गाँव के सड़क पर आ गइल बानीं ।.... हऊ के ह, जे पीठी पर बभनगेंठरी लदले, मिरजई पहिरले, मुरेठा बन्हले आ लिलार पर बड़का टीका लगवले हमरे तरफ बढ़ल आ रहल बा ? लाठी के टेक के चलता त बुझाता जे एकर सउँसे देंह भहरा के गिर जाई । मलिकार के भुसउल लेखा थुलुर-थुलुर तोन के अपना लतरी हाथ से सुहुरावत आ सनकाह लेखा बुदबुदात, ई के ह भाई ! गाँव के कुकुर एकरा के खदेरत इहाँ तक ले ले आइल बाड़े सँ ।

(दूर से कुकुरन के भोंकला के आवाज सुनाई परता ।)

ओहो, ई त चुल्हाई पाँड़े महपातर हवन । अब बुझा गइल जे जतरा खराब बा । का जाने केकर सराध करा के पाँड़े जी लथरिआत डगरल आवताड़े ।..... पाव लागींले महराजजी, चीन्हतानीं हमरा के ? का कहतानीं ? बराह्मन के असिरबाद के लोग अतना ससता बूझि लेले बा । गिरह में से एको धेला दान-दछिना ना निकली, बाकी असिरबादे चाहीं !

आरे, हम अपने के रमचेलवा हईं महराजजी-घुरबहारन । अतना काहे खिसिआइल बानीं ? का कहतानीं ? अच्छा, तें

www.bhojpurisahityangan.com

हवस ? जीअ बबुआ, नाती-पोता से घर भरो । आरे का पूछले बाड़ । तरेंगन बढ़ई के कारज रहल हा, आंजिए से चलल आवतानी । अब त धरम-करम सभ बिला गइल, घनघोर कलजुग बा, बरामन के महातम अब के समझी ? बाकि ओकर दलिदरा सातो जनम में ना छूटी.... तें देख लीहे ।

काहे ए देवता, अपने सरापत जातानीं ? अपने के बात त बढ़मा के लकीर ह । ई केकर भाग खराब हो गइल बा ? का कहतानीं ? आरे तरेंगना के देख । बाप मर गलहिस । सभ किरिआ करम करा के ओकर परलोक बना देली हँ । बाकि तरेंगना के हिमाकत त देख । एक त आधा पेट खिअवलस ह । पत्तल में सेर भर ले चूरा, आधा सेर ले मूरही आ बीस-पचीस गो पूड़ी- बस इहे पोरसाइल रहे । अब तेंही बताउ, एह जलपान से कहूँ पेट भरो । जब आउरी माँगे लगलीं हँ त उलटे बात सुनावे लागल हा ।..... दान-दछिना जेही-सेही, आ बात करे के दू-दू मन के । अब परलय हो जाई- ई दुनिया रहे लायक नइखे ।

तरेंगन त साँचो बड़ा नजायज काम कइले बाड़े । अब त बड़ा आफत बा । गलती करसु तरेंगन आ ओकर फल भोगे सभ केहू ! रउवे बताईं, परलय हो जाई त एगो तरेंगने ना नू डूबी । हमनी के निस्तार अपनहीं के करे के होई, का कहतानीं ? ..... हमार ई संकल्प बा, जे हम सभका के डुबाइब, केहू खातिर दाया ना करब । सभे छली-कपटी हो गइल बा, केहू सराहे लायक नइखे । घटी-बढ़ी माफ कइल जाय देवता । कम-से-कम अपना रमचेलवा पर त किरपा करीं । अपने कवना फिकिर में परल बानीं ? एगो तरेंगने के बाप के मुवला से का होई ? रोज-रोज

www.bhojpurisahityangan.com

लोग के मुँवही के बा । अपने के दान-दछिना बरोबर फुलाइल रही । का कहतानी ? इहे रहित त अपना राम के दुखे कवना बात के रहल हा । अब त सभ कुछ बदल गइल । पहिले लेखा लोग मुअतो कहाँ बा ? पहिले के लोग धरमातमा रहे- एह नरक-लोक में जादे दिन बिलमते ना रहे । हर साल हएजा, पलेग आवत रहे आ अइसन केतना धरमी लोगन के सीधे सरग पहुँचा देत रहे । अब त का पूछले बाड़ ! हई डकदरवा तबाह क देले बाड़े सँ । केहू के हाली से मुवहीं नइखन स देत । रोजगार पर पाला पर गइल बा । आपन दुख केकरा से कहीं ।

सभ कलजुग के करतूत बा ए महराजजी ! ना त अपने जइसन धरमातमा आदिमी के रोजगार कहूँ पीटाए वाला ह ।

(फेर दू-चार गो कुकुरन के भोंकल निगिचे में सुनाई परता ।)

हई देखीं, तनी बचाईं अपना के, कुकुरा कटाह बुझा ताड़े सँ । का कहतानीं ? मार ससुरन के ! ए लोग के अदिमी नइखे चीन्हात, हम जानुक जनावर हईं । फेरू, चुप ।......

पाँड़ेजी त लाठी ले के ढहत-ढिमिलात कुतवन के लखेदत ओने ले गइले । हमार जान बाँचल । चल हे मन, एह सनीचरा के मुँह से बाँचि के आगे बढ़ ।..... अब मलिकार के दुआर निगिचा गइल । सामने बड़का दलान लउकता । मलिकार अपना ओसारा में चउकी पर बइठल बाड़े । हाथ में गुड़गुड़ा बाटे । खीझिआइल बुझा ताड़े । मलिकिनी कुछ कहे अइली ह त उनका के डाँटि के अपना लगे से भगा देले ह । अइसन हालत में मलिकार लगे जाहूँ में डर लागता । बाकि उपाय का बा ! इहाँ के मरनी-जिअनी में

www.bhojpurisahityangan.com

हमरे ना, हमरा बापो-दादा के साथ देले बानीं, पोसले, पलले बानीं । अब आपन दुख-तकलीफ इहाँ से ना बतिआइब त केकरा से कहब ? आछा, अब डेरइला से काम ना फरिआई । चलीं, उहाँ के मन टोईं.... सलाम मालिक ! हम हईं घुरबहारन । का कहतानी ? कड़के के का बात बा ? तूहूँ हमार कपार खाए आ गइल । कह, कहवाँ चलल हा ?

मालिक...... अपने किहाँ ना आइब त केकरा पास जाइब ? अपने हमार माई-बाप हईं । आजू दू दिन से घर में खरची नइखे, अबरखन का ओजंहे कतहूँ मजुरिओ नइखे मिलत । अपना पेट के ओतना फिकिर नइखे, बाकि रूपिआ मउँसी के दुख सहात नइखे सरकार ! अब ऊ मूवे का किनारा आइल बिआ, हम ओकरा के कुछऊ सुख ना दे सकलीं हजूर ! का कहतानीं ?

'त तूँ चाहत का बाड़ ।'

कुछउ ना सरकार । इहे-आठो-दस गो रोपेआ मिल जाइत त....। का कहतानी ? हमरा सामने अइलहा ढोंग पसारे । तोहार सभ चाल बूझतानी । जनल ह जे मलिकार आपन रोपआ मँगिहें, एही से ओकरा पहिलहीं अइल जाल पसारे । हमरा पाले एको अधेली नइखे । अबहीं तोहरा जनाना के बेमारी में दूध के धोवल दू सइ रोपेआ खरच कइले बानीं, तोहनी के खरची चलावे में डेढ़ सइ देले बानी से अलगे बा । साढे तीन सइ त ई मूरह भइल । एकर सूद दू सइ भइल बा से अलग । साढ़े पाँच सइ रोपेआ पहिले ले आव, फेर कवनो बात कर ।

हम एतना अबहीं कहाँ से देब मलिकार ? मर जाइब । किरपा करीं अपने से लुकाइ के हम काहाँ रहब । जिनिगी रही त

www.bhojpurisahityangan.com

कमा के चुका देब । का कहतानीं ? 'फजूल बात मत बोल, ना त लतिआवल जइब । जादे अधिकई ना करे के । साढ़े पाँच सइ ना त पहिले दू सइ सूद तोहरा काल्ह साँझ पहर ले हमरा घरे चहुँपा जाए के होई । ना त तोहार मड़ई पलानी उजरवा देब, तोहार चल्हाँकी कवनो काम ना करी ।'

गोड़ परतानीं मालिक, हम अपने से झूठ नइखीं बोलत । अपने तारीं चाहे बुड़ाईं -अपनहीं के सरन में बानीं । का कहतानी 'ए कवनो बाड़ऽ सँ रे ? हेकरा के कनइठी दे के दुआर पर से भगाव सँ त रे !.... कवन ? झगरुआ ! चल त, घेंटिआव एकरा के.....। (घिघिआइल आवाज में) हम, हम चलि जात बानीं, मलिकार..... दोहाई हजूर के.... अब, अब मरिओ जाइब त ना.... आइब ......ना आइब माई-बाप.... छोड़वा दीं हमरा के.... ।

हे राम ! झगरुआ त हमार गरदन ममोर के जान लेवे पर तइआर रहल ह । हमरा के घेंटुआ के दुआर पर से खेदि देलस । मलिकार अपना दुआरी पर बइठल हमरा ओरि देखि-देखि के अबहिओं हमरा सात पुहुत के तार रहल बाड़े । मलिकार के ई कवनो नया बात नइखे । केतना बेर घेंटिअवले बाड़न, जे ना कहे के, से कहले बाड़न । मगर हमनी करीं त का करीं ? एको धुर आपन खेत नइखे । बापे-दादा के टाइम से मलिकार के जमीन में झोंपड़ी गिरा के रहतानी सँ । सरन कहाँ बा ? गारी बात अदिमी ना सहो त का करो ? अब हम मउँसी का सामने खाली हाथ लेके कइसे जाईं ? का करीं ? ...(करुन आवाज से) हाय रे नन्हका के माई ! तेहूँ गइले नन्हको के लेले गइले । तें हमार जनाना, मतारी, बहिन सभ कुछ त तेहीं रहिस । कवनो दुख तकलीफ में हम परीं

www.bhojpurisahityangan.com

त ते हँस के, मुसुका के, बात बना के हमरा दरद के बुझा देत रहिस । तोरा बेमारी में दू सइ रोपेआ खरच कइलीं, कवनो फैदा ना भइल । आखिर हमरा के अकसरुआ छोड़ि के तें चलि गइलिस । घुरबहारन के लोर अब के पोंछी, के इनकर दुख पतिआई ? हाय रे करम ! कहिआ से भाग लवटी ? ई करजा के बोझ, गारी बात, बेइजती.... कहिआ ले सहाई, हे राम !....

(तेज करुन संगीत में घुरबहारन के आवाज डूबि जाता । संगीत धीरे-धीरे मधिमो आ दूर भइल जाता, आ कुछ देर में अलोपित हो जाता ।)

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

बस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अकसरुआ' कवना विधा के रचना ह ?
2. 'अकसरुआ' के रचनाकार के नाँव बताईं ।
3. 'अकसरुआ' के मुख्य पात्र के बा ?

   (क) तपेसर (ख) धरीछन

   (ग) घुरबहारन (घ) फगरूआ
4. तपेसर कवन काम करत रहले ?

   (क) मजदूरी (ख) चीनी के कालाबाजारी

   (ग) नौकरी (घ) व्यापार
5. छोटकी चाची कहाँ बइठल-रहली ?

   (क) गाछी में (ख) मचान पर

   (ग) बँसवारी में (घ) सड़क पर
6. करिया घटा कंने से उनहल रहे ?

   (क) पूरब से (ख) पश्चिम से

   (ग) भंडार कोना से (घ) केन्हुओ से ना

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. छोटकी चाची के हालत का आधार पर समाज में विधवा समस्या पर लिखीं ।
2. धरीछन बाबा के चरित्र चित्रण करीं ।
3. 'अकसरुआ' कवना शैली में लिखल बा ? एह शैली के खासियत

www.bhojpurisahityangan.com

का ह ?

4. घुरबहारन बीमार रूपिया मउसी के देखभाल ठीक से नइखन कर पावत, काहे ?
5. 'घुरबहारन' नाँव काहे धराइल ?
6. घुरबहारन के जिनगी कइसे बीतत बा ?
7. घुरबहारन मलिकार से मिले खातिर काहे बेचैन रहले ?
8. धरीछन बाबा के देख के घुरबहारन के मन काहे लहालोट हो गइल ?
9. 'नव बरिस के नेउरी बभ्भा के ले आइल बानी ।' धरीछन बाबा का एह कथन के का मानी बा ?
10. बेमेल बियाह से का हानि होला ? आपन विचार लिखीं ।
11. 'बिलेक हमार लछमी ह' -तपेसर का एह कहनाम पर आपन टिप्पणी दीं ।
12. 'पइसवे के नू महातम बा ।' -आज का समय के देखत एह कथन पर आपन विचार लिखीं ।
13. चुल्हाई पाँड़े काहे आ केकरा के सरापत रहले ।
14. घुरबहारन पाँड़े जी के सनीचरा काहे कहत बा ?
15. घुरबहारन का बेगारी में का-का करे के पड़ेला ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'अकसरुआ' सामाजिक कुरीतियन के उजागर करता । -एह कथन के पुष्टि करीं ।
2. छोटकी चाची के कथा नारी जीवन के दुःख भरल कथा कह रहल बा । -एह कथन के समीक्षा करीं ।
3. मलिकार घुरबहारन का सँगे कइसन बेवहार कइले ? समाज के एह विषमता पर आपन विचार देत एगो छोट लेख लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

4. 'बेमेल बियाह' भा 'बेगारी' के समस्या पर एगो छोट लेख लिखीं ।

परियोजना

1. अपना शिक्षक के निर्देशन में अपना संघतियन के संगे अकसरुआ के मंचन करीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित'

[सारन जिला के निवासी । जेड.ए. इस्लामिया कॉलेज सीवान में हिन्दी के अध्यापन । भिखारी ठाकुर पर शोध प्रबंध पर पी-एच.डी. । 'बिछऊतिया' कहानी संग्रह प्रकाशित । मूलत: कहानी लेखन । कविता, समीक्षा के क्षेत्र में भी लेखन । समीक्षात्मक इतिहास के एगो किताब प्रकाशित ।]

वाय टू के

डॉ. भास्कर कंप्यूटर के अपना वर्ग में पढ़ावत रहस-हमनी आज कम्प्यूटर युग में जी रहल बानी जा । एगो अइसन युग में जेकरा के जटिल यांत्रिक युग कहल जा सकेला । अब भूत, भविष्य आ वर्तमान अपना हाथे में बुझाता । मानसिक आ शारीरिक मेहनत के जरूरत नइखे । कम्प्यूटर के रूप में एगो अइसन जिन्न हमनी के वश में बा जवन पलक झपकते सब काम करे खातिर तइयार बइठल बा । अलादीन मतिन अंगूठी रगड़ीं, यानी बटन दबाईं, रोबोट् का रूप में लोहा के सेवक रउरा सामने

www.bhojpurisahityangan.com

खड़ा मिलिहें । इनका के कठिन-से-कठिन काम दीं, जो ना करस त जे कहीं से !

अइसहीं दोसर बटन दबाईं आ दुनिया के चप्पा-चप्पा के हाल जान लीं । तोहनी पढ़ले होखबऽ कि अमेरिका के भारत में पाकिस्तानी घुसपैठ के खबर तबे से रहे जब से ऊ शुरू भइल, काहे कि एह घरी ओकरा नजर में इन्टरनेट पर अफगानिस्तान, इराक, भारत आ पाकिस्तान खास क के बा, बाकी ऊ काहे के बतावे जाव ? जो बताइए दीत त कारगिल के लड़ाई रोकवावे में बिचउलिया के कूटनीतिक भूमिका भला कइसे निभा पाइत ?

तीसर बटन दबाईं आ नाच, गाना, खेल, सिनेमा के सँउसे दुनिया टी.वी. के पर्दा पर पसरल मिली । कम-से-कम समय में जानकारी आ मनोरंजन जवन चाहीं, तवन करीं ।

अतने ना, जे कम्प्यूटर से पूछब कि प्रेमचंद से संबंधित साहित्य कहाँ-कहाँ उपलब्ध बा त ऊ दुनिया-भर के लाइब्रेरी के जानकारी पल मात्र में दे दी । ईहो बता दी कि कहाँ-कहाँ अभी एह पर आउर काम हो रहल बा ।

तोहनी के दिमाग एतने पर ऊभ-चुभ करे लागल होई बाकी बाह रे कम्प्यूटर के दिमाग ! ओकरा मेमोरी में कवनो चीज फीड क दीं यानी डालत जाईं कि हई इयाद क ले, हइहो आ हइहो सब, फेर अपने चद्दर तान के सूतीं । जब चाहब राउर इयाद करावल चीज ऊ एक सिरे से उगिल दी । बा नू कमाल के बात ?

बाकिर माने के पड़ी कि ईहो मशीन आदमिए के दिमाग के उपज बा । कवनो बंगला कवि अइसहीं नइखन कहले कि-

www.bhojpurisahityangan.com

'मनुष्य तू सबसे ऊपर, तोहरा ऊपर केहू ना !'

त अइसन कम्प्यूटर मशीन बनावे के खेयाल ईसा के 3000 साल पहिले एबाकस नाम के एगो आदमी के दिमाग में आइल रहे, बाकी ऊ रूप ग्रहण कइलक-उन्नीसवींए सदी में। एहू में पहिला इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर एडवेक जॉन वॉन न्यूमैन द्वारा जा के 1952 में बनावल जा सकल। एकरे उन्नत रूप के कमाल के बात हम अभी बता अइनी ह।

एह तरह से द्रव्य आ शक्ति के अन्त: संबंध के सूक्ष्मतम ज्ञान आ ओकरा पारस्परिक रूपांतरण के सर्वोच्च क्षमता पाके आज के मनुष्य सीधे विधाता से होड़ लेवे जा रहल बड़ुए।

कहे के ना होई कि वाय टू के के असली समस्या लगभग 48 साल पहिलहीं के बा। अचरज बा कि आकाश-पाताल एक करे वाला कम्प्यूटर-वैज्ञानिक अड़तालीस साल के आगे के गणना ठीक से ना कर सकलन जबकि भारतवासी पंचांग बनावत खानी हजारन साल के हिसाब-किताब लगा के बइठ गइल बाड़न। साफ बा कि कम्प्यूटर-निर्माता के दिमाग में मानव कल्याण के मूल प्रेरणा के बजाय कम्प्यूटर के उपभोक्ता सामान में विकसित करे के इच्छा जादे प्रबल रहे।

डॉ. भास्कर कम्प्यूटर स्क्रीन पर अब कुछ डाटा लिखे लगलन। एने पिछला बेंच प बइठल राकेश के आँख बोझिल होत-होत झँपा गइल। ऊ काँचे नीने ना खाली क्लास-रूम से दोसर दुनिया में पहुँच गइलन बलुक बीसवीं सदी पार क के एकइसवीं में साँस लेवे लगलन। उनकर दिमाग गँउजात-गँउजात चक्कर खाये लागल। बुझाय, जनुक धरती हिलतिआ। अबे

www.bhojpurisahityangan.com

ज्वालामुखी फूटी आ ओकरा लावा से सँउसे संसार के लोग तहस-नहस हो जइहन ।

ओने डॉ. भास्कर अपना में मगन आपरूप बोलत जात रहस । एकइसवीं सदी के सुनहरा सपना देखेवाली दुनिया के सामने वाय टू के के रूप में आखिर ई कवन परलय आ गइल भाई ? एके पहिले हमनी समुझत चलीं स । वाइ टू में वाइ के अर्थ ह ईयर (वर्ष) आ टू के अर्थ ह टू किलो यानी दू सहस्राब्द । एह तरह से ई दू हजार साल समस्या बा । एके सहस्राब्दी के खटमल भा पिलुओ (मिलेनियम बग) कहल जा रहल बा । जो एह समस्या के समाधान यानी वाय टू के रेडी ना भइल त जइसहीं घड़ी के काँटा दू हजार पार करी, दुनिया के अनगिनित कम्प्यूटर ठप्प हो जइहन स भा कहीं, पगला जइहन स । ओकनी के स्मृति (मेमोरी) कुंठित हो जाई आ उन्हन से जोड़ाइल एगो बहुत बड़ा विश्व-तंत्र तहस-नहस होखे लागी ।

एगो लड़िका खड़ा होके बोलल -'बाकी वाय टू के समस्या ह का । तनी साफ-साफ समुझावल जाय सर !'

डॉ. भास्कर ओकरा जाने के उत्सुकता पर खुश होत हाथ के इशारा से तनिक धीरज धरे के बात कहलन आ आपन बात आगे बढ़ावत गइलन-

असल में 'वाय टू के' समस्या कम्प्यूटर बनावे वालन के अदूरदर्शिता के कारण रह गइल एगो त्रुटि के दुष्परिणाम ह । बात खुलासा ई बा कम्प्यूटर के अधिकतर प्रोग्रामिंग तारीख के हिसाब से होला आ नियम का मोताबिक ओह में अगिला तारीख सब अंकित हो जाला । एह घरी कम्प्यूटर तारीख, महीना आ साल

www.bhojpurisahityangan.com

दू-दू अंकन में लिखेला। सन् चार अंक के बजाय दू गो आखरी अंक में लिखल जाला। जइसे -'एक जनवरी उन्नीस सौ निन्यानबे के लिखल जाई 01-01-99। एह प्रक्रिया से कम्प्यूटर एक जनवरी दू हजार के लिखल 01-01-00 बाकी कम्प्यूटरी माने होई एक जनवरी उन्नीस सौ। काहे कि 99 के बाद अपने आप 00 आई बाकी पिछला अंकन खातिर कम्प्यूटर में भरल गइल समझ जइसे के तइसे बनल रही। माने 99 यथावते रही। अइसन हालत में कम्प्यूटर या त हमनी के पूरा आर्थिक भा तकनीकी तंत्र के 100 साल पीछे ले जाई भा जदि एह में सौ साल आगे के तारीख 'फीड' कइल जाई त ऊ ओके 'बोगस' यानी जाली करार दी।

लड़िका हँसे लगलन स। डॉ. भास्कर क्लास के फेर सीरियस बनावत आगे बढ़लन-

जी हँ, एगो जाँच में कम्प्यूटर से जुड़ल 75 क्लीनिक एक साथे बंद हो गइल रहे, जब ओह में 2 जनवरी 2000 फीड कइल गइल। कम्प्यूटर साफ बतवलक कि ई तारीख 'बोगस' बा। काहे कि ओकर क्षमता के सीमा सन् 1900 बा। एकरा आगे ओकरा खातिर काम कइल संभव नइखे।

ओने आधा सूतल-आधा जागल राकेश के दिमाग कम्प्यूटर कृत मशीन मतिन चले लागल। उनकर पपनी आ भौं दूनो हृदय-गति नापे के मशीन से उकेराइल ग्राफ नियर कबो ऊपर जाये कबो नीचे, कबो जल्दी-जल्दी ऊपर नीचे होखे। ओंठ तिले खिले, तिले बन्द होखे आ तिले कुछ स्फुट शब्द निकाले। असल में ईहे ऊ स्थिति ह जब आदमी सपना के दुनिया में घूमे लागेला

www.bhojpurisahityangan.com

आ सपना में ऊहे सब चीज उल्टा-सीधा आगे-पीछे देखाला-जनाला जवन वास्तविक दुनिया में मनई देखले-सुनले रहेला । आ इहाँ त सीधे डॉ. भास्कर के लेक्चर अबाध गति से क्लास-रूम में जारी रहे । राकेश के कान में ई आवाज ओइसहीं जात होई जइसे कवनो रेडियो बहुत लो वाल्यूम से दूर कहीं बाजत होय । आँख के सामने सिनेमा के रील नियर कम्प्यूटर के बात से मिलत-जुलत सीन चले लागत होई, कबो कुछ देखात होई- कबो कुछ । ऊहो उल्टा-सीधा, आधा-अधूरा बाकी जल्दी-जल्दी । जइसे कवनो तस्वीर चलते-चलते थम जात होय आ ओही पर दोसर तस्वीर उभर आवत होखे ।

वोइसे बोलत त डॉ. भास्कर रहस बाकी राकेश के सपना में बुझाइल कि ऊ, 'वायस ऑफ अमेरिका' सुनत होखस । अगल-बगल के साथी उनका के सूतत देख के मुस्कियाय लागल रह स बाकी अनुशासनप्रिय डॉ. भास्कर के डरे केहू के कुछ कहे के हियाव ना पड़त रहे । राकेश के सपनलोक में न्यूजरीडर बोलत रहे -'आज दुनिया में हड़कम्प मचल बा, अमेरिका में सबसे अधिका, जहाँ हर चउथा आदमी डेराइल बाड़न । सम्पन्न लोग शहरन के छोड़ के गाँवन का ओर भाग रहल बाड़न । डेजर्ट न्यूज सलाह देले बा कि घर से दुराहुत कवनो बगइचा में रहीं आ दूध वगैरह खातिर बकरी पोस लीं । अमेरिका के कम्प्यूटर सलाहकार 'जिस लार्ड्स' के हिदायत बा कि बड़ शहरन के 50 किलोमीटर के आस-पास के निवासी आपन जमीन बेच के छोट जगह चल जाव आ नई शताब्दी के आस-पास कवनो सफर मत करो । सुने में आइल ह कि कईक लोग आपन यात्रा रद्द कर चुकल बाड़न ।

www.bhojpurisahityangan.com

खाये वाला भा रोज-रोज के काम आवेवाला चीजन के भंडारन करीं, काहें कि बड़ शहरन में दंगा होई, बैंक आ दोसर वित्तीय कम्पनी दिवालिया होइहन स, खाद्य-वितरण में गड़बड़ी होई आ शेयर दलाल बर्बाद हो जइहें। अमेरिकी सरकार अइसन आशंका के लेके सेना के सतर्क क देले बा, नेशनल गार्ड के बहाली शुरू बा। अइसन लागऽता कि जइसहीं सन् 2000 के सुबह लोग आँख खोली चारों तरफ लूट-पाट, दंगा-फसाद मचल होई। सब प्रपंच अस्त-व्यस्त हो गइल होई आ कचहरियन में मुकदमा के भरमार होई। इंटरनेट के ताजा सूचना के अनुसार दुनिया-भर के सरकारन के अइसन मुकदमन पर लगभग 1000 अरब डालर खर्च करे के पड़ी। अमेरिका त अपना बजट में एह खातिर बहुत बड़ राशि के प्रावधानो कर चुकल बा।

राकेश सपने में ट्रांजिस्टर ऑफ करे के चहलन तले उनका आँख तर टी.वी. पर जपानी चैनल चले लागल। सीरियल के शीर्षक रहे 'टाइम बम 2000' ऊ देखलन जापान में नाटा नाटा नकचिपटा लोगन के भीड़, देह पर देह छिलात रहे। कहीं लिखल रहे इहाँ 80 प्रतिशत लोगन का काम कम्प्यूटरे से चलेला। सामने एगो कम्प्यूटर कम्पनी, जवना पर फेल के बोर्ड लिखल रहे। एगो बैंक जवना पर दिवालिया लिखल रहे। लोग प्रर्दशन नारेबाजी आ पथराव करत रहस। अस्पताल में रोगी चिल्लात-मरत। डॉक्टर घबड़ाहट में! देखेवाला कम्प्यूटर मशीन नाकाम! टेलीफोन, रेडियो, टी.वी. खामोश! लोग विचित्र हाव-भाव आ झुँझलाहट में। बिजली गुम। नगर-गाँव भयानक अन्हार में! गली में पुराना जमाना नियर चमगादड़ उड़त, उल्लू बोलत आ भूत-प्रेत नाचत!

www.bhojpurisahityangan.com

रासायनिक कारखाना सब चरमरा के बन्द होखत ! जहरीला गैस रिसत आ साँस लेते आदमी पटपटा के धरती धरत ! चारो ओर दंगा-फसाद, छीना-झपटी, लूट-मार, अकाल-भुखमरी आ तबाही ।

राकेश के साँस तेंज-तेज चले लागल । ऊ घिघिआय लगलन । बगल के लइका उनका के झकझोर के उठइलन सँ । डॉ. भास्करो के ध्यान ओने गइल, ऊ उनुका के बाहर जाय के हुकुम देलन । आँख मीसत, डेरवना सूरत लेले राकेश बहरी अइलन । नल प जाके मुँह-आँख धोअलन सामने फइलल मैदान रहे । ओकरा ओने बड़-बड़ मकान । मैदान में भईंस चरत रही स । सड़क पर आवाजाही रहे ।

राकेश के दिमागी तनाव कम भइल । टँगाइल साँस नीचे लवटल । ऊ बुदबुदइलन- अपन देश 8 मई 1999 के परलय के भविष्यवाणी जब गंगा नहा के आ मंदिर- मस्जिद में पूजा-इबादत से काट सकेला त हई मशीनरी परलय के त ओकरा पतो ना होई ! ऊहे जानकार पंडीजी आ अनजान देहाती वाला बात । एके नदी हेलत पंडित जी के गोड़ पत्थल के हो गइल आ देहतिया के जइसन के तइसन सुभगे रहल ।

ओने डॉ. भास्कर अपना लेक्चर के दौरान राकेश के सूत जायेवाली बात के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करत मने मन हिसाब लगवलन कि एह गूढ़ विषय से दोसर लड़िकन पर का प्रभाव पड़ल बा ? ऊहो ऊब के सूते के स्थिति में त नइखन स ! काहे कि राकेश के निकलते तनिक फुर्सत पाके तड़ातड़ लइका स अंगइठी-जम्हाई लेवे लागल रह स । ऊ जाँचे खातिर एगो लड़िका से भारत पर पड़ेवाला प्रभाव के अनुमान पुछलन । लड़िकवा

www.bhojpurisahityangan.com

गंभीर भाव से जबाब देलक-

"वाय टू के समस्या से भारतो में कम्प्यूटर-संचालित बैंक में सन् 2000 के कुछ क्षण पहिले जमा राशि आ लेहल ऋण-राशि का से का हो जाई । 1999 में जमा कइल गइल पइसा के सौ साल के ब्याज बैंक के देवे पड़ी भा जे कर्जा लेल गइल होखी त जनता के सौ साल के ब्याज बैंक में भरे पड़ी । शेयर बाजार के व्यापार-पटल (ट्रेडिंग-स्क्रीन) गलत भाव देखावे लागी । कुल्ह बाजार-व्यवस्था तीन-तेरह हो जाई....।"

डॉ. भास्कर 'थैंक्स' कहत आपन पढ़ाई निष्कर्ष का ओर मोड़लन- 'ओह समय त ई सोचल गइल कि ईस्वी सन् के चार अंक साफ्टवेयर में शामिल क के बेकार के खरचा काहे बढ़ावल जाव ? जे उनका मन में एह घटी-नफा से अलग सुखद भविष्य के सपनो रहित त एह त्रासद स्थिति से दुनिया साइत बच सकत रहे । एह से ई त्रुटि तकनीकी ओतना नइखे जेतना अवधारणामूलक, क्षणवादी सोच आ लाभवादी मानसिकता के परिणाम । आवे वाला समय में अइसन अर्थप्रधान प्रवृत्ति के का नतीजा निकली, एकर गहिरा संकेत एह 'वाय टू के' समस्या से मिलता । अभी अतने । निराकरण पर बात दोसरा दिने । तत्काल गौर से पढ़े खातिर धन्यवाद.... बस ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'वाय टू के' कवना विधा के रचना ह ?

   (क)कहानी (ख) निबंध

   (ग) फीचर (घ) संस्मरण

2. 'वाय टू के' के लेखक के बा ?
3. 'वाय टू के' कवना प्रकार के कहानी ह ?

   (क) ऐतिहासिक (ख) सामाजिक

   (ग) पौराणिक (घ) वैज्ञानिक

4. 'हमनी का आज कवना युग में जी रहल बानी ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ. भास्कर अपना वर्ग में का पढ़ावत रहस ?
2. कम्प्यूटर के आविष्कार कब हो सकल ?
3. राकेश सपना में का देखत रहस ?
4. राकेश के सपना में न्यूज रीडर का बोलत रहे ?
5. लड़िका डॉ. भास्कर से का जाने के चाहत रहे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'वाय टू के' कहानी के सारांश लिखीं ।
2. 'वाय टू के' कहानी के आधार पर कम्प्यूटर के पहुँच के बारे में बताईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

3. 'कम्प्यूटर' में 'वाय टू के' के कारण कवन-कवन गड़बड़ी के आशंका रहे ? कहानी के आधार पर बतलाईं ।
4. कहानी के आधार पर राकेश के सपना के बरनन करीं ।

परियोजना कार्य

1. कम्प्यूटर के मुख्य पार्ट-पुर्जा के नाँव लिखीं ।
2. कम्प्यूटर के कार्य प्रणाली पर एगो रिपोर्ट बनाईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. जितराम पाठक

[भोजपुर जिला के निवासी आ आरा के जैन कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक रहीं । अक्खड़ आ उद्‌भट विद्वान । हिन्दी-भोजपुरी में कविता-निबंध आ समीक्षा लेखन । भोजपुरी में 'ललित निबंधावली' आ 'पुरइन के पात' प्रकाशित आ प्रशंसित । 'भोजपुरी साहित्य' नामक पत्रिका के बरिसन तक संपादन-प्रकाशन ।]

पनही

ओह दिन आँगन में रोशनी घाम तापत बइठल रहलीं जा । बगले में श्रीमती जी पान बनावे में लपटाइल रहली । हम कहलीं, -'तू अजब पनही बाड़ू।'

श्रीमतीजी कनखी से तकली आ कोर के क्रोध-कटारी मारत कहली, 'हाँहीं, हमरा ई सब नीक ना लागे ।'

बाकी कटारी के तरख-तेज धार के छीलनि हमरा नीक लागल । उटकेरे में मजा भेंटाये लागल । कहलीं -'काँहें ?'

बहुत देर ले ऊ मौन व्रत पर एड़ियाइल रहली आ हम

www.bhojpurisahityangan.com

तड़िआवत जात रहीं । हमरा रस मिलत रहे । फेरू उदबेगलीं, -'बोल ना ? काँहें नीक ना लागे ?'

बाकी एक चुप से ऊ हमरी नियन सइ बकता के हरावत जात रहली ना रहाइल त कहलीं, '-आजु मौनी अमवस्या ह का ?'

गरजि के कहलीं, 'बोलि देबि त ओने मौनी अमवसा लागि जाई ।'

'नाहीं बोल ।'

'ईहे नू सुने के चाहत बानीं जे रउआ बड़ पनहा बानीं ।'

साँचो मौनी अमवसा लागि गइल । सोचे लगलीं-पनही के मरद पनहा होई । होखे भा मति होखे, आजु ऊ पनही आ हम पनहा । पनही माने पान खाये वाली आ पनहा-पान खायेवाला । पान हमनी के दूनो बेकति खाई लें एहसे ऊ पनही भइली आ हम पनहा भइलीं । पनही माने औरत,मेहरारू,स्त्री-जाति आ पनहा माने मरद,पुरुष जाति ।

कवनो भोजपुरी मेहरारू के मुँहें सुनले रहीं कि मेहारारू त मरद के पाँव के पनही ह । पनही पाँव के सरजाम होले । पाव के सिंगार आ सुरक्षा पनही से होला ? पनही भोग के जिनिस ह । पनही अँवासल जाले, पेन्हल जाले । मेहरारूओ तब त भोग के जिनिस मानल जाई । जबले जीव-जान रहेला, पनही हबेखल जाले । आ मेहरारू ? मेहरारू जिनिस मानल जाय त गोटहन गलती होई । मेहरारू मेहरारू ह । ऊ जिनिस नियन हबेख में, भोग के योग में ना आई । दिन-राति भोग के योग खरहेटाई त रोग के कमी ना होई । मन, तन आ समाज में बेढंगापन आ जाई ।

www.bhojpurisahityangan.com

जेकरा ढंग ना-ढवाल, ओकर होई बुरा हाल । बेड़ा गरक हो जाई, जीवन नरक हो जाई ।

पनही चमरूआ जूता के कहल जाला । चमरूआ माने चाम के बनल कपड़ो के बनेला जूता । प्लास्टिक के जूता बने लागल,बाकी जूता माने चाम के जूता । जब जूता बने लागल त चामे के बनत रहे । जूता त चामे के जूता के नाँव रहे । चमरूआ माने चमार के बनावल जूता । जूता चमारे बनावे ले दोसर जाति जूता ना बनावसु । बाकी नया जमाना में बड़ा घालमेल भइल बा । बाटा, दयालबाग आ अवरू बड़का लोग चमार के पाँति में आ गइल । चाम के काम कइला से एहलोग के चमार कहे में आहस लागता । जूता के जवार में कपड़ा आ प्लास्टिक के घुसपइठ लेखा एहू लोग के घुसपइठ भइल त केहू जीभि ना हिलावल ।

पनही के पँजरा दोसरा के पयसार नइखे । पनही, चाम के आ चमार के बनावलि । बा केहू टाटा भा बाटा जे पनही के बाजार में घुसपइठ करे ? कपड़ा भा प्लास्टिक के हिम्मति नइखे जे पनही उठावसु । एह में घुसपइठ के मोका नइखे । पनही भोजपुर के आपन पहिरन ह । भोजपुर आ पनही घुसपइठ के ना सही । ई दूनो जवन बा, तवने रही ।

सुनले रहीं जे विदेश में छव महीना में चमकत कार आ साल भर में छमकत नार के बदलि लेबे के चलन आ रहनि बा । त जूता कतना दिन में बदलात होई । शायद रोज-रोज, भा दिन में दुइओ बेर भइल,त कवनो हरज नइखे । नया देखि के भोग उभरता । भोगे के रोग से विदेश में 6 महीना में कार आ साल भर

www.bhojpurisahityangan.com

में मेहरारू बदले के हुलास हुमचेला । नया देखते मन पन-पना गइल । कतना हबेखि लीं जे मन भरि जाय । बाकी मन भरे ना । रोग जात नइखे । छोड़, ई मेहरारू के दल विदेश में ढेर हो गइल होई । कतने लोग दू-चार बेरि के छोड़ुई कनिआ के कँखिवले होइहें ! मरद आ मेहरारू में नेह के नाता ना होई । जब बिआह के साल भरि के बाद मेहरारू बदले के बा त प्रेम का रही ? प्रेम ना रही त परिवार के गाड़ी कइसे चली ? विदेश में कहाँ चल ता ? भोग के लोग भोग से दबावे के चाहता । कइसे दबी ? आगि से आगि बुताले कि धन्हकेले । मल से मल छूटे ना, बढ़ेला । भोग के सुरसा बढ़तिया । केहू नइखे रोकवइया । केकरा बउसाव बा ?

चमरूआ जूता के अरदुआइ होले साल-छव महीना । सालभर में एक जोड़ा चमरूआ के पिनिसिन देबे के परी । बाकी पिनिसिन देबे में मोह लागेला गाँठ के पूरा ना भइला से पिनिसिन देबे में अनकस होला । चार-छव महीना में पनहीं के सीअनि लरूआये लागी त ई सोचि के जे मुँह मति चिआरे लगले चमार से गँठवा दीहल जाई । चलाव के दाब पर चिहार के चिन्ह उभरते रेड़ी के तेल चटा दीहल जाई । नरम- मोलायम पर कवनो दाब ना लागे । मोलायम रहला से कतहीं नोकसान ना होखे । नरम दूबि के कलहल फुलुँगी लोर्हे के लोभ ऊँट नियन उतानो के झुका देला । हरिअरी लोभ ह । लोभ के लोहा मानहीं के परी ।

पनही में दरकन आवे के आ गइल त कवनो हरज ना, अबहीं छोड़ल ना जाई । चिप्पी लगा के चिहार के मुँह बन्द करा दीहल जाई । फेरू काम चलि भइल । तल्ली खिआ जाई त पुरान

www.bhojpurisahityangan.com

तल्ली लगवा दीहल गइल । काम सँसरि गइल । छोड़े के समरथाइ नइखें । नूँ मन चाहता, नूँ धन चाहता । एड़ी टूटि गइल, चाम गुदरी हो गइल तबो कवनो हरज ना । कोना में रहे द, राति-बिरात बहरिआये के बेरि काम करी । फेंकला से का फायदा ?

जे पनही के जान नइखे छोड़त, ऊ मेहरारू के पुरान भइला पर चहेटि दी, ई नइखे हो सकत । नूँ हूब बा, नूँ हिआव । एजा त भोग के रोग नइखे जे हबेखे के हड़बड़ा होखो । पनही के पिनिसिन देबे के औकातिए नइखे त भोग के रोग उपटी कइसे ? लाचारी, ब्रह्मचारी मानो भा जबन बुझाव मानी.बाकी नया के नखड़ा सहे के हिआव भोजपुर के लहू में नइखे । एहिजा अबहीं परिवार के सूत सटिआइल्ल बा । अलग नइखे भइल छोड़-छाड़ होखे लागी त संस्कृति के सूत छितरा जाई । सूत कमजोर होते तार टूटे लगिहें । भोजपुर के परिवार अभी हगई भुलाइल नइखे ।

'छोड़ दिया,' 'उससे भी बुरा किया' के लोकमत क अंकुसी में अझुराइल भोजपुरी आदमी हबेखल बेकति के छोडि देबे में समरथ नइखे । 'भइल बिआह त होई बिबाह' के पुलुई पर पसरल पुरुष के पसंघे कतना जे उतान के ध्यान आवो । मानीं महराज, चोकर छूटि गइल बा एह भोजपुरी पनही के पँजरा पइठला से । नाहीं त, हमहूँ बड़ा नीक आ ठीक आदमी रहलीं हाँ । एह खंडहर में इमारत के बुलन्दी के धवर-फरिछ जोति नइखे झलकत ? ना, त चश्मा के नम्बर बढ़ि गइल बा, चश्मा बदलवा लीं ।

दूरि के ढोल सोहावन लागेला । केहू-केह एह सोहावन के

www.bhojpurisahityangan.com

चपेट में आ गइल त पनही में एड़ी लगवा के अंगरेजी नकल में परल । तबो एह अंगरेजी चमरूआ में कठकरेजी मिजाज ना आइल । अंगरेजी जूता काठ नियन नीसठ होला । ओह में नरम के सावँग नइखे बइठत । ओकर एड़ी दू इंच ऊपर उपाचल रहेला । जने चली टक-टक । बुझाला जे लोहा सिंह सलामी देवे जात बाड़े ।

पनही नरम होले । हमरा लइकाईं में एगो चमरूआ भेंटाइल रहे । लगवलीं त चीकन-मोलायम लागल । रेंड़ी के तेल पेहम भइल । पनही के पहिरला पर एगो अजबे सुख मिलेला । आनन्द के नरम धार में गोता लगवलीं आ डूबि गइलीं । गोड़ चीकन हो गइल । अतना मोलायम जूता त मिलबे ना करी । आ हलुक अतना जे दिन भरि दउरत रहीं, बुझइबे ना करी जे गोड़ में कवनो चीज बा । भोजपुरी पनही गोड़ के जोड़ में बा । गोड़ आ जूता अलग नइखे । ओसहीं भोजपुरी मरद-मेहरारू के यूनिट एके बा । अलगा होखे के कहीं बाते ना उठी ।

विदेश में छाम-छूम ढेर बा । सब कुछ देखावा के बा । ऊपरी रंग-रूप देखि के मोह में परि जाइब ।..... पइसबि त डरे कठुआ जाईबि । नीचे के हाल-बेहाल । ओसहीं जइसे अंगरेजी जूता के ऊपर रंग-पालिश के चमक, बाकी नीचे अंडरे बास बा । विदेशी माल चमक के चकचबन्ही भरल बा । देसी पनही के जस नीचे तस ऊपर । नीचे ऊपर में भेद-भाव नइखे । सब एक रस । भोजपुरी परिवार के दूनो ओर एके तरह के बा । चारू कोना चउकस । एजा मुखौटा नइखे । छाम-छूम पर रीझेवाला विदेसी जीवन में मेहरारू के कवनो गदान नइखे । नया हबेखीं, पुरान

www.bhojpurisahityangan.com

छोड़ि दीं । पुरान भइला पर छाम-छूम घटि जाला । एह से मन के रीझ कम हो जाला । नया आ छाम-छूम देखते मन में गरमी आवे लागेला । एह से बदलाव बा । भोजपुर में बिआह, निबाह बा । मरद मेहरारू एके गाड़ी के दूगो पहिया ह ।

संस्कृति के फेर बा । मेहरारू गरम बाड़ी त ठीक बा, नरम हो गइली त घर के सानी-पानी में लपटि गइली । लइका-लइकी में घेरा गइली । छोड़े के औकाति नइखे, सावँग नइखे । लोभ एजा नइखे । हबेखल चीज अब पुरान भइल त कहाँ जाई ? रहे दीं,हमार का बिगाड़ी ?

हमार पनही टूटी गइल बा । सोचत रहलीं, बदलि दीं । बाकी सावँग नइखे । ईहो सोच बा कि जे अंगे लागल से संगे चले । संगे जिन्दिगी गुजारि दीं । अब हमरा के छोड़ि के ऊ कहाँ जाई ? जइबो करी त ओकर निस्तार कहाँ होई ? पुरान के गँहकी ना मिले । ना मिली त टूटल पनही घसेटत रह ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

बस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'उदबेगला' के अर्थ होला-

   (क) तंग कइल (ख) खोदल

   (ग) गुदगुदावल (घ) एमें से कवनो ना

2. 'पनही' के लेखक जितराम पाठक कहाँ के रहले ?

   (क) आरा (ख) बक्सर

   (ग) छपरा (घ) सीवान

3. लेखक 'पनही' के केकर प्रतीक मनले बा ?

   (क) पुरुष जाति के (ख) स्त्री जाति के

   (ग) संस्कृति के (घ) औकात के

4. चलाव के दाब पर पनही में चिहार के चिन्ह उभरला पर का कइल जाला ?

   (क) गँठवा दिहल जाला (ख) रेंड़ी के तेल चटावल जाला

   (ग) बदल के दोसर कीनाला (घ) फेंक दिहल जाला ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पनही कवन चीफ़ से बनेला ?
2. जूता के बनावेला ? एह काम में घुसपइठ के का मतलब बा ?
3. 'पनही भोजपुर के आपन पहिरन ह ।' एह बारे में राउर का विचार बा ?
4. परिवार चलावे खातिर प्रेम जरूरी बा । एह दृष्टि से भारत आ पश्चिमी देशन में का अन्तर बा ?

www.bhojpurisahityangan.com

5. 'भोग से भोग के आग ना दबे।' एह बात के समुझाईं।
6. जूता के पेनसिन देला के का मतलब होला ?
7. नीचे लिखल कथन के दु-तीन पाँक्ति में स्पष्ट करीं-
   (क) मोलायम रहला से कतहीं नोकसान ना होखे।
   (ख) भोजपुरी क्षेत्र के परिवार अभी हराई भुलाइल नइखे।
   (ग) बिदेसी संस्कार में छाम-छूम ढेर बा।
   (घ) पुरान के गँहकी ना मिले।
8. योग के रोग कइसे उपटेला ?
9. चश्मा बदलला से का मतलब बा ?
10. अंगरेजी जूता के का खासियत होला ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'मेहरारू के जिनिस मानल जाय त गोटहन गलती होई।' एह बात के अपना शब्दन में बतलाईं आ गलती समुझाईं ?
2. 'मरद मेहरारू एके गाड़ी के दू गो पहिया ह।' एह बात के स्पष्ट करत एगो अनुच्छेद लिखीं।
3. 'पनही' का माध्यम से लेखक का कहे के चाहता ? लेख के आशय के समुझावत एगो छोटहन लेख लिखीं।

परियोजना कार्य

1. रउरा गाँव में केहू जूता बनावे वाला होखे त ओकरा कवन-कवन सामान आ औजार के जरूरत पड़ेला- पूछ के एगो सूची बनाईं।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. आशा रानी लाल

[बलिया (उ.प्र.) के निवासी । कॉलेज के प्राचार्या । भोजपुरी में निबन्ध आ रेखाचित्र के लेखन । भोजपुरी में नारी-विमर्श के लेखिका । प्रकाशित किताब- ए बचवा फूलऽ फरऽ, हमहूँ माई घरे गइनी, ढिठौना, माटी के भाग ।]

ईया

बलिया जिला में एगो गाँव बा सौंरूपुर । एही गाँव में हमार लरिकाईं के घर रहे । हमरा घर के आगे एगो गड़ही रहे । दुआर त खूब बड़ा रहे आ ओतने बड़ रहे बरगद के पेड़ । पेड़ एतना मोट रहे कि का जाने एकर केतना मोटे-मोटे सोर गड़ही में लटकल रहे, आ केतना ऊपर रहे, इयाद नइखे । हां दूअरा पर ऐसे छाँह खूब रहत रहे आ गरमी के दिन में एह फेड़ के नीचे खटिया बिछल रहत रहे । बाकी हमनी के खाली एकर गोदा खावे में मन लागे, आ कबो-कबो पत्ता मे दोना बनावत रहिंजा आ ओही दोना में जामुन रख के खातो रहिंजा । हमरा भईया के मछरी मारे के

www.bhojpurisahityangan.com

बड़ा चाह रहे, त ओही गड़ही में बंशी लगावत रहन । जब खूब घाम हो जात रहे त ईया के बोली गरजे लागी । ऊ कहिहन -भागस रे ओही, गड़हिया में बुढ़वा रहेला, आ एही किनरवा भूतो नाचेला । ऊ भूतवा पकड़ ले जाई । ना आवे पर ईया एतने ना डरवावत रही बाकि इहो कहत रही कि इहे बिन्दुआ (पुकार के नाँव)बड़ा बिहिया बिया, ई आ जाइत त लइकवो आ जइतनसन । चाहे हम कवनो गलती ना कइले होखीं बाकी जेतना खराबी होखी सबके कारण हमहीं रहीं- काहे कि हमार ईया अपना पोता लोगन के त कुछउ ना दोष दिहन, बेटी (पोती)खराब होले,ई उनका शब्दकोश में खूब रहे ।

गाँव में से बयना में कवनो मिठाई आई त ओकरा के जतन से खूब चोरा के ईया राखत रही । चाहे हम केतनो मांगब ऊ हमके ना मिली, कहिहन कि बयना ना खायेके रे, आ तनकी सा आगी में डाल के सब रख दीहन, आ जब भईया खेल के अइहन तबे उनका के देत रही । घर के पीछे एगो स्कूल बनल ओनइस सौ सैंतालिस में, काहे कि हमरा इयाद बा कि खूब दिया जरल रहे स्वतंत्रता दिवस पर, तब हमरा बुझाईल कि हमनी के स्वतंत्र हो गइनीजा आ मिठाई मिलता । स्कूल से घरे आइजां त ईया के डरे लुका के अपन-अपन बस्ता ध के, भईया साथे खेले जाये के जइसे जइयारी करेके सोचीं कि 'ईया' के बोलिया गूंजे लागी-चलल, ए बेरा ले स्कूल में रहे, अब बेटवन साथे खेले जाई । अरे, एगो बेटी बा त का रसबिहारी लाल (हमार बाबूजी) के नउवाँ डूबा दी । कहते-कहते भूजा भईया आ बबुआ के भर पाकिट दे देत रही, त हमरा के एक मुठटी दे के कहत रही, जो

www.bhojpurisahityangan.com

जो दूअरा पर लकड़ी धइल बा ले आके चउका में रख दे । महतारी त बोलत नइखे, आ ई बा कि बेटवा बनल बिया ।

स्कूल से अइला पर रात में जब हम लालटेन लेके, अपन घर के पढ़ाई शुरू करब,त ईया कहिहन- बड़ा पढ़वइया बनल बा । माटी के तेल त अँजोर खातिर हइये नइखे, आ एकरा पढ़े के लालटेन चाहीं । अगर भईया साथे पढ़े बइठ गइलन त ई बात त ना सुने के मिली बाकी ई जरूर कहिहन कि हमरा लरिकवा के बतावत नइखे, चोरा लेतिया, बुझाता इहे पढ़ी आ बिहारीलाल के अगिला हरे इहे चली । माई से कहिहन कि बेटी टेटी के एतना मत चढ़ाव हो नाहीं त तोहरे नउवा हँसाई, तोहरे चलते एकर मनवा बढ़ल जाता ।

कवनो दिन ना इयाद कइला से अगर भईया के स्कूल में मास्टर साहेब छड़ी से मार दिहन, त उनकर खैर नहींए रहत रहे । ईया के पता चली त ईया स्कूल में पहुँच जइहन । पहुँचते शुरू क दिहन-

तू मास्टर बनल बाड़ । एही खातिर स्कूल बनवाए में हम फेड़ कटवइलीं कि तू हमरा लरिकवा के सटका से मरब, कि ओकर गोहिया उपट गइल बा, ...एही साथे का-का बोलत रही, कि मास्टर साहेब के त नानी याद आइए जात रहे ।

गरमी के दुपहरिया में ईया अपना बँसखटिया पर दलान में सूतत रहली । बाकी ऊ कब सूतत रही आ कब जागल रहत रही ई ना बुझात रहे काहे कि जब ऊ सुतलो रहस त उनका हथवा में बेना चलते रहत रहे । मुँह में दाँत ना रहे त सुतलो में बोलत रही, काहे कि जब साँसिया बाहर आवे त फक्-फक् के आवाज मुँहवा

www.bhojpurisahityangan.com

से आवत रहे। उनका खटिया लगे एगो लोटा रहत रहे, आ हुक्का निगाली त हरदमें राखत रही। ईया के सुतल जानके जब कबो उनका हुक्का-निगाली पिये के मनवो करी त तुरते एक बेना के मार त पड़िये जात रहे आ ऊपर से गारी के बौछार खूब सुने के मिले।

ईया के एगो आदत रहे कि जबे देख ओसारा में खटिया से सट के दासापर बइठल रहिहन, हुक्का पियत रहिहन, आ कुछु-कुछु केहुओ से बोलत रहिहन। ना केहु रही त अपन पोसल सुगवे से कहिहन- का टर-टर करत रहेले, चारों ओरी भात छींट के रख दे तारे, एक दिना ना नहवाई त एके चैने ना मिली। अपने त ऊ दसबजिया गाड़ी आई तबले कुछु-कुछु करत रहिहन आ ओकरा बाद नहइहन, आ नहाए के पहिले पूरा घर साफ करिहन,कहीं कुत्तवा चाहे हमनी के ऊ धूर-माटी उखड़ले रहबजा त पानी से ओके जमा दिहन,आ फिर लिप दिहन। मातादाई, महाबीर जी सबके लिपिहन-पोतिहन,हुक्का के पानी बदलीहन, सुगवा के नहवइहन आ साथे-साथे इहो कहिहन कि मरियो नइखे जात। हमरा जान के ई जंजाल भइल बा। कवनो पथार घामे डाले के रही त डलिहन, आपन बोरसी में आग जिअइहन। एही तरे दस बजे ले सब काम करिहन। हमनी के ना बुझाई बाकिर दसबजिया गाड़ी अइले पर नहइहन आ आगिआरी देखइहन आ पूजा करिहन- "हे मातादाई रने बने जे जहाँ होखे सब के नीके सुखे राख। पंच के भला कर ता पीछे हमरो भला कर, हमरा बाबू भईया के नीके राख, हे मातादाई उनका के बुद्धि द। "कबहूँ दुअरा से कनईल आ अढ़उल के फूल पूजा खातिर हम ले आके रखियो देब, तबो

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा खातिर अपना मातादाई से कबो कुछु ना कहत रही ।

हमार बाबूजी हमरा ईया के अकेल संतान रहलन । एक बेर माई बहुत बीमार रहे त बाबूजी माई के साथे हमनी (दूनोभाई आ हम)के लेके डालमियानगर नोकरी पर चल गइलन । हमनी के तीनों भाई उहें स्कूल में पढ़े लगनी, आ ईया गाँव में अकेले रह गइली । ईया के एगो खूबी अउर रहे कि उनका लगे केतनो साड़ी लुगा रहत होखे बाकी फटलके लुगवा पहिन के दुअरा पर बइठिहन । जब कवनो भीखमंगा उहाँ आई आ कपड़ा ,खाना माँगी त भीख त जरूरे कुछु दिहन, बाकिर ई बात जरूर कहिहन कि हमरा का बा । दसगो पेवना लगा के त लुगरी हम पहिनले बानी । ई बात सुनके अगर बाबूजी खिसिअइहन त ईया कहिहन कि हँ हो, ढेर गरूर मत कर, ढेर बड़-बड़ रजवाड़ा लोगन के राज देखलीं बाकी तोहरा तरे तरे ! हमरा घर के उत्तर वाला घर में एगो आम के लकड़ी के आदमी अइसन बना के रखल रहे । एक दिन हमनी के पूछलीं जा कि ई का ह, त पता चलल कि इनरा के बियाह एही से भइल रहे, आ सदाबरत चलल रहे, आ ई काम बाबूजी कइलन आ खूब लुटवलन, त ईया खिसिया के नइहर भाग गइली, काहे कि ऊ लुटावल ना देख सकत रही ।

एक बेर डालमिया नगर बाबूजी के एगो चिट्ठी मिलल कि ईया बीमार बाड़ी । बाबूजी हमरा के लेके गाँवे अइलन । ईया के बीमार देखके हम खूब रोवलीं आ उनकर दू दिन खूब सेवा कइलीं । उनकर कपड़ा बदललीं, नहवइलीं, उनकर चादर फीचलीं, बार झरलीं आ सब ढील जवन बरवे अइसन उजर रहलनस ककही से झार के साफ कइलीं, फेर उनके लेके बाबूजी के साथे

www.bhojpurisahityangan.com

दवाई करावे डालमियानगर चल दिहलीं । गाड़ी में एगो सीट पर ईया सूतल रही । हम बइठ के उनकर गोड़ दबावत रहीं त सामने के सीट के एगो मेहरारू ईया से पूछली कि 'ई राउर के हई' । ईया कहली कि "इहे त एगो नाक के नकटी हमार नाति बा ।" आ रोवे लगली । सभे केहू हँस देलस । जब एकर माने हमरा मालूम भइल त आज लेके सब दुःख ईया के ना मनला के दूर हो गइल,आ हम सबसे कहलीं कि -'हम अपना ईया के नाक के नकटी हईं ।'

ईया केहू के नाँव सीधे ना बोलत रही, का जाने काहे? उनकर उमीर त अस्सी बरिस से बेसिए रहे, एही से उनकर आदते रहे कि 'सूबा' काका के -'सुगवा' कहें, भईया के लइकी 'नीलम' के 'ललनवाँ', 'शीलू' के 'पीलूवा', हमार लरिका 'बब्बू' के 'बबनवा' -एही तरे सबकर नउवाँ ऊ बिगाड़िए के बोलत रही, काहे अइसन करस ई ना पता चलल। ईया के बक्सा में एगो खूब सुन्दर रंग-बिरंगा साड़ी रखल रहे । एक दिन हम जिद्द करके उहे साड़ी पहिने खातिर माँग लिहलीं । ईया हमरा के ऊ साड़ी त दे दिहली, बाकिर घर में जे हमार पतिदेव सूतल रहलन जाके कहली कि -'ए पहुना,तोहार करम फूटल, कि असवा से तोहार बियाह भइल, सुनतानी कि ई बाजार करेले । अरे ई अपना ससुर के नाँव डूबा देई । घर के पतोहो बजार करेले? हमरा पतिदेव के त कुछ ना बुझाइल बाकिर हमार माई अपन माथा ठोंक के बइठ गइली आ हम उनकर साड़ी ले जाके उनका लगे फेंक दिहलीं ।

ईया के मरला के बड़ा चाह रहे, काहे कि ऊ हरदमें कहत

www.bhojpurisahityangan.com

रही कि 'भगवान के घरे हमार कगदवे भुला गइल बा । का जाने कहिया हमरा के एह दुनिया से ऊ उठइहन, ईश्वरो दुअँक्खी हउवन, अब हमरा जिअला के कवन साध बा । ईया के मरला पर जब उनकर सब कागद पत्तर देखल जात रहे त हमनी के पता चलल कि उनकर नाँव 'पनवासी कुअँर' रहे । हमनी के त उनकर एके गो नाँव जानत रहीं जा -'ईया' ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'ईया' के रचनकार के नाम बताईं ?
2. 'ईया' कइसन साड़ी पहिरत रहली ?
3. 'ईया' केतना बजे नहाये जात रहलीं ?

   (क) दस बजे (ख) चार बजे

   (ग) तीन बजे (घ) पाँच बजे
4. ईया केतना बरिस के रहली ?

   (क) पचास (ख) साठ

   (ग) सत्तर (घ) अस्सी
5. ईया केकरा के बेसी मानत रही ?

   (क) लड़का के (ख) लड़की के

   (ग) दूनों के (घ) केहू के ना
6. 'ईया' केकरा के कहल जाला ?

   (क) माई के (ख) दादी के

   (ग) चाची के (घ) मउसी के

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ईया काहे खिसिया के नइहर चल गइल रहली ?
2. आम के लकड़ी के आदमी काहे के बनवावल गइल रहे ?
3. बयना के मिठाई अइला पर ईया का करत रही ?
4. ईया के दिनचर्या लिखीं ।
5. 'ईया बीतल समय के पात्र हई ।' एह कथन के पुष्टि करीं ।
6. दुआर पर बरगद कक गाछ भइला से का लाभ रहे ?

www.bhojpurisahityangan.com

7. पहिले लोग बेटी के पढ़ावे के ना चाहत रहे, काहे ?
8. लेखिका ईया से लिहल साड़ी काहे उनका लगे फेंक अइली ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'ईया' शीर्षक निबंध में परिवार में लड़की के संगे पुरान पीढ़ी के द्वारा होखे वाला भेदभाव के कलात्मक अंदाज में प्रस्तुत कइल गइल बा । -एह कथन के पुष्टि करीं ।
2. पढ़ल निबंध के आधार पर ईया के चरित्र चित्रण करीं ।

परियोजना कार्य

1. अपना ईया के बारे में लिखीं आ ध्यान से बताईं कि का ऊहो ईया बेटा-बेटी में भेदभाव करेली ?

www.bhojpurisahityangan.com

कबीर दास

[महान संतकवि महात्मा कबीरदास के जन्म काशी में भइल रहे । इनकरे पालन-पोषण एगो जुलाहा का घरे भइल । इनकर समय संवत् 1455 से 1575 वि. तक मानल जाला । कबीरदास के फक्कड़पन आ निर्भीकता साहित्य में बहुत प्रसिद्ध बा । ओह घड़ी के समाज में फइलल बुराई, आडम्बर आ धर्म के नाम पर धोखाधड़ी के कबीरदासजी धज्जी-धज्जी उड़ा देले । कबीर ठेठ भोजपुरी सुभाव में पोंगापंथी लोग के फटकार सुनवले । उनकर अनेक कविता भोजपुरी में आजो उपलब्ध बा, जबकि पच्छिम के लिखनिहार लोग ओकर रूप अपना जानते बिगाड़े से उठा ना राखल । ऊ खुद अपना बोली के 'पूरबी' कहले बाड़े ।]

कबीर के वाणी

: 1 :

मन ना रँगाए रँगाए जोगी कपड़ा ।
आसन मारि मंदिर में बइठे, ब्रह्म-छाँड़ि पूजन लागे पथरा ॥
कनवा फड़ाय जटवा बढ़वले, दाढ़ी बढ़ाय जोगी होई गइले बकरा ।

www.bhojpurisahityangan.com

जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले, काम जराय जोगी होई गइले हिजरा ।
मथवा मुँड़ा जोगी कपड़ा रंगौले, गीता बाँच के होई गइले लबरा ।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, जम दरवजवा बाँधल जइबे पकड़ा

: 2 :

कवन ठगवा नगरिया लूटल हो । टेक।।

चंदन काठ के बनल खटोलना, तापर दुलहिन सूतल हो ।।
उठो री सखी मोरी माँग सँवारो, दुलहा मोसे रूसल हो ।
आये जमराज पलँग चढ़ि बैठे, नैनन आँसू टूटल हो ।
चारि जने मिलि खाट उठवलनि, चहुँ दिसि धू धू उठल हो ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जग से नाता छूटल हो ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

बस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबीरदास कवना समय रहीं ।
2. कबीरदास जी के जनम कहाँ भइल रहे ?
3. कबीर दास के समाधि कहाँ बा ?

   (क) मगहर (ख) वाराणसी (ग) दिल्ली (घ) प्रयाग
4. कबीर दास कवना चीज के विरोधी रहीं ?

   (क) ईश्वर (ख) बाहरीआडम्बर

   (ग) संत (घ) सभ कर
5. कबीर दास कवना तरह के संत रहीं ?

   (क) दरबारी (ख) श्रमजीवी

   (ग) दूनों तरह के (घ)कवनो तरह के ना

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कबीर के सामाजिक विचार पर प्रकाश डालीं ?
2. कबीरदास के दार्शनिक विचार के उल्लेख करीं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पाठ के आधार पर बताईं कि कबीर दास कवना तरह से सामाजिक कुरीतियन के विरोधी रहीं ?
2. 'कवन ठगवा नगरिया लूटल हो' के भावार्थ बताईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

4. अवधपुर में के झूला झूल रहल बा ?
5. झूला पर के के बइठल बा ?
6. लछिमी सखी ईश्वर से मिले के कवन सहज उपाय बतवले बानी ?
7. 'कई बेर आइल नियार' के का भाव बा ?
8. जिनगी के सफलता कवना बात में बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'बारहमासा' के अर्थ लिखीं ।
2. रामजी के झूला झूले के वर्णन करीं ।
3. लछिमी सखी ईश्वर से मिले के सुन्दर सहज उपाय का बतवले बानी ?
4. जिनगी के सुफल बनावे खातिर आ जनम-मृत्यु का चक्कर से बँचे खातिर का करे के सुझाव सन्त दे रहल बाड़े ?

परियोजना कार्य

1. रउवा अगल-बगल कवनो निरगुन संत के आश्रम चाहे समाधि होखे त ओकरा स्थिति के बारे में लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बारह मासा' कहल जाला-
   (क) साल के बारहो महीना के
   (ख) एगो लोकगीत जवना में ऋतु वर्णन होला
   (ग) साधना के एगो तरीका
   (घ) एह में से कवनो के ना।
2. लछिमी सखी कवना सम्प्रदाय के मानत रहीं ?
   (क) संत मत (ख) कबीर पंथ
   (ग) सखी संप्रदाय (घ) सरभंग संप्रदाय
3. लछिमी सखी के जनम कहवाँ भइल रहे ?
   (क) काशी में (ख) सारन जिला में
   (ग) गाजीपुर में (घ) अयोध्या में
4. लछिमी सखी जीव आ परमात्मा में कवन नाता मानत रहीं ?
   (क) दास भाव के (ख) सखाभाव
   (ग) पति-पत्नी के भाव (घ) कवनो भाव के ना

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'खोलि लेहु गगन पेहान' के का मतलब बा ?
2. 'एह पार गंगा ओह पार जमुना बीचे-बीचे सुन्दर भान' में गंगा, जमुना आ भानु कवना चीफ के प्रतीक बा ?
3. संत लोग कहवाँ हिलोरवा खेल रहल बा ?

www.bhojpurisahityangan.com

जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले, काम जराय जोगी होई गइले हिजरा ।
मथवा मुँड़ा जोगी कपड़ा रंगौले, गीता बाँच के होई गइले लबरा ।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, जम दरवजवा बाँधल जइबे पकड़ा

: 2 :

कवन ठगवा नगरिया लूटल हो । टेक।।
चंदन काठ के बनल खटोलना, तापर दुलहिन सूतल हो ।।
उठो री सखी मोरी माँग सँवारो, दुलहा मोसे रूसल हो ।
आये जमराज पलँग चढ़ि बैठे, नैनन आँसू टूटल हो ।
चारि जने मिलि खाट उठवलनि, चहुँ दिसि धू धू उठल हो ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जग से नाता छूटल हो ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

बस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबीरदास कवना समय रहीं ।
2. कबीरदास जी के जनम कहाँ भइल रहे ?
3. कबीर दास के समाधि कहाँ बा ?
   (क) मगहर (ख) वाराणसी (ग) दिल्ली (घ) प्रयाग
4. कबीर दास कवना चीज के विरोधी रहीं ?
   (क) ईश्वर (ख) बाहरीआडम्बर
   (ग) संत (घ) सभ कर
5. कबीर दास कवना तरह के संत रहीं ?
   (क) दरबारी (ख) श्रमजीवी
   (ग) दूनों तरह के (घ)कवनो तरह के ना

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कबीर के सामाजिक विचार पर प्रकाश डालीं ?
2. कबीरदास के दार्शनिक विचार के उल्लेख करीं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पाठ के आधार पर बताईं कि कबीर दास कवना तरह से सामाजिक कुरीतियन के विरोधी रहीं ?
2. 'कवन ठगवा नगरिया लूटल हो' के भावार्थ बताईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

चलु सखी चलु अब देखन पियवा, नीके तरी बाँधी बाँधी केस ।
एक ओर सीया धनी एक ओर सखिया, बीच में बइठेला अवधेस ।।
सोने कर बरहा रूपन कर पाटी, झिलुहा झुलावेला सेस ।
लछिमी सखी के सुन्दर पियवा, गुरूजी दिहले उपदेस ।।

: 2 :

सुन्दर सहज उपाय कहिले से करू तवन के ना ।
सबसे होइ रहु छोट बटिया चलु नवन के ना ।।
कइ बेर आइल नियार सखिया पतिया गवन के ना ।
अबकी घटकी संजोग मिलि लेहु राधारमण से ना ।।
नाहीं त बीतेला बहार सखिया भादो सावन के ना ।
जे रह-रह उठेला झकोर आन्धी पानी पवन के ना ।।
सुखसे आवेला नीन्द पिया संगे सेज फुलवन के ना ।
लछिमी सखिया सवारथ करी लेहु जीवन जनम-मरन के ना ।।

www.bhojpurisahityangan.com

लछिमी सखी

[लछिमी सखी के जन्म संवत् 1917 वि. में भइल रहे । अपने का सारन जिला का अमनौर के निवासी रहलीं । अपने भोजपुरी के महाकवि रहीं अपने के रचना में छंद आ राग-रागिनी का माध्यम से आध्यात्मिक अनुभूति के वर्णन भइल बा । अपने के चार गो काव्य-ग्रंथ मिलेला-'अमर बिलास','अमर फरास', 'अमर कहानी' आ 'अमर सीढ़ी' । अपने के सखी-संप्रदाय के परम्परा के आगें बढ़वलीं । उहाँ के सं. 1970 वि. में समाधि लिहलीं ।]

बारह मासा

: 1 :

लागेला हिरोलवा रे अमरपुर में, झूलेला संत सुजान ।
चलु सखियन सुन्दर बर देखे, खोलि लेहु गगन पेहान ।।
येह पार गंगा ओह पार जमुना, बीचे-बीचे सुन्दर भान ।
चारू ओर उगेला जगमग तारा, झलकेला सुन्दर चान ।।
लछमी सखी के सुन्दर पियवा, मिलि गइले पुरुष पुरान ।
लागेला हिरोलवा रे अवधपुर, जे झुलेला राम नरेस ।।

www.bhojpurisahityangan.com

दरिया साहेब (बिहारवाले)

[दरिया साहेब (बिहारवाले) के जनम अपना ननिहाल के गाँव धरकंधा में भइल रहे । ई गाँव आरा जिला में, डुमराँव से सात कोस दक्खिन बा, जहाँ ई उमर भर रहलन, खाली थोड़का दिन खातिर बीच में काशीमगहर (जिला-बस्ती), बाईसी (जिला-गाजीपुर) आ हरदी-लहठान (जिला-आरा) में गइल रहले । इनका पिता के नाम पीरन शाह अथवा पृथुदास रहे, जे उज्जैन छत्री रहले । इनकर जनम संवत् 1731 आ मृत्यु 1837 वि. में भइल रहे । इनकर बहुत-सा पद भोजपुरी में बा, जवना में दार्शनिक तत्व के दर्शन होला ।]

बिनती

अबरी के बार बकसु मोरे साहेब ।
तुम लागब सब जोग हे ।
गून बकसिहो सब भ्रम नसिहौं
राखिहो आपन पास हे
अछै बिरिछि' तारि लै बैठैहो
तहँवा धूप न छाँह हे ।
चाँद न सुरज दिवस नहिं तहँवाँ

www.bhojpurisahityangan.com

परियोजना कार्य

1. रउवा अगल- बगल कवनो कबीरपंथी मठ होखे त ओकर वर्तमान स्थिति के बारे में लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

नहिं निसु होत बिहान हे ।
अमृतफल मुख चाखन दैहों
सेज सुगंध सुहाय हे ।
जुग-जुग अचल अमर पद दैहों
इतना अरज हमार हे ।
भौसागर दुख दारून मिटिहैं
छुटि जैहैं कुल परिवार हे
कह दरिया यह मंगल मूल
अनूप फुलैला जहाँ फूल हे ।

2

अबरी के बार बकसु मोरे साहेब
जनम जनम कै चेरि हे ।
चरन कँवल मै हृदय लगाइब
कपट कागज सब फाड़ि हे ।
मैं अबला किछुओ नहिं जानौं
परपंचन के साथ हे ।
पिया मिलन बेरी इन्ह मोरा रोकल
तब जिव भयल अनाथ हे ।
जब दिल में हम निहचे जानल
सूझि परल जम फंद हे ।
खूलल दृष्टि दिया मनि नेसल
मानहु सरद के चंद हे ।
कह दरिया दरसने सुख उपजल
दुख सुख दूरि बहाय हे ।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दरियादास ईश्वर के कवन रूप के उपासक रहीं ?
   (क) सगुन (ख) निरगुन
   (ग) दूनों रूप के (घ) कवनों रूप के ना
2. दरियादास कहवाँ के रहनिहार रहीं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अक्षयवृक्ष के का विशेषता होला ?
2. दरियादास का अरज करत बानी ?
3. कुल परिवार छुटि गइला के दरिया दास जी काहे मंगल के मूल कह रहल बानी ?
4. 'कपट कागज सब फाड़ि हे' के का मतलब बा ?
5. जीव कब अनाथ हो जाला ?
6. 'मैं अवला किछुओ, नहिं जानों, परपंचन के साथ हे' के का अर्थ बा ?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. दरिया साहेब के जीवनी लिखीं ।
2. दरिया दास जी के बिनती का बा ? कवनो एगो पद के अर्थ लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

रघुवीर नारायण

[सारन का नया गाँव के। स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रगीत 'बटोहिया' के अमर गायक। अंग्रेजी-हिन्दी-भोजपुरी में कविता लेखन। 'बटोहिया' के राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि मिलल। आजादी के लड़ाई में ई गीत स्वतंत्रता सेनानियन के मंगलाचरण बन गइल रहे।]

बटोहिया

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से मोरे प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवलवा से, तीन द्वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया
जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ, जहवाँ कुहुकि कोइलि बोले रे बटोहिया
पवन सुगन्ध मन्द अगर गगनवाँ से, कामिनी बिरह-राग गावे रे बटोहिया
विपिन अगम धन सघन बगन बीच, चम्पक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया
द्रुम बट पीपल कदम्ब निम्ब आम वृक्ष, केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया
तोता तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा से, पपिहा के पी पी जिया साले रे बटोहिया
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से, मोरे प्रान बसे गंगा-धार रे बटोहिया
गंगा रे जमुनवाँ के जगमग पनियाँ से, सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया
ब्रह्मपुत्र, पंचनद घहरत निसि-दिन, सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया

www.bhojpurisahityangan.com

अपर अनेक नदी उमड़ि-उमड़ि नाचे जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया
आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकतवा से, मोर प्रान बसे सरजू तीर रे बटोहिया
जाउ-जाउ भैया रे बटोही ! हिन्द देखि आऊ जहाँ ऋषि चारो वेद गावे रे बटोहिया
सीता के बिमल जस राम जस कृष्ण जस, मोरे बाप-दादा के कहानी रे बटोहिया
व्यास वाल्मीकि ऋषि गौतम कपिलदेव, सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया
रामानुज रामानन्द न्यारि प्यारी रूपकला, ब्रह्म-सुख बन के भँवर रे बटोहिया
नानक कबीर गौर संकर श्री रामकृष्ण, अलख के गतिया बतावे, रे बटोहिया
विद्यापति कालीदास सूर जयदेव कवि तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया
जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ, जहाँ सुख भूले धान खेत रे बटोहिया
बुद्धदेव पृथु विक्रमार्जुन सिवाजी के, फिरि हिय सुधि आवे रे बटोहिया
अपर-प्रदेश देस सुभग सुघर बेस, मोर हिन्द जग के निचोड़ रे बटोहिया
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहि, जन 'रघुबीर' सिर नावे रे बटोहिया

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बटोहिया' के रचनाकार के नाम बताईं ।
2. 'बटोहिया' के रचना काल बताईं ?
3. रघुवीर नारायण के जन्मस्थान कहाँ ह ?

   (क) छपरा (ख) पटना

   (ग) आरा (घ) बक्सर
4. बटोहिया कवना धुन में लिखाइल बा ?

   (क) चइता (ख) बिरहा

   (ग) पूरबी (घ) कवनो ना
5. बटोहिया में कवना भाव के प्रधानता बा ?

   (क) धार्मिक (ख) राष्ट्रीय

   (ग) वैज्ञानिक (घ) श्रृंगार

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के चारो ओर से का-का घेरले बाटे ! बटोहिया कविता के आधार पर बताईं ।
2. बटोहिया कविता में कवना-कवना पेंड़-पौधा के चर्चा बाटे ।
3. बटोहिया में कवना-कवना चिड़िया के बरनन बाटे ?
4. बटोहिया में जवना-जवना नदी के चर्चा आइल बा, ओकरा बारे में बतलाईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बटोहिया में वर्णित राष्ट्रीय भावना के बर्णन करीं ।
2. बटोहिया में पूरा भारत वर्ष के बखान भइल बा । पठित पाठ के आधार पर एकर पुष्टि करीं ।

परियोजना कार्य

1. राष्ट्रप्रेम के 10 कवितन के संग्रह करीं आ ओकरा पर आपन संक्षिप्त विचार दीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रसिद्ध नारायण सिंह

[प्रसिद्ध नारायण सिंह के जन्म बलिया जिला के चित बड़ागाँव में संवत् 1960 वि. यानि सन् 1903 ई. में भइल रहे । अपने के 'बलिया-बहार' नाँव के भोजपुरी काव्य-ग्रंथ प्रकाशिता हो चुकल बा । बलिया, उ.प्र. के । वकीली -मोख्तारी के काम । सन् 1942 ई. के आंदोलन में हिस्सा आ एह 'करो आ मरो' आंदोलन में बलिया जिला के योगदान पर 'बलिदानी बलिया' वीर काव्य के लेखन आ प्रकाशन । बाद में एकरे संशोधित आ परिवर्दित संस्करण 'भोजपुरी वीर काव्य' प्रकाशित भइल । एही किताब से ई कविता लिहल गइल बा ।]

शहीद के श्रद्धांजलि

लुटा दिहल परान जे, मिटा दिहल निसान जे ।
चढ़ा के सीस देस के,बना दिहल महान जे ।।
जने-जने जगा गइल, नया नसा पिला गइल ।
जला-जला सरीर के, स्वदेस जगमगा गइल ।।
पहाड़ तोड़ि-तोड़ि के, नदी के धारि मोड़ि के ।

www.bhojpurisahityangan.com

सुघर डहरि बना गइल,जे काँट-कूँस कोड़ि के ।।
कराल कान्ति ला गइल, ब्रिटेन के हिला गइल ।
बिहँसि के देस के धजा,गगन में जे खिला गइल ।।
अमर समर में सो गइल,कलंक-पंक धो गइल ।
लहू के बूँद-बूँद में, विजय के बीज बो गइल ।।
ऊ बीज मुस्करा उठल,पनपि के गहगहा उठल ।
विनास का विकास में, बसंत लहलहा उठल ।।
कली-कली फूला गइलि,गली-गली सुहा गइलि ।
सहीद का समाधि पर, स्वतंत्रता लुभा गइलि ।।
चुनल सुमन सँवारि के, सनेह-दीप बारि के ।
चलीं,उतारे आरती,सहीद का मजारि के ।।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कवि के जन्म चितवड़ा गाँव में भइल रहे । ई गाँव कवना जिला में बा ?

   (क) बलिया (ख) सीवान

   (ग) गोरखपुर (घ) बक्सर

2. शहीद लोग अपना बलिदान से का भइल ?

   (क) ब्रिटेन के हिला गइल (ख) कलंक-पंक धो गइल

   (ग) सुघर उहरि बना गइल (घ) ई कुल्टि क गइल ।

3. शहीद के श्रद्धांजलि में कवना भाव के प्रमुखता बा ?

   (क) राष्ट्रीय भाव (ख) धार्मिक भाव

   (ग) वैज्ञानिक चेतना (घ) कवनो भाव के ना

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. 'लहू के बूँद-बूँद में, विजय के बीज बो गइल ? एह पंक्ति के भाव का बा?
2. 'विनास का विकास में, वसंत लहलहा उठल ? कइसे ?
3. 'शहीद का समाधि पर स्वतंत्रता लुभा गइल ? एकर आशय समझाईं ।
4. शहीद लोग ब्रिटेन के कइसे हिला दिहल ?
5. शहीद लोग 'सुधर डहरी कइसे बना गइल ?
6. शहीद सब शीशचढ़ा के देश के कइसे महान बना दिहल ?

www.bhojpurisahityangan.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एह कविता के भाव संक्षेप में लिखीं ।
2. कवि शहीद का मजार पर आरती उतारे खातिर चले के आह्वान काहे करता ?
3. शहीद के त्याग के देश के जनता पर का असर पड़ल ? एगो अनुच्छेद लिख के बतलाईं ।
4. 'भोजपुरी कविता में राष्ट्रीय चेतना ' पर एगो लेख लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. रउरा गाँव-जवार में आजादी का लड़ाई में भाग लेवे वाला केहू सेनानी भइल होखे त पता करके ओकरा बारे में एगो छोटे लेख लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

अनिरूद्ध

[सारन जिला के निवासी । शिक्षक । भोजपुरी साहित्य में कविता के स्तरीयता प्रदान करे वाला लोकप्रिय गीतकार । प्रकृति-प्रेम आ मानवीय मूल्य के कविता लेखन में बड़ा नाम । 'पनिहारिन' गीत-संग्रह प्रकाशित आ प्रशंसित ।]

आषाढ़ के बादल

उमड़ घुमड़ बरसे आषाढ़ के कजरा नैन बदरिया
बरसे
रून-झून झमकत झाँझ स्याम के
रूठल नैन सँवरिया बरसे ।।
बदरा के सीतल छँहिया, गहि-गहि बँहिया नाचत चरवाहा
चुअत पसेना भींजल धरती जोत रहल परती हरवाहा
उछिले गगन हार धरती धन, रस से भरल गगरिया बरसे ।

सुनगल ब्याकुल धरती पल में उठल धुआँ आकास तोपाइल
उड़त पताका सारथि मोहन फूँकत संख गदा टकराइल

www.bhojpurisahityangan.com

उघड़ल लाज धरा द्रुपदी के बिजली जड़ल चुनरिया बरसे ।

सहर अटारी रेत सिखर पर बिन पानी के पानी बरसे
गाँव खेत में अमरित धारा मोती, सोना, चानी बरसे
चढ़ल जवानी बरसा के अब बिछुड़ल भरल उमिरिया बरसे ।
झुकल धरा पर नभ मसाल ले ढूँढ़त मड़ई गाँव डगरवा
कस्तूरी के मिरिगा बिजली राधा जोहत स्याम बदरवा
पवन चरावत झुण्ड भेंड़ के करिया-उजर कमरिया बरसे ।

तैरत बा करिया पहाड़ सब नील समुन्दर में उतरा के
उखड़ल आज हिमालय तैरत धरती दरसन में इतरा के
धुनिया धुनत रूई दुनिया के, सजल सफेद चदरिया बरसे ।

झूमत सेना साज बदरवा लरकल घर अँगना घिर आइल
उड़त धूल उनहल बरिआती दल के दल हाथी अगराइल
चलल बदरिया रोअत झर-झर मोती भरल नजरिया बरसे ।
आवत बा ससुरार सँवरिया, हीरा भरल अँचरिया बरसे ॥

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अनिरूद्धजी कवना जिला के निवासी हईं ?
2. उहाँ के पेशा का रहल बा ?
3. उहाँ के गीत संग्रह के नाम का बा-

   (क) मनिहारिन (ख) बनिहारिन

   (ग) कँहारिन (घ) पनिहारिन
4. 'आषाढ़ के बादल' कवना विधा के पद्य-रचना ह ?

   (क) कविता (ख) हाइकू

   (ग) मुक्तछंद (घ) गीत
5. 'आषाढ़ के बादल' गीत में काथी के चित्रण मिलत बा ?

   (क) बसंतऋतु (ख) शरद ऋतु

   (ग) पतझड़ (घ) वर्षा ऋतु

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. बादल मँड़रइला के चित्रवाला गीत के बंद लिखीं ।
2. पहिला छव पाँति में जवन-जवन बरनन आइल बा,ओकरा बारे में बतलाईं ।
3. करिया पहाड़ लेखा का कइसे तैरत बा; बताईं ।
4. गरमी से व्याकुल धरती के चित्र के बरनन गीत में कइसे कइल बा ? -बतलाईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'आषाढ़ के बादल' गीत के भावार्थ लिखीं ।
2. वर्षा के बाद मिले वाली खुशी के बरनन 'आषाढ़के बादल' गीत के आधार पर करीं ।

परियोजना कार्य

1. वर्षा ऋतु पर आधारित 10 गो गीतन के संग्रह करीं आ ओकरा बारे में संक्षेप में लिख के एगो रिपोर्ट लिखीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. जौहर शफियाबादी

[सूफी सन्त आ भोजपुरी गजल के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. जौहर शफियाबादी के मूल नाँव हवे डॉ. ख्वाजा मोहम्मद इमामुद्दीन । जन्म 21 सितम्बर 1955 शुक्रवार के गोपालगंज जिला के शफियाबाद शरीफ गाँव में । मशरक कॉलेज में उर्दू विभाग के अध्यक्ष । अनेक संस्थन के संस्थापक-अध्यक्ष । भोजपुरी में 'धरोहर' (गजल संग्रह), आँख (अफसाना संग्रह) आ 'रंगमहल' (गजल संग्रह) प्रकाशित बा । इहाँ का अनेक संस्थन से सम्मान मिल चुकल बा । भोजपुरी आन्दोलन से गहिरा लगाव बा ।]

गजल

नदी के धार जे मरूथल का ओरी मोड़ देवेला ।
ऊहे तरसत धरा के जल से नाता जोड़ देवेला ।।

हिमालय के तपे के लग्न जेकरा के बढ़ावेला ।
ऊ चिन्ता गोड़ पीरइला के पीछे छोड़ देवेला ।।

भरम बाँचल बा ओकरे दम से नेहिया के जगतर में ।
जे दू टूटल सनेही दिल के देखत जोड़ देवेला ।।

www.bhojpurisahityangan.com

कबो ऊ यातरा के यातना से ना डरे राही ।
जे चलते-चलते फोड़ा गोड़ के सब फोड़ देवेला ।।

कबो दुनिया भला ओकरा के कहियो ना कही 'जौहर' ।
तनी सा बात पर जे करके वादा तोड़ देवेला ।।

www.bhojpurisahityangan.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जौहर शफियाबादी कवना जिला के निवासी हवन ?
   (क) गोपालगंज (ख) सीवान
   (ग) सारन (घ) भोजपुर
2. जौहर के जनम कवना दिन के भइल ?
   (क) रविवार (ख) मंगलवार (ग) शुक्रवार (घ) शनिवार
3. कवन किताब जौहर के लिखल ना हवे ?
   (क) रंगमहल (ख) धरोहर (ग) आँख (घ) कह ना सकलीं

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. तरसत धरती के जल से नाता के जोड़ेला ?
2. गोड़ पीरइला के चिन्ता के छोड़ देला ?
3. दुनिया केकरा के भला ना कहे ?
4. दिहल मुहावरन के अर्थ लिखीं–
   धार मोड़ दिहल, नाता जोड़ल, पीछे छोड़ल,
   भरम बाँचल, वादा तूड़ल ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एह गजल के अर्थ लिखीं ।
2. गजल काव्य के कवन विधा ह ?भोजपुरी गजल पर एगो छोट लेख लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. भोजपुरी के कवनो तीन गो गजलकार के नाँव लिखीं आ ओह सबके खासियत के संक्षेप में वर्णन करीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर

[भोजपुरी के शेक्सपीयर कहाये वाला भिखारी ठाकुर के जनम 18 दिसम्बर 1887 के सारण जिला के कुतुबपुर गाँव में भइल रहे । इहाँ के बेटी बेचे के, विधवा, मेहरारू के प्रति भेदभाव जइसन सामाजिक कुरीतियन के बदले खातिर नाटक लिखीं आ खेलीं, जवना के देखे खातिर भारी भीड़ होखे । इहाँ के नाटकन से प्रभावित होके बेटी बेचे के प्रथा खत्म हो गइल । बेचाइल बेटी के अइसन हृदयद्राव्य चित्र इहाँ के उरेहनी कि पत्थरो के बनल बाप के छाती फाट जाई । एगो बानगी देखीं-

''रोपेया गिनाई लिहल, पगहा धराई दिहल
चेरिया से छेरिया बनवल हो बाबू जी ।''

इहाँ के नाटकन के नाँव बा- बिदेसिया, भाई-बिरोध, बेटी वियोग, विधवा-विलाप, कलियुग-प्रेम, राधेश्याम बहार गंगा-स्नान, पुत्र-बध, गबरघिचोर, बिरहा बहार, नकल भांड आ नेटुआ के, ननद-भउजाई । इहाँ के मउवत 10 जुलाई 1971 में भइल ।

एजवाँ प्रस्तुत नाटक 'गबरघिचोर' में ई देखावल बा कि संतान पर बाप से बेसी माई के अधिकार होला । ई दुनिया भर में चल रहल नारी मुक्ति के एगो प्रमुख माँग बा । जवना के बहुत पहिले भिखारी ठाकुर समर्थन कइले रहीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

गबरघिचोर

भिखारी ठाकुर

पात्र-परिचय

गलीज	-	गाँव के एगो परदेशी युवक ।
गड़बड़ी	-	गाँव के एगो आवारा युवक ।
घिचोर	-	गलीज बहू ।
पंच	-	गाँव के एगो मानिन्द आदमी ।
गलीज बहू	-	गलीज के/मेहरारू आ पत्नी और गबरघिचोर के माई

जल्लाद, समाजी, दर्शक आदि

www.bhojpurisahityangan.com

गबरघिचोर

(चौपाई)

समाजी : सिरी गनेस पद सीस नवाऊँ । गबरघिचोरन के गुन गाऊँ ।।
बहरा से गलीज घर अइलन । मुदित भइल ना दाम कमइलन ।।
मेहर के ना भइल साथी । झूमे जस मतवाला हाथी ।।
एही से दुआर पर आई । निरखन लगे लोग बहुताई ।।
घरनी सुनली अइलन पिया । रहि-रहि के हुलसत बा जिया ।।

(कवित्त)

गलीजबहू : **(गलीज से)**

कमल उछाह जइसे सुरुज प्रकास होत,
कुमुद उछाह जइसे चन्द्रमा परसते[3] ।।
भैरन उछाह जइसे आगमन बसंत जानि,
मोरन उछाह जइसे बरखा बरसते ।।
हंसन उछाह जइसे मानसरोवर बीच,
साधन उछाह इच्छा आवत अरसते ।
सबको उछाह एही भाँति उर होत अहै,
हमरो उछाह स्वामी तोहरे दरसते ।।

ई झंझट कइला के कुछ काम नइखे, जल्दी बतावऽ लइका कहाँ बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

(गाना- पूर्वी)

गलीजबहू- (पति से)

सिव-सती जी के पूत, देवन में मजगूत;
गिरत बानी तोहरे चरन में हो स्वामीजी !
गवना कराके गइल, घर के ना सुधि कइल,
मरतानी तोहरा बियोग में हो स्वामीजी !
हाथ-बाँहि धइला के, सादी-गवना कइला के,
आज ले ना कइलऽ निगाहवा हो स्वामी जी !
बबुआ भइलन पैदा, कुछ ना मिलल फैदा[4],
सब बिधि कइलऽ बेकैदा[5] हो स्वामीजी !
आस मत नास करऽ, बेटा के रहे दऽ घर,
पगली के प्रान के आधार मोर हो स्वामी जी !
पोसत बानी बचेपन से, बबुआ के तन-मन से,
कसहूँ उपास[6] आध पेट खा के हो स्वामी जी !
कहत 'भिखारी' नाई, देहु खीस बिसराई[7],
उजरल घर के बसा दऽ मोर हो स्वामी जी !

(अपना बेटा से) ए बबुआ ! गोड़ पर गिरऽ, इहे तोहार बाबू हवन ।

समाजी- (चौपाई)

गिरत पुत्र पिता पग जाई । धरि के बाँह गोद बइठाई ।।

गलीज- बेटा हमार चलऽ परदेस । काहे तूँ सहबऽ घरे कलेस ?

गबरघिचोर- माई के संग में लेके चलऽ, राखऽ अपने पास ।
छोड़िके गइला से करिहन सब नर-नारी उपहास ।।

www.bhojpurisahityangan.com

गलीज- एह पागल के छोड़ दो बेटा, चलो हमारे साथ ।
फिर ना ऐसा मोका कबहूँ, लगेगा तेरे हाथ ।।

गलीजबहू-
बबुआ के हम सोझा राखब, देख के करब सबूर ।
सब बिधि से मत करऽ स्वामी, हमरा कर्म के चकनाचूर ।।

गलीज- (बेटा के जबरदस्ती बाँहि धइ के झटकार के) चलऽ बेटा, तूँ चलऽ ।

[गड़बड़ी के आगमन आ बेटा के हाथ पकड़ के अपना ओर खिंचल]

समाजी- **(चौपाई)**

तेहि अवसर गड़बड़ी तहँ आये । पुत्र मोर कहि रोब जमाये ।।
तीनो में झगड़ा भये भारी । देखन लगे सकल नर-नारी ।।
पंचित करन लगे सब लोगू । गबरघिचोरन केहि के जोगू ।।

(पंच आवतारन)

पंच- तीन आदमी में झगरा लागल बा, झगरा छूटत नइखे, जवना पंचाइत में हम बोलावल गइल बानी । (गलीज का ओर देखावत) : हइहे गलीज बाड़न । गलीज !

गलीज- हँ बाबा !

पंच- ईहे गलीज हवन । बिआह कके घर में जनाना बइठा देलन । अपने चल गइलन बहरा कमाये । बाहर से ना कबहीं खत भेजलन, ना खबर भेजलन, ना पाँच रोपेया मनिआडर भेजलन । एहिजा इसवरी माया गलीज बो, हेने आउ । (गलीज बहू कुछ लगे आवतारी) ईहे गलीज बो हऽ । एकरा एगो लइका

www.bhojpurisahityangan.com

पैदा लेले बाड़न । बबुआ गबरघिचोर होने आव । (गबरघिचोर लगे आवतारन) गाँव-नगर से बहरा में जाके केहू कहल ह कि गलीज तोहरा बेटा भइल बा । गलीज बहरा से आइल बाड़न, कहत बाड़न कि छँबड़ा के हम अपना जवरे बहरा लिया जाइब । गलीज बो कहतिया कि हम असरा लगा के जनमवली पोसलीं-पललीं, छँबड़ा के काहें लिया जइबऽ ? हमरो के लिया चलऽ । एही बात के दूनो बेकत में झगरा बा । एही बीच में हई गड़बड़ी कहत बाड़न कि हमार बेटा हऽ । गड़बड़ी, तू ई बतावऽ कि घिचोरवा में के हो के दावा कइले बाड़ऽ ?

(चौपाई)

तुम गड़बड़ी कहहु एक बारा । कइसे बेटा भइल तुम्हारा ।।

गड़बड़ी- घिचोरवा हमार बेटा नूँ हऽ, महाराज !

पंच- का गलीजवा बो से तोहरो बिआह भइल रहे ?

गड़बड़ी- ना ।

पंच- माड़ो गाड़ि के ? बाजा बा के ? नेवता नेवति के ?

गड़बड़ी- ना महराज !

पंच- तब तोर बेटा कइसे भइल रे बउराह लेके ?

गड़बड़ी- ए बाबा, हम जवन रउरा से कहत बानी, सुनी । हम रास्ता धइले जात रहीं, ओने से लरिकवा के मतरिया चल आवत रहे । हमरा से कुछ गलती हो गइल ।

पंच- अइसे खाली गलती बात ना बोले के । राह में गलती हो जाई, तेसे का बेटो हो जाई ? कवनो सबूत

www.bhojpurisahityangan.com

बा ?

गड़बड़ी- हँ, बइठल जाव, हम साबूत देत बानी !

राह में पवलीं खाली जाली । खोजत अइलन एगो कुचाली ।।

रोपेया धइलीं लेलीं निकाल । ले जास आपन खलिहा जाली ।।

पंच- गड़बड़ी, हम तोहरा से ममिला पूछतानी, तूँ लगलऽ गीत गावे ?

गड़बड़ी- हम गीत नइखीं गावत, आपन ममिले कहलीं हाँ रावाँ से ।

पंच- बाकिर हमरा ना बुझाइल ह, ए बबुआ ।

गड़बड़ी- हेने आई, दू डेग बढ़ आई, हम रावाँ के समुझा देतानी । हम रास्ता धइले चल जात रहीं । रास्ता में हमरा जाली मिलल अथवा डोंड़ा मिलल अथवा मनीबेग मिलल । ओहमें हम आपन रोपेया-पइसा धइलीं । कुछ दिन का बाद में जाली अथवा मनीबेगवाला आपन चिन्ह गइल । त आपन मनीबेग ले जाई कि हमरा रोपेया-ढेबुआ सहिते लेले चल जाई ?

पंच- त ई बात तोहरा पहिले नूँ हमरा से कहल चाहत रहल हा ।

(दर्शक का ओर देखत) एह गरीब के राह में जाली मिलल अथवा डोंड़ा मिलल अथवा मनीबेग मिलल, ओह में ई आपन रोपेया-पइसा धइलस । कुछ दिन का बाद में मनीबेगवाला आपन मनीबेग चिन्ह गइल,

www.bhojpurisahityangan.com

त खाली आपन ऊ मनीबेग ले जइहन कि रोपेया-ढेबुआ सहिते लेले चल जइहन ? बबुआ गबरघिचोर, तूँ चल जो गड़बड़ी में ।

गबरघिचोर- ए बाबा, हम कुछ कहबऽ ।

पंच- का कहबऽ ? कहे के बा से कहऽ, बाकी जाये के होई गड़बड़िये में ।

गबरघिचोर- सुनहुँ सभासद असल कहूँ, झूठ में लागी पाप ।
माई-बाबू छुटलन भइलन जालीवाला बाप ।।

पंच- बेटा ले जो गड़बड़ी ।

गलीज- हमार बेटा ह, गड़बड़ी कइसे लेके चल जइहन ?

पंच- जननवाँ नूँ तोर ह, बउराह लेके ।

गलीज- ऐ, छँवड़ा ह हमरा लेके ।

पंच- मउगी के नूँ बाजा बजा के ले आइल बाडऽ । छँवड़ा के बाजा बजा के नइखऽ नूँ जनमवले ? ई बतावँ कि कतना दिन के बड़ा छँवड़ा भइल आ कतना दिन पर तूँ बहरा से आइल बाडऽ ?

गलीज-

पन्दरह बरिस भइल परदेस । ओहिजे लागल उमिर के सेस ।
बेटा ले के बहरा जाइब । फिर ना घर में लात लगाइब ।।

गलीजबहू-

तेरह बरिस के बबुआ भइलन । बेटा के खोजत बाबू अइलन ।
लागत नइखे तनिको लाज । हँसत बाटे सकल समाज ।।

गलीज- हटऽ, लाजवाली !

पंच- अइसन बेलज आदमी दुनिया में हम ना देखलीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

लजाये के जगहा कहीं ना मिले, त जाके समैना का चोप में मुँहे लगा द ।

गलीज- ए बाबा, रउरा बइठीं हम साबूत देतानीं ।
गाछ लगवलीं कोहड़ा के, लत्तर गइल पछुआर ।
फरल परोसिया के छप्पर पर, से हऽ माल हमार ।।

पंच- गलीज ! हम तोहरा से ममिला पूछतानी, तूँ लगलऽ ध्रुपद गावे ?

गलीज- हम आपन ममिला कहली हँ, ए बाबा !

पंच- एही में लपेट-लपेट कहलऽ ह, बाकी हमरा ना बुझाइल हा, ए बबुआ !

गलीज- ए बाबा हेने आईं, हम रावाँ के समुझा देतानी । हमरा कहूँ कोहड़ा के एगो थाला मिल गइल । ओकरा के हम ले अइलीं । अपना अँगना में रोप देलीं । ओकर सेवा-सजम कइलीं । ओकर लत्तर बढ़त-बढ़त हमरा छप्पर से परोसिया के छप्पर पर चल गइल । एगो कोहड़ा जाके फर गइल । त ऊ कोहड़वा हमार ह महराज कि परोसिया के बा ?

पंच- त ई बात पहिले नूँ हमरा से कहेला । (दर्शक का ओर देखत) एह गरीब का कहीं से कोहड़ा के थाला मिल । अपना अँगना में ले आके रोपलस । सेवा-सजम कइलस । लत्तर पसरत-पसरत परोसी के छप्पर पर जाके कोहड़ा फर गइल । त का छप्पर के बदौलत एकर कोहड़वे तूर लीहन ? जेकर थाला तेकर कोहड़ा । बबुआ गबरघिचोर, तूँ चल जो

www.bhojpurisahityangan.com

गलीजवा में ।

गबरघिचोर- ए बाबा, हम कुछ कहबऽ ।

पंच- का कहबऽ ? कहे के बा से कहऽ, बाकी जाये के होई गलीजवे में ।

गबरघिचोर- सब कहलन बाबू असल, सुनहूँ पंच दे कान ।
हम बेसी कइसे कहीं, बालक अबुध नादान ।।

(तीनों में हल्ला-गुल्ला होता-'बेटा हमार बा, बेटा हमार बा ।)

गलीजबहू- (पंच से) ए बाबूजी, हमरा बबुआ के हो, बाँह उखाड़ल लोग हो दादा !

पंच- चुप रहऽ । केकर मजाल बा कि तोरा बबुआ के बाँह उखाड़ी लोग रे ? मारब मूका जे पाताल में धँस जाई लोग ।

गलीजबहू- बढ़नी मारो तोरा पंचाइत कइला के ।

पंच- तें अनेरे नूँ हमरा पर लाल-पियर होतारिस ।

गलीजबहू- लाल-पियर होखी ना ? कूदि के रावाँ हिनका के देतानी, कूदि के हुनका के देतानी । हमार बबुआ आ हमरा से कुछ पूछते नइखीं ।

पंच- नाक चुअवलू, त मारब मूका जे....। तबे से नाक चुअवले बाड़ी कि पूछते नइखीं, पूछते नइखे तूँ केकरा से पूछ के ई सब कइले बाड़ू ? हेने आवऽ, हेने आवऽ । तोरो से पूछब, हेने आवऽ ई बतावऽ कि हई गड़बड़िया तोरा साथे झूठो के लंद-फंद बन्हले बा कि तोरा गड़बड़िया साथे कुछ बाटे ।

www.bhojpurisahityangan.com

गलीजबहू- जब रावाँ पूछत बानी, त हम कहत बानी । हइहे गड़बड़ी बाड़न, ए बाबूजी ! सँझिया-बिहनियाँ राज आवस, ए बाबूजी ।

पंच- दुपहरियो में आवत होई । कतनो गोड़ जरत होई, बाकी मानत ना होई ।

गलीजबहू- कबो दुआरी पर बइठस ए बाबूजी, कबो केवारी के पाला ध के खड़ा होखस आ कइसन दोनो में कइले राखस । रोज दिन के इहे दासा हम देखीं, त एक दिन हम अपना मन में बिचार कइलीं आ सोचलीं कि हमरा पाले चीज बा, त हमरा छिपावल पार ना लागल, ए बाबूजी !

पंच- तोरा पाले कवनो साबूत बा ?

गलीजबहू- बइठीं, साबूत हम देत हईं ।

घर में रहे दूध पाँच सेर, केहू जोरन दिहल एक धार ।
का पंचाइत होखत बा, घीउ साफे भइल हमार ।।

पंच- गलीज बो, हम तोरा से ममिला पूछतानी आ तें लगले झूमर गावे ।

गलीजबहू- हम झूमर ना गवलीं हाँ, ए बाबुजी ! हम आपन ममिला कहलीं हाँ । रावाँ नइखे समुझ में आवत, त हेने दू डेग बढ़ि आईं, हम समुझा देतानी ।

पंच- कहऽ-कहऽ ममिला में ना लजाये के । (दर्शक का ओर देखत) गलिजवा बो लाद के साफा आदमी ह ।

गलीजबहू- ए बाबूजी ! पाँस सेर दूधवा अपना देहिया के

www.bhojpurisahityangan.com

मोकरर करतानी । बाकिर जोरनवाँ के कहे में लाज लागता ।

पंच- कहऽ-कहऽ, ममिला में ना लजाये के, कहऽ । अबगे त ममिला मोहड़ा पर आइल बा ।

गलीजबहू- (गड़बड़ी का ओर इसारा करत) जोरनवाँ हिनके नूँ पसेनवा ह, बाबूजी !

पंच- ई बात तोरा पहिले नूँ हमरा से कहेला । मनलीं कि केहू के घर में दूर सेर-चार सेर दूध धइल बा । ओकरा के अँवटलस, पकवलस, टोला-महल्ला से तनीएसा जोरन ले आके ओकरा में लगा देलस । त का जोरन के बदौलत ओकर सउँसे करने उठवले चल जइहें । जेकर दूध, तेकर घीव ।

गलीजबहू- जेंकर दूध, तेकर घीव काहे ना ए बाबूजी ! हतने भर जोरनवाँ खातिर हमरा बबुआ पर दावा कइले बाड़न ।

पंच- अरे बबुआ, तूँ चल जो अपना मतरिया में ।

गबरघिचोर- बाबा ! हमहूँ कुछ कहबऽ ।

पंच- कहबऽ का ? कहे के बा से कह लऽ, बाकी जाये के बा मतरिये में ।

गबरघिचोर- साँच बात कहली मइया, से हमरे मनमान ।
झूठो झंझट लागल बा सुनहु पंच सज्ञान ।।

पंच- ले जो गलीज बो ! बेटा ले जो रे !
(तीनों में फेर झगरा सुरू हो जाता । पंच के बेइमान बनावत बा लोग ।)

www.bhojpurisahityangan.com

गलीज- (उठि के पंच के धसोरत) चललऽ हा पंचाइत करे कि हमनी में खून करावे ?

पंच- हम का करीं ? जेकर हक बा, सुपत होता, तेकरा के हम देतानी ।

गड़बड़ी- ए बाबा, एने आई, सुनी ।

पंच- कहे के बा से कहऽ । उठ-बइठ के ममिला ना होखे । जे देखी से कही कि बाबा बेइमान हवन ।

गड़बड़ी- हेने आई, बेइमान केहू ना कही ।

पंच- (गड़बड़ी किओर दू डेग बढ़के) का कहबे से कहऽ ।

गड़बड़ी- हम रावाँ से कहतानी कि छँवड़ा के हमरा में रखवा देतीं, त रावाँ के हम दू सौ रोपेया देतीं ।

पंच- कहऽ हो गड़बड़ी, आज ले बाबा का रोपेया के लोभ ना भइल, त आज तोहरा दू गो रुपली से बाबा के दिन जाये के बा ?

गड़बड़ी- दू गो ना-नूँ कहली हँ ।

पंच- दू सऽ कहऽ, चार सऽ । ए रोपेया कावर ताकेवाला बाबा के जीव हवन ?

गड़बड़ी- दू गो ना कहलीं हँ, दू सौ देबऽ ।

पंच- हमरा दुइये गो बुझाइल ह, ए बबुआ ! दू सइ कहलऽ हऽ ?

गड़बड़ी- हँ, ए बाबा !

पंच- जो होने बइठ । ममिला में ना घबड़ाये के ह । ग्लीज-सलीज बेटा ले जइहन ? तनी-मनी सवाँगन

www.bhojpurisahityangan.com

के खबर दे दीं, त इनकर चाम खींच लिहन स ।

गलीज- ए बाबा, तनी हेने आई ।

पंच- कहे के बा से ओनहीं से कहऽ, ए बबुआ !

गलीज- ना, तनी दू डेग बढ़ आईं, ए बाबा ! रउरा से तनी एगो भितरिया बात कहे के बा ।

पंच- (गलीन का ओर दू डेग बढ़के) कहे के बा से कहऽ, ए बबुआ ! जानते बाड़ऽ कि हम कतना भक्त आदमी ठहरलीं । बिना भोजन भइले स्नान ना होखे !

गलीज- छँबड़ा के कह-सुनके हमरा में रखबा देतीं, त रावाँ के हम पाँच सौ रोपेया देतीं ।

पंच- तोहरा अइसन लोभी आदमी से हमरा दुख हो जाला । पाँच सो रुपली से बाबा के दिन जाए के बा ?

गलीज- पाँच गो ना कहलीं हँ, ए बाबा !

पंच- पाँच गो ना-नूँ पाँच सइ कहऽ, पाँच हजार कहऽ, पाँच लाख कहऽ, रोपेया कावर ताकेवाला बाबा ना हवन ।

गलीज- पाँच सौ नूँ कहतानीं ।

पंच- पाँच सई ? हमरा बुझाइल ह कि पाँच गो कहलऽ ह । सुनऽ ए बबुआ ! रोपेया-पइसा कबनो चीज ना ह । ई त हाथ के मइल ह । आज बाटे बिहने नइखे । बाकी तोहरा घर से आ हमारा घर से तोहरा दादे का बेरा से निअराह चल आवत बा, ए बबुआ !

www.bhojpurisahityangan.com

ई निबाहे के बा । पाँच सइ नूँ कहलऽ देबे के ?

गलीज- हँ, ए बाबा !

पंच- जो बइठऽ । गड़बड़ी कादो बेटा ले जइहन ! ममिला में ना हड़बड़ाये के । (गलीज बो से) गलीज बो रे?

गलीजबहू- का ए बाबूजी !

पंच- तोर ममिला फेर से देखाई ।

गलीजबहू- पहिले का देखाइल ह, ए बाबूजी ।

पंच- ऊ तनी ऊपरे-ऊपरे देखाइल रहल ह ।

गलीजबहू- (पंच का लगे जा के) हमरा पाले त रोपेया-पइसा नइखे, ए बाबूजी ! कह-सुन के बबुआ के हमरा में रखवा देतीं, त हम राउर सेवा-सजम क देतीं, ए बाबूजी !

(गाना-पद) गलीज बहु के विलाप

ओदर से हउअन बेटा हमार, ओदर से ।
साँच बात में आँच लागत बा, पूछीं बोला के नाऊ-चमार । ओदर से....
पुत्र भइल जीभ स्वाद गइल सभ, तनिको ना खइलीं बेकार । ओदर से....
अब आगा पर दागा होखत बा, घेरलस ठग बटवार । ओदर से....
कहत 'भिखारी' तइयारी भइल जब, पिअला से दूध के धार । ओदर से..

(चौपाई)

चारो तरफ से उठल हावा । एह में नइखे केहू के दावा ।।
बबुआ हउवन बेटा हमार । पूछीं बोला के नाऊ-चमार ।।
नव महीना पेट के भीतर । रहसु त पूजलीं देवता-पितर ।।
जनम के समय में दुख भइल । इहे बुझाय जे अब जीव गइल ।।

www.bhojpurisahityangan.com

होखत रहे राम से बात । असहीं होला जीव के घात ।।
लालच में ना लउके जान । बेटा दिया दऽ हे भगवान ।।
बबुआ भइल आसरा लागल । अब घेरले बा दू गो पागल ।।
दूनों ओर के जोर बा भारी । राम-राम कहि रटत 'भिखारी' ।।
हम अबला कछुओ ना जानी । पंच गोसइयाँ राखऽ पानी ।।
झगड़ा के ना जानी भेद । होखत बा करेज में छेद ।।
रो-रो कहे 'भिखारी' नाई । बेटा दिया दऽ काली माई ।।
कुतुबपुर में बाटे घर । हमहीं हई बेटा के जर ।।
जिला छपरा हउए खास । बबुआ में लागल बा आस ।।

(बेटा से बिलाप गान)

सिवसती गनपति, हरहु बेकार मति;
चरन के चेरी के इयाद राखऽ हो बबुआ !
पेटवा भीतर माँही, गम कुछ रहे नाहीं;
तबही से आसरा लगवलीं हो बबुआ !
बनि के तोहार कुली, लालच में गइलीं भूलि;
नव मास ढोबलीं मोटरिया हो बबुआ !
दिन-रात हूल आवे, घर ना आँगन भावे;
चलत में गोड़ भहरात रहे हो बबुआ !
जब होखे लागल पीरा, दुखवा समुझऽ हीरा;
मुखवा से कहतानी कमती हो बबुआ !
सुनऽ दुलरू ! कहीले से, चार दिन पहिले से;
सउरी में दाँत लागि जात रहे हो बबुआ ।
केहू कहे हउवे दूत, केहू कहे हउवे पूत;

www.bhojpurisahityangan.com

केहू कहे भीतरे मुअल बा हो बबुआ !

केहू कहे मरि जाई, चुरइल धइले बा माई;

साँड़ासा सँघरनी के खइलसि हो बबुआ !

अब-तब घरी रहे, ईहे सभ केहू कहे;

चमइन हाथ लाके कढ़लसि हो बबुआ !

नया भइल जनम मोर, असहीं ह पैदा तोर;

तेलवा लगाइ के अबटलीं हो बबुआ !

सुधि करऽ भइला के, गूह-मूत कइला के;

माई मत जानऽ हमें दाई जानऽ हो बबुआ !

कहत 'भिखारी' नाई, कवन करीं उपाई;

मुँहवाँ के तोहरे दुआरवा हो बबुआ !

कुतुबपुर हउवे ग्राम, रामजी सँवारऽ काम;

जाति के हजाम जिला छपरा हो बबुआ !

पंच- रे बबुआ, तें मतरिया का रोबला से मतरिये में रहबे ?

गबरघिचोर- रावाँ जेकरे में कहब, तेकरे में रहब ।

पंच- बाह बा ह ! रहे के बा तोहरा, बाबा काहें आपन ईमान खराब क देस ? बाबा कहिहन कि तूँ इनरा में कूद जा, त कूद जइबऽ ?

गबरघिचोर- कूद जाइब ।

पंच- बाबा कहिहन कि तूँ आपन जान दे दऽ, त तूँ दे देबऽ ?

गबरघिचोर- दे देबऽ ।

पंच- हम कहब कि तोहरा में तीनों के हक बराबर बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

तोहरा देह नापि के काटि के तीन गो टुकड़ा कइल जाई । तीनों में गोटी परी, तोरा कबूल बा ?

गबरघिचोर- हँ बाबा ! कबूल बा ।

पंच- कबूल बा नूँ ?

गबरघिचोर- कबूल बा ।

पंच- जल्लाद के बोलावऽ रे !

समाजी-

देहु खबर जल्लाद के जाई । सुनत बात आवत हरखाई ।।
कर हथियार धार बनवाई । सभा मध्य में पहुँचे आई ।।

पंच- (गबरघिचोर से) बबुआ सूत रहऽ ।

गबरघिचोर- हम कुछ कहबऽ ।

पंच- अच्छा कहऽ ।

(पंच जल्लाद फरका बइठत बाड़ें)

गबरघिचोर- (रो-रो के)

अइसन लिखलन करम में बिधाता !
सुंदर नर-तन बिमल पाइ के टूटल जगत से नाता ।
हीत-मित्र केहू काम न आवत, बैरी भइलन पितु-माता ।।
सभा-मध्य में बध होखत बानी, सुनहु राम सुखदाता ।
बड़ उपहास भइल घिचोर के, एको ना 'भिखारी' से कहाता ।।

(चौपाई)

तीन जना में झगड़ा भइल । गबरघिचोरन के जीव गइल ।।
जेकर हिस्सा जहाँ से होई । काटि के बाँटि लेहु सब कोई ।।
करनी के फल परल कपारा । तन पर चक्कू चलल हमारा ।।
बड़का दुख परल जगबन्दन । भइल अकाल मृत्यु रघुनन्दन ।।

www.bhojpurisahityangan.com

जरिये चलली मइया कुचाली । छुड़ी का हाथे भइलि हलाली ।।
रामचन्द्र अवधेस कुमारा । बहे चाहत बा खून के धारा ।।
लखन, भरत, सतरूघन भइया । भँवर से पार करहु मोर नइया ।।
धनुस-बान धरि चारो भाई । एह अवसर पर होखऽ सहाई ।।
ना कइलीं तीरथ-ब्रत-दान । बालकपन बा हे भगवान ।।
माई-बाप के सेवा नाहीं । नाहक नर भइलीं जग माहीं ।।
सिर पर पहुँचल तुरते काल । देरी भइल दसरथ के लाल ।।
भइल सिकाइत जग में भारी । दूगो बाप एक महतारी ।।
एह जीवन ले मूअल बेस । सुभ गति दे दऽ सिरी अवधेस ।।
जयति-जयति जय कौसल-किसोरा । नइखे आवत करे निहोरा ।।
दाया तोर मोर अग्याना । करिहन तुरत परान पेयाना ।।
कुतुबपुर के कहे 'भिखारी' । जइसन मरजी होय तिहारी ।।

(गाना)

धन-धन मालिक माया तेरा, लोक-बेद सब गाता है ।
तीन लोग के बीच में एगो लिखनेवाला बिधाता है ।
ऊँच-नीच करनी जैसा करता, वैसा फल पाता है ।
माई, भाई, बाबू, कबीला झूठ जगत के नाता है ।
गबरघिचोर आज जगत से जमपुर को चल जाता है ।
सभा-मध्य जल्लाद का हाथे छुड़ी गला से खाता है ।
सूर्य उदय जब तक जीवन अब तुरत रात चलि आता है ।
अंधकारा का डर से मनुआँ रोकर के पछताता है ।
कुतुबपुर के नाई 'भिखारी' तीनो झगड़ा गाता है ।
महादेव के, पारबती के चरन में सीस नवाता है ।

www.bhojpurisahityangan.com

पंच- बस-बस । बस सूतऽ हेने ।

(घिचोर सूत जात बाड़न । पंच देह नाप के चिह्न लगावतारन । जल्लाद के काटे के हुकुम दिआता ।

गड़बड़ी- देखिहऽ बाबा, ठीक से नपिहऽ, एने-ओने ना होखे पावे ।

गलीज- हँ बाबा, ठीक से नापब ।

पंच- रे बउराह सभ, जहाँ बबे बाड़न, तहाँ एने-ओने होई (जल्लाद से) रे एक छेव एहिजा से काट, एक छेव एहिजा से काटऽ ।

जल्लाद-

जै गो टुकड़ा करब हम । फी चवन्नी से लेहब ना कम ।।

पंच- कटइया त तोर मोनासिब बा । दऽ हो गड़बड़ी, चार आना पइसा दऽ ।

गड़बड़ी- लीं बाबा ।

पंच- गलीज, चार आना पइसा दऽ ।

गलीज- लीं, सरकार !

पंच- गलीज बो रे ।

गलीजबहू- का ए बाबूजी ?

पंच- चार आना पइसा दे तेहूँ ।

गलीजबहू- चार आना पइसा का होई, ए बाबूजी !

पंच- तोरा छँबड़ा के कटाई देवे के बा ।

गलीजबहू- ना ए बाबूजी, जिअते दूनों जाना में केहू के दे दीं ।

पंच- देख तोरा बुझात नइखे, हम पुरान हो के तोरा के समुझा देतानीं । तोर जनमल ह, तोरो एक टुकड़ा

www.bhojpurisahityangan.com

हिस्सा मिल जाई, त तोर मन के अरमान रह जाई ।

गलीजबहू- ना हमरा लइका के मत कटवाई, ए बाबूजी ! जिअते दूनो जाना में केहू एक जना के दे दीं ।

गड़बड़ी- ए महराज ! दुइये टुकड़ा करवाई, ई झगरा छूटे ना दीही ।

गलीज- ए महराज ! दुइये टुकड़ा करवाई ।

जल्लाद- काटीं ?

पंच- (हाथ से रोकत) रहऽ । हई गड़बड़ी कहत बाड़न- दू टुकड़ा हो जाय, हऊ गलीज कहताड़न-दू टुकड़ा हो जाव । जेकरा अपना बेटा के दाह नइखे, तेकर बेटा कइसन ? बेटा के दाह बा मतरिया के । उठाव बेटा, ले जो गलीज बो !

(गलीज बो बेटा ले जा तारी)

समाजी- ज्यों बेटा माता के संग जाये । त्यों गलीज-गड़बड़ी लजाये ।।

पंच- गाना ऊहे ह, जेह में मालिक के नाम होय । नकल तमासा ऊहे चीज ह, जेह में धर्म के चर्चा होय । 'गबड़घिचोर' नाटक में धर्म इहे समुझे के चाहीं, जे गबरघिचोर के मतारी कइसन दुख कहि के रोवल बाड़ी । गाना में, चौपाई में आ पूर्वी में जइसन लड़िका होखे में मतारी के दुख होला, जवना दुख में मतारी लोग के प्रान छूटि जाला, से सब बरनन करत बाड़ी । ई बात दुनिया में बेटा वास्ते उपदेस बा । गबरघिचोर के मतारी एगो आ बाप दूगो । से बेटा पंच

www.bhojpurisahityangan.com

के तजबीज से आपन प्रान दे देबे पर तइयार बाड़न । ईश्वर से विनय करत बाड़न जे हम मतारी-बाप के कुछ सेवा ना कइलीं । एह बात के बेटा का मोह बा । बाकी आजकल के जे बेटा असल बा, से कह देता जे पंच के बात ना मानबऽ । खास करके उनुकरा अपने जान के फिकिर बा । माता-पिता के सेवा के फिकिर तनिको नइखे । सभा के अन्दर गबरघिचोर कइसन चौपाई कहत बाड़न-

मातु-पिता के सेवा नाहीं । नाहक नर भइलीं जग माहीं ।।

www.bhojpurisahityangan.com

+2 स्तर के भोजपुरी के नया पाठ्यक्रम

उद्देश्य

- पाम्ही भिनला से जवानी के सँधि स्थल पर खड़ा ओह समस्त शिक्षार्थी लोग के एगो अइसन भाषा प्रदान करे के बा, जवना से उनका में भोजपुरी के बारे में व्यापक समभ्फ के विकास त होइबे करे, अभिव्यक्ति कौशल के पहचानेवाली शक्तियो के विकास होत चले । ई शिक्षार्थी लोग ओह सब भाषा कौशल के धीरे-धीरे अपना रोजाना जिनगी में लिखे आ बोले खातिर इस्तेमालो करत चले ।
- एह स्तर पर भोजपुरी भाषा आ साहित्य के अध्ययन एगो सर्जनात्मक, सांस्कृतिक आ प्रयुक्ति के दृष्टिकोण से करत भोजपुरी के लगातार विकसित होत रूप के परिचय जान सके ।
- सर्जनात्मक साहित्य के तरफ रूझान बढ़े आ शिक्षार्थी लोग अध्ययन में पूरा-पूरा मन लगावस आ आनन्द उठावस । ओह में कमी-बेसी के पहिचान करस, आ आलोचनात्मक आकलन करस ।
- समभ्फ के बदलाव ओह लोग में भोजपुरी साहित्य के विधागत आ शैलीगत विशेषता से परिचय करवाई ।
- ई, जवन पाठ्यक्रम में बदलाव भइल बा, ओह से भाषा के सर्जनात्मक बारीकियन आ व्यवहारिक प्रयोग के विविधता के समभ्फ पैदा होई, जवना से भोजपुरी के महत्वपूर्ण भूमिका के पता चली ।
- संचार माध्यम के युग में आ मनोरंजन के दुनिया में भोजपुरी के पूछ बढ़ गइल बा, भोजपुरी के उपयोग बढ़ गइल बा । परिचय आ प्रयोग के दिसाईं एह से ओह लोग का बढ़ावा मिली ।
- एह पाठ्यक्रम के उद्देश्य, +2 स्तर के कल्पनाशील शिक्षार्थी लोग के कल्पना के शक्ति के बढ़ावे आ क्रियाशील बनावे के त बड़ले बाटे, एह दिसाईं ओह लोग के योग्य बनावे आ रचना के मूल्यांकन-क्षमता पैदा करे के भी बाटे ।

भोजपुरी भारतवर्ष के लमहर भू-भाग के भाषा ह । ई पूर्वी उत्तर

www.bhojpurisahityangan.com

प्रदेश भा पछिमी बिहार में मुख्य रूप से बोलल, पढ़ल आ लिखल जाला। भोजपुरी बोले वाला लोग मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ आ झारखंड के कुछ क्षेत्र में बाड़न। एह सब क्षेत्रन के अलावे भारतवर्ष के कई महत्त्वपूर्ण औद्योगिक नगरन में भोजपुरी भाषी काफी संख्या में बाड़न। भोजपुरी भाषा बोलेवाला लोगन के एह देश के भाषा-साहित्य संस्कृति के विकास में अहम योगदान बा। एह देश के अलावे भोजपुरी भाषी लोग सदियन से विदेश के कई देशन- नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, ब्रिटिश गुयाना, जमैका, हॉलैंड आदि में बसल बाड़ें। जे उहाँ के संस्कृति आ राजनीति के प्रभावित करत बाड़न।

भोजपुरी आधुनिक भारतीय आर्य भाषा परिवार में महत्त्वपूर्ण स्थान राखेले। अनेक स्थापित विद्वान लोग के अनुसार एह भाषा के जड़ वैदिक भाषा में मिलत बा। अइसे ग्रियर्सन आ आउर भाषाविद् लोग एह भाषा के मागधी अपभ्रंश से व्युत्पन्न मानेलन। कुछ विद्वान एकर विकास अर्द्ध-मागधी, त कुछ शैरसैनी के सिद्ध करेलन। अइसे भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से एकरा पर मागधी आ शैरसैनी दुनों के प्रभाव बाटे।

भोजपुरी भाषा में भाव विचार का अभिव्यक्ति अद्भुत क्षमता बा। सबसे बड़ ई बात बा कि एकरा पास लोक साहित्य के अकूत भंडार बा। एकरा लिखित साहित्य के परम्परा सिद्ध आ नाथ पंथ से शुरू होत बा आ आज एक हजार बरिस से साहित्यकार लोग लगातार भरत आ रहल बा। ई भाषा ओ साहित्य आमजन जीवन के सुख-दुःख, राग-द्वेष, रहन-सहन आदि के सक्षमता पूर्वक अभिव्यक्त करेला।

राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मान्यता प्राप्त लोग शिक्षाविद् लोग के स्पष्ट से विचार बा कि शिक्षा के माध्यम मातृभाषा बनावे के चाहीं, जवना से शिक्षार्थी सहजतापूर्वक शिक्षा ग्रहण कर सके। एह से भोजपुरी मातृभाषा के माध्यम बनवला से करोड़ों विद्यार्थियन के नैतिक आ बौद्धिक विकास में सहायता मिली।

शिक्षा देवे के तरिका (शिक्षण-युक्ति)

- शिक्षक आ शिक्षार्थी लोग के बीच सहज वातावरण हो सके, जवना से बिना कवनो बाधा के बातचीत के स्थिति पैदा कर सके।

www.bhojpurisahityangan.com

- छात्र लोग बिना डरले सवाल करे, एह खातिर बढ़ावा देवे के चाहीं आ सवातन के सहजता आ प्रेम से उत्तर देवे के चाहीं ।
- पाठ करावल आ रटवा के इयाद करवावल ।
- पाठ के बारे में समझ पैदा करवावल ।
- छात्र लोग के शंका के समाधान करत, अझुराहट के हटावल, जादे से जादे कवनो विषय पर बोले देवे के अवसर दिहल जरूरी होई ।
- छात्र के विचार के महत्व देत, ओकरा विचार के एगो सिलसिला से फेर से प्रस्तुत करे के चाहीं ।
- छात्र लोग के नाम से जाने आ बोलावे के चाहीं । छात्रन के टूटल-फूटल आध-छिध अभिव्यक्ति के उनका के बढ़ावा देत पूरा करे के चाहीं ।
- छात्र लोग से विषय पर बिना कवनो दवाब डलले उनका विचार के लिखवावे के चाहीं, आ ओकरा के जाँच-परख के सुधार आ सँवार देवे के चाहीं ।
- पाठ्यक्रम से अलगा आ ओकरा अलावे भोजपुरी के आउर-आउर किताब पढ़े खातिर बढ़ावा देवे के चाहीं, जवना से उनका पढ़ेवाला विषय के बारे में विशेष जानकारी बढ़े आ ज्ञान बढ़ सके ।
- विषय-गोष्ठी, अभ्यास वर्ग, छात्रन के बीच परिचर्चा, आयोजित करे-करवावे के चाहीं आ परियोजना कार्य पूरा करे के बढ़ावा देवे के चाहीं आ स्वाध्याय खातिर प्रेरित करे के चाहीं ।

■

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषा के वर्ग XI के पाठ्यक्रम

1.	वस्तुनिष्ठ / बहुविकल्पी प्रश्न	10x2=20 अंक
2.	लघु उत्तरीय प्रश्न	4x5=20 अंक
3.	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	10x4=40 अंक
4.	सप्रसंग व्याख्या	5x2=10 अंक
5.	परियोजना कार्य/भाषा आ साहित्य के कथा	10x1=10 अंक
		कुल 100=00 अंक

दूभि-धान (भाग-1)

गद्य

1. परमपद -दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
2. सिंहनाद -सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'
3. खेल -डॉ. विवेकी राय
4. देश के महान सपूत : बाबू जगजीवन राम -कविता वर्मा
5. भोजपुरी के धन : जगनगर-पनिगर शब्द -डॉ. अनिलकुमार आंजनेय'
6. कफन (प्रेमचन्द) -अनुवाद- गंगानन्दन झा 'कलाधर'
7. अकसरूगआ -डॉ. बसंत कुमार
8. वाय टू के -डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित'
9. पनही -डॉ. जितराम पाठक
10. ईया -डॉ. आशारानी लाल

पद्य

11. कबीर के वाणी -कबीरदास
12. बिनती -दरिया साहेब
13. बारहमासा -लछिमी सखी
14. बटोहिया -रघुवीर नारायण
15. शहीद के श्रद्धांजलि -प्रसिद्ध नारायण सिंह
16. आषाढ़ के बादल -अनिरूद्ध
17. गजल -डॉ. जौहर शफियाबादी

थाती

18. गबरघिचोर -भिखारी ठाकुर

www.bhojpurisahityangan.com

BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना-1